खुशी खुशी

कक्षा 5 भाग 1

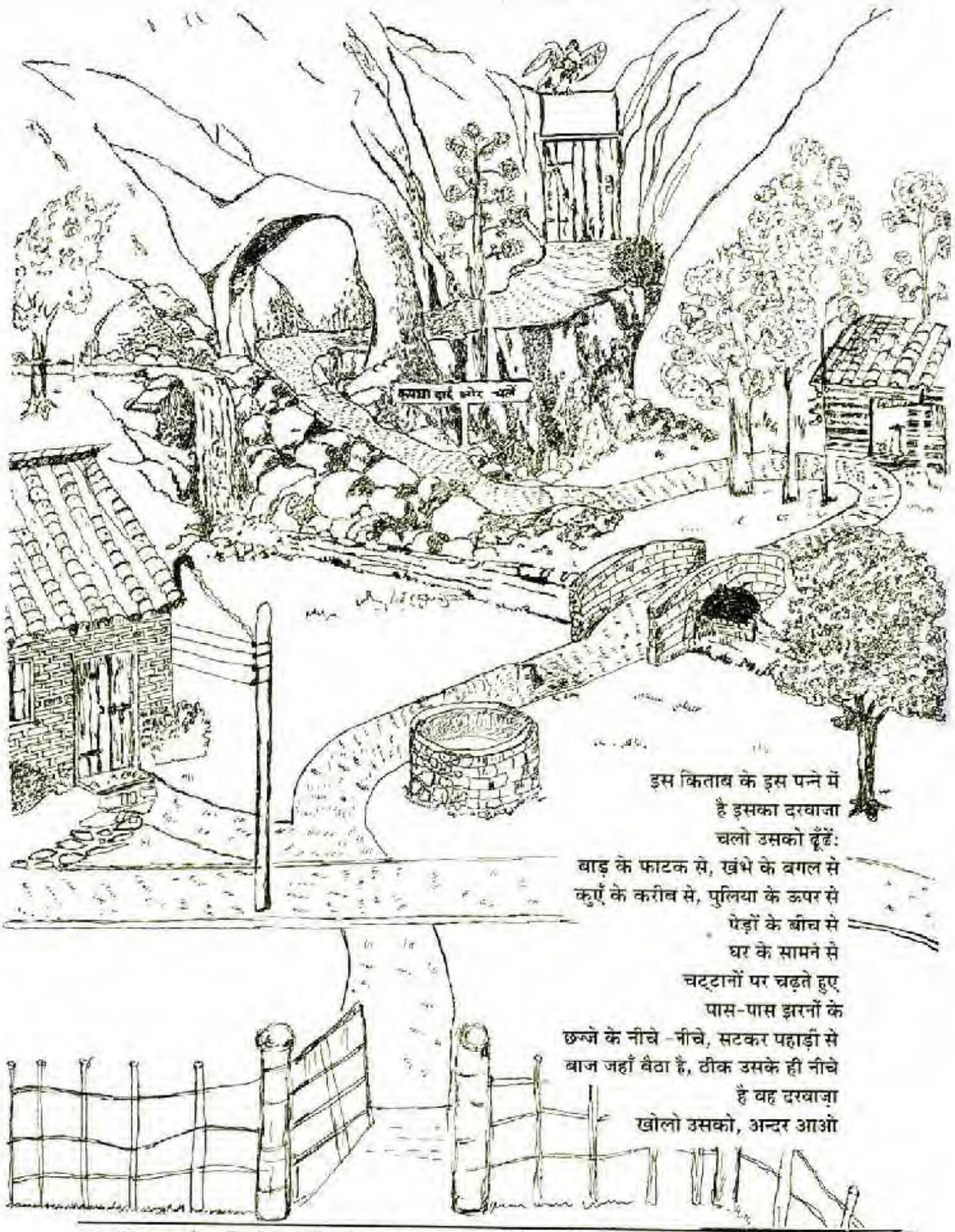

इस किताब के इस पन्ने में
है इसका दरवाजा
चलो उसको ढूँढें:
बाड़ के फाटक से, खंभे के बगल से
कुएँ के करीब से, पुलिया के ऊपर से
पेड़ों के बीच से
घर के सामने से
चट्टानों पर चढ़ते हुए
पास-पास झरनों के
छज्जे के नीचे -नीचे, सटकर पहाड़ी से
बाज जहाँ बैठा है, ठीक उसके ही नीचे
है वह दरवाज़ा
खोलो उसको, अन्दर आओ

यह पुस्तक एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत तैयार एवं एकलव्य, बोडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल द्वारा प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक की सामग्री तैयार करने के लिए कई स्रोतों की मदद ली गई है।

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल। पुनर्मुद्रण वर्ष 2007/1000 प्रतियाँ, तीसरा पुनर्मुद्रण दिसम्बर 2010/2000 प्रतियाँ

खुशी-खुशी

कक्षा - 5 भाग -1

भाषा

पाठ का नाम	पन्ना नंबर
अब्बू खाँ की बकरी	1
चिड़िया का गीत	7
कर्ज़ा	9
भौंचक	11
नजानू कवि बना	15
चूहों, म्याऊँ सो रही है	20
माँ ने की हड़ताल	22
भालू से न डरने वाला	24
चूहे की दिल्ली यात्रा	29
तिल का ताड़ राई का पहाड़	31
कौआ और मुर्गी	33
पहेलियाँ	35
चाचाजी ने पकड़ा चोर	36
कबीर के दोहे	39
स्नेगुरका बर्फ की कुमारी	40
उल्लू की बोली	44
बचपन	47
बिना नाम की नदी	51
निदा फाजली के दोहे	55
एक पत्र की आत्मकथा	56
बाबाजी का भोग	64
भिश्ती की बादशाही	67
बरगद जी	70
सिंह और कुत्ता	71
कर्फ्यू	74
पानी और धूप	77
आज की ताज़ा खबर	83
दीया	87
कठपुतली का राजा	88
कालाहारी	94
गाँधीजी	98

कक्षा 5 का प्रस्तावित पाठ्यक्रम

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में सभी शालाओं के लिए एक प्रस्तावित पाठ्यक्रम है। यह प्रस्ताव क्रियान्वयन के समय ही निश्चित होता है – हर शिक्षक द्वारा अपनी परिस्थितियों, अपने बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखकर।

इसी आशा से कक्षा पाँचवीं का यह पाठ्यक्रम आपके सामने है।

पिछले वर्षों में किए गए काम को आवश्यकतानुसार जारी रखने के साथ-साथ बच्चों के लिए नए मौके तलाशने के प्रयास इस पाठ्यक्रम में हैं। पर्याप्त मौके मिलने पर बच्चों में काफी तेज़ी से कौशलों का विकास होता है। इसलिए इस पाठ्यक्रम को कक्षा 4 के पाठ्यक्रम के साथ ही देखा जाए।

कक्षा 4 में दिए गए कौशलों का पुनरावलोकन करके एक बार देख लें कि आपकी कक्षा के बच्चों को किन बातों के अधिक मौके देने होंगे। कक्षा 4 की अधिकांश क्षमताओं के विकास पर अब भी ज़ोर होगा।

कक्षा 5 के अन्त तक बच्चों को निम्नलिखित कौशलों के विकास के पर्याप्त मौके मिल चुके होंगे।

पाठ्यक्रम के मुख्य कौशल इस प्रकार हैं–

1. समझना
2. अभिव्यक्ति
3. अवलोकन करना, रेकॉर्ड रखना, विश्लेषण करना व निष्कर्ष निकालना
4. समस्या सुलझाना व निष्कर्ष निकालना
5. सृजनात्मकता
6. जगह की समझ
7. गणितीय क्षमता
8. ज़िम्मेदारी, एकाग्रता, आत्मविश्वास

1. समझना

अलग-अलग तरह के लेखन व संकेतों को समझना। (कहानी, कविता, रपट, नाटक, विवरण, चुटकुले, दोहे, चित्र, रेखाचित्र, निर्देश आदि)

(क) बोली हुई और लिखी हुई भाषा को समझना

- कहानी, कविता, अनुच्छेद, विवरण, रपट को सही उतार-चढ़ाव, चिन्हों के उपयोग के साथ पढ़ना।
- मन में प्रवाह में पढ़कर समझना।
- दिया गया लेखन पढ़कर या सुनकर समझना व उनके आधार पर प्रश्नों के उत्तर बोलना व लिखना।
  - क्यों का उत्तर 'क्योंकि' व 'इसलिए' का उपयोग करते हुए देना।
  - कैसे का विवरणात्मक उत्तर देना।
  - अन्तर-समानता को 'जबकि' का उपयोग करके बताना।
- लिखित अंश पढ़कर मुख्य बातें रेखांकित करना व अपने शब्दों में बोलना व लिखना।

- सरल पैराग्राफ या विवरण का सार कम शब्दों में लिखना।
- किसी कहानी, कविता, रिपोर्ट को पढ़कर शीर्षक देना।
- पैराग्राफ, कहानी, कविता, विवरण, वस्तु, स्थान, घटना, परिस्थिति को पढ़कर उसके अनुसार चित्र बनाना। ऐसे चित्र जिनमें घटनाएँ/सम्बन्ध दिखे।
- लिखित निर्देशों को पढ़कर उनके अनुसार कोई कार्य करना या चीज़ बनाना।
- लिखित सामग्री पढ़कर वाक्यों में संबंध जोड़ना।

(ख) शब्द भण्डार व संरचना

- शब्दावली एवं शब्द भंडार में वृद्धि। शब्दों के आरंभ और अन्त का अर्थ से संबंध जैसे पूत - कपूत - सपूत.....। दो शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाना, समझना। जैसे ताँगेवाला, फेरीवाला, मनपसन्द आदि।
- वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व विशेषण उपयोग के हिसाब से छाँटना। उनका उपयोग दूसरे वाक्यों में करना।

(ग) चित्र, नक्शे, तालिका, चार्ट को समझना व उनका सम्बन्ध लिखित सामग्री से जोड़ना

- **लिखित सामग्री के संदर्भ में आए चित्रों, रेखाचित्रों, छायाचित्रों को समझना व उनका सम्बन्ध लिखित सामग्री से जोड़ना।**
  - चित्रों में बारीक विवरण की बातें पहचानना, औरों को बताना व लिखना। जैसे क्या-क्या हैं? पेड़ पर क्या-क्या हैं? हवा चल रही है या नहीं? किस घटना का चित्र है? किसने किया?
  - रेखाचित्रों को समझकर भागों के नाम लिखना, उन्हें लिखित सामग्री के साथ जोड़कर समझना।
  - सांकेतिक चित्र-निर्देशों को समझना व उनके अनुसार काम करना।
  - चित्रों को क्रम में जमाना।
  - चित्रों के आधार पर कहानी लिखना/बोलना।
  - प्रक्रिया के हिस्सों को क्रमबद्ध चित्रों के साथ, वाक्यों का सम्बन्ध जोड़ना। (कारखाने की प्रक्रिया आदि)
- **नक्शा देखकर जानकारी प्राप्त करना (नदी, शहर, गाँव, सड़क, प्रदेश, ज़िला आदि)**
  - पैमाने के आधार पर दो स्थानों के बीच की दूरी पता करना।
  - निर्देशानुसार नक्शे में स्थान ढूँढना।
  - नक्शे को देखकर रास्ता ढूँढना।
  - विवरण के आधार पर नक्शा बनाना।

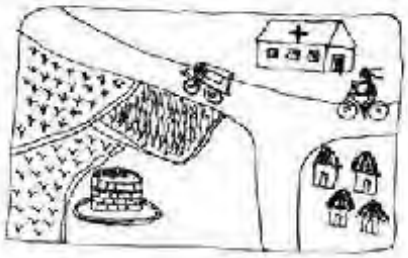

- **तालिका समझना**
  - 3 या 4 स्तम्भ की तालिका पढ़कर उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना। ऐसे प्रश्न जिनके लिए एक से अधिक स्तम्भों का उपयोग करना हो।
  - विवरण के आधार पर दी गई तालिका पूरी भरना।
  - विवरण या जानकारी के आधार पर तालिका बनाना व भरना। (तालिका के स्तम्भ स्वयं चुनना)
- **पुस्तकालय की पुस्तकें अपनी रुचि के अनुसार चुनकर पढ़ना व समझना। पढ़ी गई कहानी, कविता, नाटक आदि के बारे में साथियों को सुनाना।**
  - ऐसी कहानियाँ पढ़ना जो एक से अधिक अध्याय की हों।
  - उनके बारे में लिखना व चित्र बनाना।
  - शब्दकोश का उपयोग करना।
  - पुस्तकालय की पुस्तकों में से किसी प्रश्न के लिए उपयुक्त पुस्तक व उसमें से जानकारी ढूँढना। (विषय सूची का उपयोग)

2. अभिव्यक्ति

अलग-अलग तरह से, प्रवाह में, आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करना।

(क) बोलकर या सरल भाषा में लिखकर

- अपने अनुभवों के बारे में। अपनी भावनाओं, विचारों व मतों को मौखिक व लिखित रूप में बताना। उनके लिए कारण भी बताना।

- किसी विषय पर स्वतंत्र रूप से बातचीत में भाग लेना। अपनी बारी आने तक रुकना।
- छोटी कहानियों को नाटक के रूप में लिखना।
- कहानी, कविता, आगे बढ़ाना। किसी विषय पर कहानी, कविता, लिखना।
- अपने साथियों को मौखिक व लिखित निर्देश देना। मौखिक निर्देश ऐसे कि एक टोली काम कर सके।
- सवालों, पहेलियों और समस्याओं को हल करने के अपने तरीके को मौखिक रूप से व्यक्त करना।
- अपने अनुभवों के आधार पर या जानकारी इकट्ठी करके विवरण लिखना। पत्र व रपट लिखना। किसी खास उद्देश्य से पत्र लिखना।
- अब विवरण व कहानियों में तारतम्य की अपेक्षा होगी। पैराग्राफ बदलने का परिचय।
- शाला में साथियों, गुरुजी व अन्य वयस्कों से उपयुक्त संबोधन व तरीके से बात करना।

(ख) हावभाव/ अभिनय/ रोलप्ले से अभिव्यक्ति

- किसी कहानी या विवरण के आधार पर नाटक खेलना। समूह में अपना रोल कर पाना।
- कहानी या कविता को हावभाव के साथ व्यक्त करना।
- मूक अभिनय व एकल अभिनय करना जिसमें एक से अधिक पात्र हों।

(ग) कुछ बनाकर

- अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त करना। ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीजें हो रही हों।
- किसी विषय पर आसपास की चीजों से झाँकी बनाना।
- मिट्टी से और बारीक विवरण की चीजें बनाना।
- अनुमान लगाना – क्या होगा अगर.....
- अनुमान जाँचकर देखना। अवलोकन का अनुमान से तुलना करना।

3. अवलोकन, प्रयोग करना, रेकॉर्ड करना, विश्लेषण व निष्कर्ष निकालना

(क) दावे, प्रश्न सोचना - अवलोकन व प्रयोग के लिए

- अपने आसपास की परिस्थितियों को देखकर प्रश्न व दावे/परिकल्पना बनाना। जैसे – पत्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं? क्या सभी पत्तियों में एक जैसी नसें होती हैं?
- क्या हर चीज़ को एक-सी सतह से लुढ़काने से उतनी ही दूर जाएँगी?
- हमारे गाँव में लोग क्या-क्या धन्धा/व्यवसाय करते हैं?
- कुछ पढ़कर अवलोकन के लिए प्रश्न बनाना। जैसे किसी पुस्तक में दिए गए पक्षियों में से हमारे यहाँ कौन-कौन से पक्षी हैं? उनकी चोंच व पैर कैसे हैं? वे घोंसले किस प्रकार से बनाते हैं?

- क्या चन्द्रमा वास्तव में घटता बढ़ता है? क्या वह रोज़ एक ही समय उगता है? आदि। मध्यप्रदेश/भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में से कौन-सी भाषाएँ हमारे इलाके में बोली जाती हैं? या क्या हमारे यहाँ भी वह त्यौहार मनाए जाते हैं जो दूसरे देशों में मनाए जाते हैं? दावे जाँचने या प्रश्नों के उत्तर ढूँढने के लिए तरीके सोचना।
- अवलोकन के दौरान नए प्रश्न/दावे बनाकर साथियों को हल करने के लिए देना।

(ख) अवलोकन करना/ प्रयोग करना

- आसपास के विभिन्न पेड़, पौधों, प्राणियों का अलग-अलग समय अवलोकन और तुलना करना।
- उनमें बदलाव/ परिवर्तन देखना।
- अन्तर-समानता देखना।
- परिवर्तन चक्र का अहसास जैसे फूल-फल-बीज बनाना।
- बारीकी से अवलोकन करना।
- निर्देश समझकर प्रयोग करना और अवलोकन करना। जैसे – अलग-अलग वस्तुओं के दोलक बनाकर दोलन काल पता करना। दोलन को दूर से व पास से छोड़कर पता करना। धागे की लम्बाई बदलकर पता करना। या सिक्का उछालकर देखना चित्त या पट का पैटर्न। घर्षण के प्रयोग आदि।
- सर्वेक्षण करना और आसपास की जानकारी लेना।

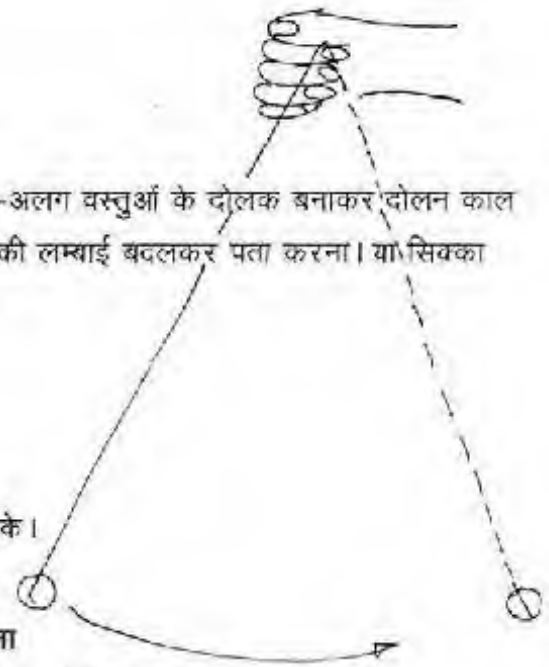

(ग) अवलोकन का रेकॉर्ड करना

- अवलोकनों के विवरण बताना व लिखना।
- अवलोकनों के चित्र बनाना। जैसे पत्तियों के नसों या पक्षियों के चोंच के।
- तालिका बनाकर अवलोकन दर्ज करना।

(घ) विश्लेषण करना, तुलना करना, सम्बन्ध ढूँढना, पैटर्न ढूँढना, पहचानना

- अवलोकनों की तुलना करके अंतर-समानता पहचानना व तुलना की भाषा में व्यक्त करना।
- दो अवलोकनों की तुलना करके परिवर्तन का अहसास बनाना।
- तुलना करके वस्तु या गुणों के समूह बनाना।
- अपने अनुभव की तुलना किसी और के अनुभव या लिखित अंश से करना।
- सम्बन्ध जोड़कर कुछ कारण या निष्कर्ष तक पहुँचना। जैसे चूँकि गोल चीज़ ज़्यादा दूर तक लुढ़कती है और चपटी कम दूर तक, इसलिए आकार और लुढ़कने का सम्बन्ध है। या वस्तु के पदार्थ का उसके गर्म लगने से सम्बन्ध है।
- अवलोकनों के आधार पर पैटर्न/ क्रम समझना। वस्तुओं या घटनाओं को क्रम में जमाना।

(ङ) निष्कर्ष निकालना

- अवलोकनों के विश्लेषण के आधार पर छोटे-छोटे निष्कर्ष या सामान्यीकरण तक पहुँचना। परिचित संदर्भ में क्यों,कैसे, कब, कहाँ के उत्तर में निष्कर्ष निकालना जैसे - चन्द्रमा अलग-अलग समय निकलता है, दोलन काल लम्बाई पर निर्भर है, वज़न पर नहीं, त्यौहार आमतौर से तब होते हैं, जब खेतों में ख़ास काम नहीं होता आदि।

4. समस्या सुलझाना/ पहेली/ पज़ल्स आदि हल करने के प्रयास

- दी गई उलझनों को दी गई जानकारी के आधार पर सुलझाना। कहानी/ चित्र आदि में। जैसे – फूल किसने तोड़े? चोरी किसने की? जानकारी छाँटकर।
- यदि किसी लेखन/ उलझन में अपर्याप्त जानकारी है, जिससे हल नहीं निकल सकता तो उस कमी को पहचानना और व्यक्त करना की क्या जानकारी मिलने पर उलझन सुलझ सकती है।

- यदि किसी समस्या के एक से अधिक हल हैं, तो बता पाना कि क्यों।
- समस्या / पहेली / पज़ल्स/ उलझन को हल करने का तरीका बता पाना।

(यह सब कक्षा-4 के बिन्दुओं के साथ-साथ)

- भूल-भुलैयाँ व जिगज़ॉ - बारीक व जटिल।
- विवरण को पढ़कर कार्य-कारण सम्बन्ध जोड़ना। खास तौर से भौगोलिक और ऐतिहासिक विवरण में। जैसे सड़क, बिजली कारखाने का प्रभाव, जलवायु का प्रभाव आदि।
- चित्र देखकर या विवरण पढ़कर अनुमान लगाना।
- अनुमान जाँचने के लिए उपयुक्त क्रियाकलाप करना और जानकारी ढूँढना या अवलोकन करना या तर्क लगाना।

5. सृजनात्मकता

- हर बच्चे में निहित सृजनशक्ति होती है। इसे पनपने के लिए खास तरह के मौके और खुलेपन की आवश्यकता होती है। सृजनात्मकता को विकसित होने के लिए बच्चों की कल्पनाशीलता और स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहन देना होगा। कई तरह की दिशाओं और उत्तरों को स्वीकार करते हुए उन पर बातचीत करनी होगी।
- अक्सर किसी समस्या के हल ढूँढने में ही खुली सोच विकसित होती है। सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है विविधता। पहले उत्तर या पहले तरीके को ही सही नहीं मानना बल्कि अधिक-से-अधिक तरीके खोजने की कोशिश करना। दूसरी महत्वपूर्ण चीज़ है – लचीलापन। आम तौर से नई चीज़ बनाने/ सोचने के लिए साधारण तरीकों से अलग हटकर सोचना होता है। लीक से हटकर। तीसरा है – मौलिकता या नयापन। वह सोचना या बनाना जो किसी और ने नहीं बनाया या सोचा।
- और चौथी है – विस्तार देना या अंजाम देना। किसी चीज़ को अधर में या बीच में नहीं छोड़ देना। इन चारों कौशलों के पर्याप्त मौके देने से एक सृजनशील बच्चे के विकास की संभावना बढ़ जाती है। अत: लिखने, चित्र बनाने, बातचीत करने, समस्या सुलझाने में, कविता, पहेली आदि बनाने में खुलापन और प्रोत्साहन देने की ज़रूरत होती है।

निर्देश कक्षा-4 के अलावा

कुछ और संभावित गतिविधियाँ

- कहानियाँ आगे बढ़ाने में एक ही कहानी की शुरुआत को कई तरह से बढ़ाना।
- कोई भी अमूर्त निशान को देखकर चित्र पूरा करना – जैसे कोई नई मशीन की डिज़ाइन बनाना –
  - पौधों में पानी डालने के लिए (जब आप घर में न हों)।
  - फल तोड़ने के लिए आदि।
- पहेलियाँ और चुटकुले बनाना।
- किसी चीज़ के नए गुण सोचना।
- एक मुद्दे पर कई विचार देना।
- लोगों के विचारों पर टिप्पणी करना, अपना मत देना।
- मुहावरे, कहावतें, दोहे समझना, उपयोग करना, बनाना।
- आकार व उपयोग में सम्बन्ध।

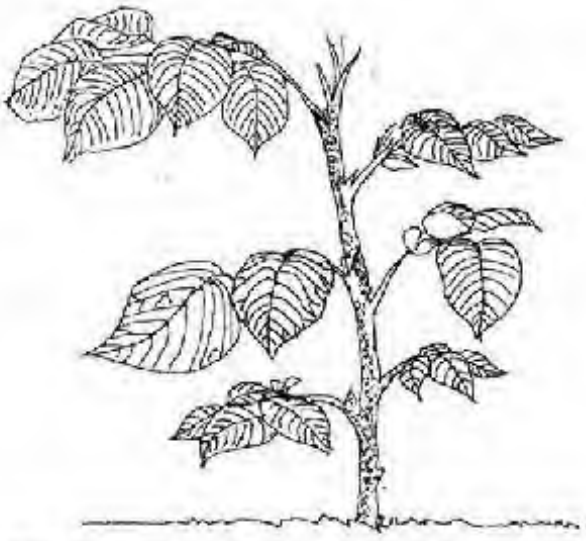

6. जगह की समझ

- कक्षा-4 की पुनरावृत्ति
- सुडौलपन एवं समरूपता का अहसास।
- त्रिआयामी वस्तुओं के अलग-अलग कोण से चित्र बनाना व पहचानना।

- किसी वस्तु की स्थिति में अंतर करने से किनमें अंतर आता है, किनमें नहीं। घुमाने, प्रतिबिम्ब आदि में।
- त्रिभुज और चतुर्भुज की खास बातों का अहसास (कोने, भुजा) उनके प्रकार व उनमें अन्तर व समानता। त्रिभुज, चतुर्भुज बनाना।
- रेखा से परिचय। तरह-तरह की रेखाएँ (सीधी, घुमावदार, समान्तर) नापना। दी गई लम्बाई की रेखा खींचना।
- कोण से परिचय, कोण नापना, कोण बनाना।
- वृत बनाना। त्रिज्या, व्यास व परिधि की पहचान व नापना। दी गई त्रिज्या से परकार की सहायता से वृत खींचना।
- दूरी लम्बाई का अनुमान लगाना। मीटर, सेंटीमीटर, मिलीमीटर में नापकर अनुमान से तुलना करना। इन इकाइयों का आपस में सम्बन्ध, अनुपात समझना।
- क्षेत्रफल को एक सेंटीमीटर इकाई के चौखाना कागज या गुटके से नापना। चौकोर का क्षेत्रफल = लम्बाई X चौड़ाई से तुलना करना।
- द्रव का आयतन लीटर व मिलीलीटर में अनुमान लगाना व नापकर जाँचना।

7. गणितीय क्षमता

- दो से 6 अंकों की संख्याएँ पढ़ना। उनमें बड़ी छोटी संख्या पहचानना व < > चिह्नों का उपयोग करना।
- संख्या में स्थानीय मान - इकाई, दहाई, सैकड़ा, हज़ार, दस हज़ार व लाख की समझ। खास तौर से जहाँ शून्य का स्थान बदले।
- दो से चार अंकों की संख्याओं का स्थानीय मान की समझ के साथ जोड़, घटा, गुणा और भाग। हासिल और शेष के साथ विभिन्न तरीकों से।
- संख्याओं में सरल सम्बन्ध और पैटर्न समझना व आगे बढ़ाना।
- संख्याओं के गुण, गुणज, समान गुणज व लघुत्तम समान गुणज, गुणनखण्ड, महत्तम समान गुणनखण्ड, संख्याओं से सम्बन्धित खेल, समस्या, पजल्स।
- इबारती सवाल हल करना, बनाना। उनके आधार पर समीकरण बनाना और हल करना।
- समीकरण समझना और हल करना।
- स्तंभालेख बनाना, पढना और समझना।
- वज़न नापना – ग्राम, किलोग्राम में। उनका अनुपात समझना।
- समय के अन्तराल नापना। इबारती सवाल बनाना।
- भिन्न – तुल्य, बड़ी-छोटी, क्रम में जमाना, मिश्रित भिन्न, विषम भिन्न।

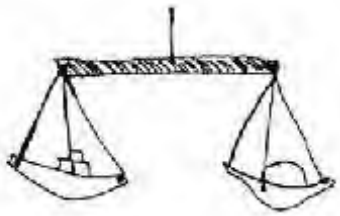

- भिन्न का जोड़-घटा।
- दशमलव से परिचय। दशमलव के जोड़-घटा। पूर्णांक से गुणा-भाग समझना और करना। भिन्न से सम्बन्ध।
- प्रतिशत। प्रतिशत का भिन्न व दशमलव से सम्बन्ध। प्रतिशत का उपयोग।
- लाभ, हानि, ब्याज, मूलधन के सवाल हल करना। हिसाब-किताब, रुपए-पैसों के सवाल।
- ऐकिक नियम के सवाल हल करना।

8. ज़िम्मेदारी, आत्मविश्वास, एकाग्रता आदि

- अपने समूह, कक्षा, टोली, टीम आदि का किसी गतिविधि में नेतृत्व करना।
- अपने से छोटे साथियों को अन्य कक्षाओं के साथ गतिविधि खेल आदि करवाना।
- सरल गतिविधि या दिए गए सरल कार्यों को खुद करना।
- स्वयं याद करके नियमित कार्य करना। जैसे – लम्बे प्रयोग, सर्वेक्षण या फिर कक्षा, मैदान, ब्लैकबोर्ड की सफाई, पेड़ लगाना, पानी भरना आदि।

अब्बू खाँ की बकरी

हिमालय पहाड़ पर अल्मोड़ा नाम की एक बस्ती है। उसमें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खाँ। उन्हें बकरियाँ पालने का बड़ा शौक था। बस एक दो बकरियाँ रखते, दिन भर उन्हें चराते फिरते और शाम को घर में लाकर बाँध देते। अब्बू गरीब थे और भाग्य भी उनका साथ नहीं देता था। उनकी बकरियाँ कभी-न-कभी रस्सी तुड़ाकर भाग जातीं थीं। पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था। वह उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है कि न अब्बू खाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच और न भेड़िये का डर उन्हें भागने से रोकता। हो सकता है, ये पहाड़ी जानवर अपनी आज़ादी से इतना अधिक प्यार करते हों कि उसे किसी कीमत पर बेचने के लिए तैयार न हों।

जब भी कोई बकरी भाग जाती, अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ जाते। हर बार वही सोचते कि अब से बकरी नही पालूँगा। मगर अकेलापन बुरी चीज है। थोड़े दिन तक तो वे बिना बकरियों के रह लेते, फिर कहीं से एक बकरी खरीद लाते।

इस बार वे जो बकरी खरीद कर लाए थे, वह बहुत सुंदर थी। उसके बाल सफेद थे। काले-काले सींग भी बड़े खूबसूरत थे। सीधी इतनी थी कि चाहे तो कोई बच्चा दुह ले। अब्बू खाँ इस बकरी को बहुत चाहते थे। इसका नाम उन्होंने 'चाँदनी' रखा था। दिन भर उससे बातें करते रहते।

अपनी इस नई बकरी चाँदनी के लिए उन्होंने एक नया इंतज़ाम किया। घर के बाहर उनका एक छोटा -सा खेत था। उसके चारों ओर उन्होंने काँटे जमाकर बाड़ा बंधवाई। इसके बीच में वे चाँदनी को बाँधते थे। रस्सी इतनी लंबी रखते थे कि वह खूब इधर-उधर घूम सके। इस तरह बहुत दिन बीत गए। अब्बू खाँ को विश्वास हो गया कि चाँदनी कहीं नहीं जा सकती।

मगर अब्बू खाँ धोखे में थे। आजादी की इच्छा इतनी आसानी से किसी के मन से नहीं जाती। चाँदनी पहाड़ की खुली हवा को भूल नहीं पाई थी। एक दिन चाँदनी ने पहाड़ की ओर देखा। उसने मन ही मन

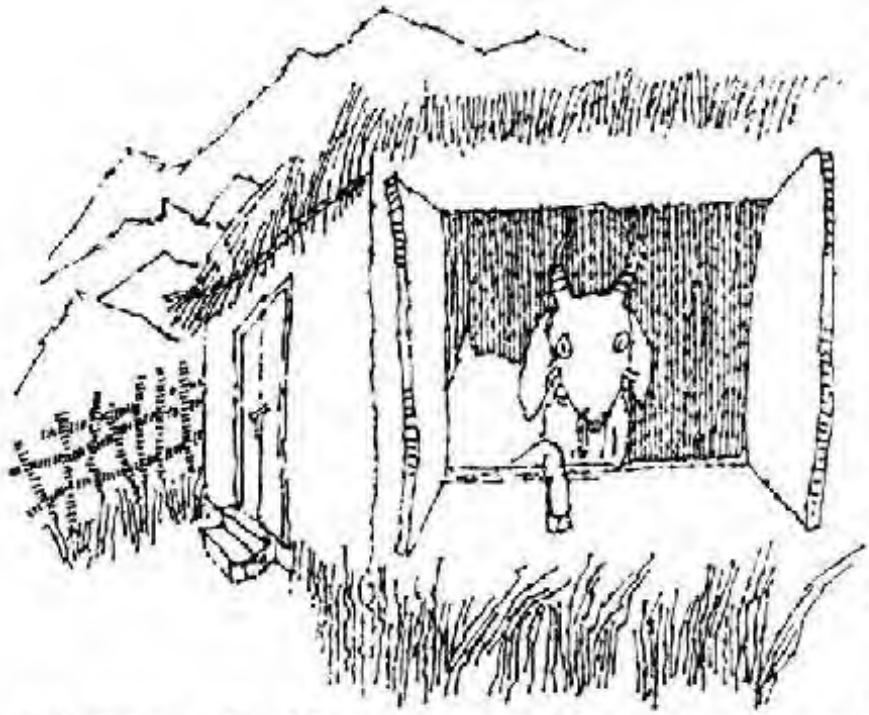

सोचा, वहाँ की हवा और यहाँ की हवा का क्या मुकाबला। फिर वहाँ उछलना, कूदना, ठोकरें खाना और यहाँ हर वक्त बंधे रहना। मन में इस विचार के आने के बाद चाँदनी अब पहले जैसी न रही। वह दिन-पर-दिन दुबली होने लगी। न उसे हरी घास अच्छी लगती और न पानी मजा देता। अजीब-सी दर्द भरी आवाज में वह 'में-में' चिल्लाती।

अब्बू खाँ समझ गए कि हो-न-हो कोई बात ज़रूर है लेकिन उनकी समझ में न आता था कि बात क्या है? एक दिन जब अब्बू खाँ ने दूध दुह लिया, तो चाँदनी उदास भाव से उनकी ओर देखने लगी। मानो कह रही हो, "बड़े मियाँ, अब तुम्हारे पास रहूँगी तो बीमार हो जाऊँगी। मुझे तो तुम पहाड़ में जाने दो।"

अब्बू खाँ मानो उसकी बात समझ गए। चिल्लाकर बोलो "या अल्लाह! यह भी जाने को कहती है।" वे सोचने लगे, "अगर यह पहाड़ पर चली गई, तो भेड़िया इसे भी खा जाएगा। पहले भी वह कई बकरियाँ खा चुका है।" उन्हें चाँदनी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उन्होंने तय किया कि चाहे जो हो जाए, वे चाँदनी को पहाड़ पर नहीं जाने देंगे। उसे भेड़िया से ज़रूर बचाएँगे।

अब्बू खाँ ने चाँदनी को एक कोठरी में बंद कर दिया, ऊपर से साँकल चढ़ा दी। मगर गुस्से और झुँझलाहट में वे कोठरी की खिड़की बंद करना भूल गए। इधर उन्होंने कुंडी चढ़ाई और उधर चाँदनी उचककर खिड़की से बाहर।

चाँदनी पहाड़ पर पहुँची, तो उसकी खुशी का क्या पूछना! पहाड़ पर पेड़ उसने पहले भी देखे थे, लेकिन आज उनका रंग और ही था। चांदनी कभी इधर उछलती, कभी उधर। यहाँ कूदी, वहाँ फाँदी, कभी चट्टान पर है, तो कभी खड्डे में। इधर जरा फिसली, फिर सँभली। एक चाँदनी आने से पहाड़ में रौनक आ गई थी।

दोपहर तक वह इतनी उछली-कूदी कि शायद सारी उम्र में इतनी न उछली कूदी होगी। दोपहर ढले उसे पहाडी बकरियों का एक झुंड दिखाई दिया। थोड़ी देर तक वह उनके साथ रही। दोपहर बाद जब बकरियों का झुंड जाने लगा तब वह उनके साथ नहीं गई। उसे आज़ादी इतनी प्यारी थी कि वह किसी के बंधन में पड़ना ही नहीं चाहती थी।

शाम का वक्त हुआ। ठंडी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल हो गया। चाँदनी पहाड़ से अब्बू खाँ के घर की ओर देख रही थी। धीरे-धीरे अब्बू खाँ का घर और काँटेवाला घेरा रात के अँधेरे में छिप रहा था।

रात का अँधेरा गहरा था। पहाड़ में एक तरफ आवाज़ आई 'खूँ-खूँ'। यह आवाज सुनकर चाँदनी को भेड़िए का ख्याल आया। दिन भर में एक बार भी उसका ध्यान उधर न गया था। पहाड़ के नीचे सीटी और बिगुल की आवाज़ आई। वह बेचारे अब्बू खाँ थे। वे कोशिश कर रहे थे कि सीटी और बिगुल की आवाज़ सुनकर चाँदनी शायद लौट आए। उधर से दुश्मन भेड़िए की आवाज़ आ रही थी।

चाँदनी के मन में आया कि लौट चलें। लेकिन उसे खूँटा याद आया। रस्सी याद आई। काँटों का घेरा याद आया। उसने सोचा कि इससे तो मौत अच्छी। आखिर सीटी और बिगुल की आवाज़ बंद हो गई। पीछे से पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। चाँदनी ने मुड़कर देखा, तो दो कान दिखाई दिए, सीधे और खड़े हुए और दो आँखें, जो अंधेरे में चमक रही थी। भेड़िया पहुँच गया था।

भेड़िया जमीन पर बैठा था। उसकी नज़र बेचारी बकरी पर जमी हुई थी। उसे जल्दी न थी। वह जानता था कि बकरी कहीं नहीं जा सकती। वह अपनी लाल-लाल जीभ अपने नीले-नीले होठों पर फेर रहा था। पहले तो चाँदनी ने सोचा कि क्या लड़ूँ। भेड़िया बहुत ताकतवर है। उसके पास नुकीले बड़े-बड़े दाँत हैं। जीत तो उसकी ही होगी। लेकिन फिर उसने सोचा कि यह तो कायरता होगी। उसने सिर झुकाया। सींग आगे को किए और पैंतरा बदला। वह भेड़िए से लड़ गई। लड़ती रही। कोई न समझे कि चाँदनी भेड़िए की ताकत को नहीं जानती थी। वह खूब समझती थी कि बकरियाँ भेड़ियों को नहीं मार सकती। लेकिन मुकाबला ज़रूरी है। बिना लड़े हार मानना कायरता है।

चाँदनी ने भेड़िए पर एक के बाद एक हमला किया। भेड़िया भी चकरा गया। लेकिन भेड़िया था। सारी रात गुज़र गई। धीरे-धीरे चाँदनी की ताकत ने जवाब दे दिया, फिर भी उसने दुगना जोर लगाकर हमला किया। लेकिन भेड़िये के सामने उसका कोई बस नहीं चला। वह बेदम

होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। पास ही पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ इस लड़ाई को देख रहीं थीं। उनमें बहस हो रही थी कि कौन जीता। बहुत-सी चिड़ियों ने कहा, 'भेड़िया जीता।' पर एक बूढ़ी-सी चिड़िया बोली, 'चाँदनी जीती'।

डॉ. ज़ाकिर हुसैन

1. अब्बू खाँ कहाँ रहते थे?
2. अब्बू खाँ बकरियाँ क्यों पाला करते थे?
3. चाँदनी को पहाड़ की हवा और गाँव की हवा में क्या अंतर लगा होगा?
4. चाँदनी को कोठरी में बंद करने पर वो कैसे निकल गई?
5. यदि तुम्हें अच्छा खाने पीने को मिले और बाँध कर रखा जाए तो तुम क्या करोगे? तुम्हें कैसा लगेगा।
6. चाँदनी भेड़िये से क्या सोचकर लड़ी थी?
7. किसने किससे कहा
   - अ) "चाँदनी जीती।"
   - ब) "या अल्लाह! यह भी जाने को कहती है।"
   - स) "बड़े मियाँ अब मैं तुम्हारे पास रहूँगी तो बीमार हो जाऊँगी।"
8. आज़ादी से तुम क्या समझते हो? क्या तुमको लगता है कि तुम आज़ाद हो? यदि हाँ तो क्यों? यदि नहीं तो क्यों?
9. हमारा देश कब आज़ाद हुआ और आज़ाद होने से हमें क्या फायदा हुआ?
10. नीचे दिये गए शब्दों को खाली स्थान में सही जगह पर लिखो :–

    बस न चलना, बेदम, अकेलापन, रौनक आना, ताकत ने जवाब दे दिया ।

    - अ) ..... से घबराकर लालू ने भैंस पाल ली ।
    - ब) आज़ादी मिल जाने से लालू के चेहरे पर ..... आ गई ।
    - स) लालू दौड़ते-दौड़ते ..... होकर गिर पड़ा ।
    - द) लड़ते-लड़ते लालू की ..... ।
    - इ) ..... पर लालू भाग खड़ा हुआ ।

10. ऊपर लिखे शब्दों से दो–दो वाक्य और बनाओ।
11. यदि तुमने कोई जानवर पाला है तो उसके बारे में लिखो: तुमने क्या पाला है? वो कैसा है? उसकी क्या बातें है जो तुम्हें अच्छी लगती हैं और क्या बातें हैं जो तुम्हें अच्छी नहीं लगती?
12. कहानी में आए रेखांकित वाक्यों को अपनी कापी में लिखो और पढ़ो। तथा अपने दोस्तों से चर्चा करो।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

विपरीतार्थी वाक्य लिखो

सन् 1947 में भारत आजाद हुआ।	सन् 1947 में भारत अंग्रेजों का गुलाम हुआ।
चाँदनी उदास रहने लगी।	चाँदनी खुश रहने लगी।
चाँदनी दिन पर दिन दुबली होने लगी।	------------------
अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ जाते।	------------------
भेड़िया बहुत ताकतवर है।	------------------

चाँदनी के रहने का अब्बू खाँ ने क्या इन्तजाम किया था? अपने शब्दों में लिखो।

हिमालय पहाड़ पर अल्मोड़ा नाम की एक बस्ती है। उसमें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खाँ। उन्हें बकरियाँ पालने का बड़ा शौक था। बस एक–दो बकरियाँ रखते, दिन भर उन्हें चराते फिरते और शाम को घर में लाकर बाँध देते। अब्बू गरीब थे और भाग्य भी उनका साथ नहीं देता था। उनकी बकरियाँ रस्सी तुड़ाकर भाग जाया करती थीं। पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था। वह उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है कि न अब्बू खाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच और न भेड़िये का डर उन्हें भागने से रोकता। उन्हीं बकरियों में एक चाँदनी नाम की बकरी थी जिससे अब्बू को इतना अधिक प्यार था कि वे उसे किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार न थे।

कहानी के अंश में आए सर्वनामों को छाँटो। यह भी लिखो कि उनका किसके लिए उपयोग हुआ है।

उसमें	अल्मोड़ा के लिए	------	------
------	------	------	------
------	------	------	------
------	------	------	------

इन वाक्यों में आये हुए संज्ञा शब्दों की जगह सर्वनाम का प्रयोग करते हुए वाक्य दोबारा लिखो।

1. भेड़िया उन्हें खा जाता था।	------------------
2. अब्बू खाँ गरीब थे।	------------------
3. अब्बू खाँ को बकरियाँ पालने का शौक था।	------------------
4. चाँदनी को अपनी आजादी प्यारी थी।	------------------

कहानी में ढूँढ कर बताओ इसके लिए क्या बताया गया है।

उदाहरण–

उसमें बड़े मियाँ रहते थे। ------–अल्मोड़ा नाम की बस्ती में।

वह बकरियाँ खा जाता था। ------------------

अब्बू खाँ ने चाँदनी को उसमें बन्द कर रखा था। ------------------

अब्बू खाँ इन चीज़ों की आवाज़ से चाँदनी को बुलाते थे। ------------------

भेड़िया इसे अपने नीले–नीले होठों पर फेर रहा था। ------------------

चाँदनी को पीछे से पत्तों की यह आवाज़ सुनाई दी। ------------------

अब्बू खाँ इसके कारण फिर कहीं से एक बकरी खरीद लाए। ------------------

कुछ शब्द किन्हीं खास आवाज़ों के लिए ही उपयोग किए जाते हैं,

जैसे – खड़खड़ाहट – पत्तियों की खड़खड़ाहट सुनाई दी।

गड़गड़ाहट ------------------

----- ------------------

----- ------------------

----- ------------------

----- ------------------

कहानी में एक वाक्य है – मगर अकेलापन बहुत बुरी चीज़ है। ***अकेलापन*** *का क्या मतलब है आपस में पता करो*

'पन' से अन्त होने वाले कई शब्द सुने होंगे। उन्हें यहाँ लिखो और हर एक से एक वाक्य भी बनाओ।

----- ------------------

----- ------------------

----- ------------------

----- ------------------

----- ------------------

भेड़िये और चाँदनी की लड़ाई का यहाँ चित्र बनाओ।

चिड़िया का गीत

सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनके से तैयार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।

फिर मैं निकल गई शाखों पर,
हरी-भरी थी जो सुकुमार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
आखिर जब मैं आसमान में,
उड़ी अपने पंख पसार,
तभी समझ में मेरी आया,
बहुत बड़ा है यह संसार।

– निरंकार देव 'सेवक'

- इस कविता में जो कहा गया है उसका विवरण एक पैराग्राफ में लिखो।
- चिड़िया को कैसे और कब पता चला कि संसार बहुत बड़ा है?
- बताओ इनमें कौन कैसी दुनिया देखेगा, और क्यों? चर्चा करो और हर एक के बारे में कम से कम 2–3 वाक्य लिखो।
- **चूहा, चिड़िया, बंदर,बत्तख, कुत्ता, कौआ, चील, चमगादड़।**
- चिड़िया अपना घोंसला किन–किन चीज़ों को जोड़कर बनाती है? चिड़िया को घोंसला बनाते हुए देखो और उसके घोंसला बनाने का विवरण अपनी कॉपी में लिखो।
- इस कविता के लिए कोई और शीर्षक सोचो।

1. नीचे लिखे शब्दों को शामिल करके एक कहानी/विवरण लिखो।

आकाश, संसार, घोंसला, शाखा, आसमान, पंख,

गाय का गीत

चार पाँव की चावक चप्पू
गाय नाम से जाने इसको।
काली, लाल, सफेद रंगों में
बछड़ा लिये खड़ी जंगल में।
खाती घास, खली और सानी
अनाज पत्तों से न गिलानी।
दूध उसका मीठा–मीठा
पीते अन्नु, बन्नु, गीता।
दही, मही, घी की सुविधा।
बछड़ा इसका भोला–भाला
खेतों का भारी रखवाला।
गोबर से बनते उपराले
जो ईंधन का काम भी करते।
खाद से सारे खेत सँवरते
मरकर भी वह हमको देती
बटन, बक्से, कंघी, चोटी।
भारत की पहचान पुरानी
गाय-बछड़े की अमर कहानी।

2. यदि आप चिड़िया होते तो आपको कैसा लगता ? आप क्या–क्या करते ? एक पैराग्राफ लिखो।

---

3. आपकी समझ में संसार क्या होता है ? तीन–चार वाक्यों में लिखो।

---

4. नीचे लिखे शब्दों के पहले **सु** लगाकर नए शब्द लिखो।

कुमार _____ शील _____ रक्षा _____ _____ _____

रंग _____ पारी _____ मति _____ _____ _____

कर्ज़ा

दोपहर का समय था। आकाश में काले घने बादल छाए हुए थे। रोशनी काफी कम हो चुकी थी, पर रह–रह कर बिजली चमकती और उसकी घड़घड़ाहट आती थी। कहीं दूर से सूखी मिट्टी पर पानी गिरने की खुशबू आ रही थी। कुछ ही देर में गाँव में भी पानी बरसने वाला था।

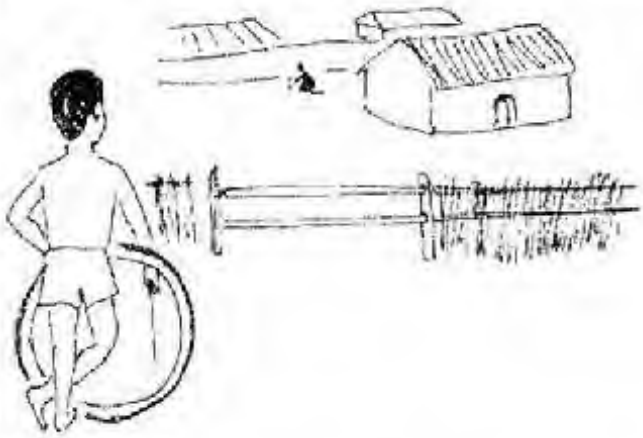

लेकिन इस वक्त गाँव काफी सूना–सूना सा था। बोनी के काम ने किसी के पास फुर्सत नहीं छोड़ी थी– आदमी, औरत, बैल, यहाँ तक कि कुत्ते भी सभी खेतों में नज़र आते। लखन के घर में भी कोई बड़ा नहीं था। उसकी छोटी बहन बिछौने पर सो रही थी। घर में कोई और काम भी नहीं था। इसलिए वह मज़े से अपना टायर ठेलता घूम रहा था।

भागते–भागते जब लखन गुरदयाल के घर के सामने से निकला तो उसे कुछ दिखाई दिया। वह रुका और टायर–डंडा हाथ में पकड़े खड़ा रहा। उसने देखा कि गुरदयाल के दादा अपने हाथ में कुछ पकड़ कर ला रहे थे। उनके छोटे–छोटे सफेद बाल, सफेद रंग की ही आधी–सी दाढ़ी और थोड़ी झुकी–सी पीठ देख कर ही समझ में आ जाता कि उनकी उम्र कितनी थी। आजकल वे खेत तो नहीं जाते थे पर फिर भी घर के कामों को करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती थी।

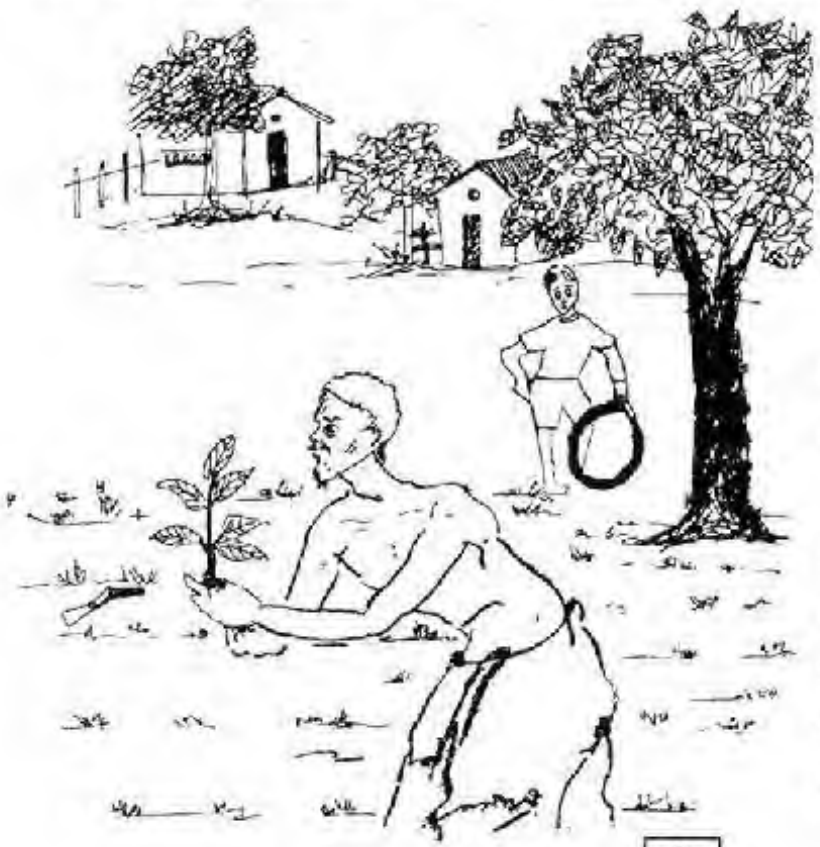

लखन को दूर से समझ में नहीं आया कि दादा क्या कर रहे थे। उसने फाटक से बाँस हटाया और अंदर गया। दादा एक रोपा ला रहे थे, शायद बाड़े में लगाने के लिए। दादा के पास पहुँचकर लखन खड़ा हो गया।

दादा मुस्कुराए और काम करते रहे। वे खुरपी से ज़मीन खोद रहे थे। लखन भी एक नुकीली लकड़ी लेकर उनके साथ जुट गया। दादा एक आम का रोपा बो रहे थे। लेकिन दादा ऐसा क्यों कर रहे थे, ये उसे समझ में नहीं आ रहा था।

"दादा, आप ये पेड़ क्यों लगा रहे हैं?" उसने पूछा।

दादा ने रोपे के ऊपर मिट्टी ढकेली और उसे थपथपाते हुए कहा, "कुछ सालों बाद इनमें फल लगेंगे, इसलिए।"

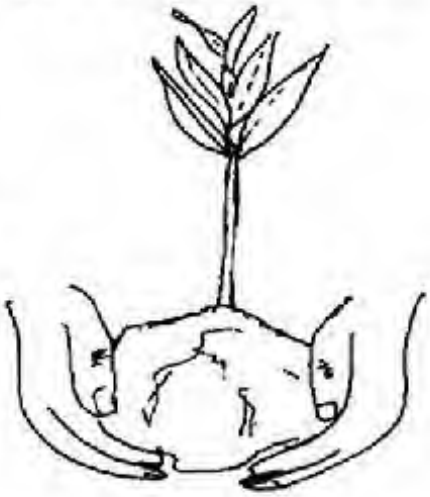

"इस वाले आम में कितने सालों में फल लगेंगे?" लखन ने पूछा।

"अच्छी फसल में यही कोई छह–सात साल तो लगेंगे।"

"पर दादा फल लगने में तो बहुत समय लग जाएगा। आपको तो फल खाने को ही नहीं मिलेंगे।" लखन ने बड़ी मासूमियत से कहा।

दादा गर्दन हिलाकर मुस्कुराए। फिर उन्होंने कहा, "हां, जब तक ये फल दे तब तक शायद मैं जिंदा न रहूं। पर... वो देखो।" दादा ने बाड़े के एक छोर पर लगे बहुत पुराने आम के पेड़ की ओर इशारा किया।

"वो पेड़ मेरे पिताजी ने लगाया था। उसके फल मेरे पिताजी को नहीं, बल्कि मुझे खाने को मिले। हर मौसम के फलों को खाते समय मैं इसके बारे में सोचता हूँ, ज़िंदगी भर जितने फल खाए हैं वो दूसरों के लगाए हुए पेड़ों के थे। अब सोचा..." दादा ने बस इतना कहा और चुप हो गए।

कुछ देर तक आसमान में बादलों को देखकर वे बोले, "लगता है पानी आने से पहले एक और रोपा लगाने का समय है।" यह कह कर वे रोपा लाने के लिए बढ़े। पर इससे पहले कि वे वहाँ तक पहुँचते, लखन दौड़कर रोपा उठा लाया।

अभ्यास

1. लखन आराम से क्यों और क्या करता हुआ घूम रहा था?
2. गुरदयाल के दादा कैसे दिखते थे?
3. लखन ने दादाजी से ऐसा क्यों कहा – "आपको तो फल खाने को ही नहीं मिलेंगे।"?
4. दादाजी की इस बात को समझाओ, "ज़िंदगी भर जितने फल खाए हैं वो दूसरों के लगाए हुए पेड़ों के थे।"
5. इस कहानी में किस कर्ज़े की बात हो रही है?
6. हमारे आसपास लगे फलों के पेड़, पानी देने वाली नदियाँ व कुएँ, हवा, फूल व उनकी महक, मिट्टी व फ़सलें हमसे कर्ज़े का भुगतान किस प्रकार माँगती है?
7. तुम्हें दादा के पेड़ लगाने के बारे में क्या कहना है – क्या उन्हें पेड़ लगाना चाहिए था या नहीं? अपने उत्तर का कारण भी लिखना।
8. रोपा किसे कहते हैं? अपने आसपास देखो कौन–कौन से पेड़, पौधे या फसल रोपे से लगाई जाती हैं? रोपा किस मौसम में लगाया जाता है?

भौंचक

कमरे में थी मेज़, मेज़ पर
बाबा जमें हुए थे;
मोटी रक्खी थी किताब वे
जिसमें रमे हुए थे।

दबे– पाँव आ घुसा न जाने
बबलू कब का अन्दर;
झूल रहा था खिड़की से यूँ
जैसे कोई बन्दर ।

दिखा सड़क पर जाता उसको
कुत्ते का एक पिल्ला;
मगर बुलाने लगा उसी को
बबलू चिल्ला–चिल्ला ।

"काम नहीं करने देते तुम
बबलू बिलकुल हमको
इतनी जोर से क्यों चिल्लाते
मारेंगे हम तुमको।"

बबलू बोला– "तो क्या बाबा
धीरे से चिल्लाएँ?"
भौंचक्के रहे बाबा ताकते
क्या जवाब लौटाएँ?

रमेशचन्द्र शाह

अभ्यास

1. टोली बनाकर अभिनय करो।

क. दबे पाँव चलने का
ख. किताब में रमें रहने का
ग. बन्दर की तरह झूलने का
घ. जोर से चिल्लाने का

2. क्या तुम धीरे से चिल्ला सकते हो? कोशिश करो।

3. अभी तुमने दबे पाँव चलने का अभिनय किया था। अब यह अभिनय भी करो–

क. ठिठक–ठिठक कर चलना　　ख. सरपट भागना

ग. सिर पर पैर रखकर भागना　　घ. नौ– दो– ग्यारह होना

4. बताओ –

क. बाबा मेज पर क्यों जमे हुए थे?

ख बबलू कमरे में आने से पहले कहाँ था?

ग. यदि बबलू चिल्लाने की जगह पिल्ले को धीरे से बुलाता तो क्या होता?

घ. जब बबलू बोला – "तो क्या बाबा धीरे से चिल्लाए? " यदि बाबा की जगह तुम होते तो क्या जवाब देते?

5. इस कविता को पढ़कर कोई चित्र बनाओ। उसमें बबलू को बन्दरकी तरह झूलते हुए जरूर दिखना।

6. एक कहानी लिखो जिसमें ये शब्द कहीं न कहीं जरूर आए।

पिल्ला, दबे पाँव, खिड़की, बन्दर, भौंचक्के, जवाब

7. इन शब्दों से मिलते–जुलते शब्द सोचो और लिखो

हमको	बन्दर	पिल्ला	मेज	बुलाने
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___

8. नीचे एक कविता की कुछ लाइनें लिखीं हैं। बीच–बीच में लाइनें गायब हैं। तुक मिलाकर गायब लाइनें ढूंढो–

हमने पाली बिल्ली

_____

_____

दिल्ली में थी किल्ली

_____

_____

सबने उड़ाई खिल्ली

_____

_____

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

बबलू की जगह अगर बबली होती तो कविता पढ़कर देखो कि कहाँ–कहाँ बदलाव करना पड़ेंगे। जो वाक्य बदले उन्हें यहाँ लिखो–

	कविता में क्या था	**बदलकर क्या हुआ**
जैसे.	दबे–पाँव घुसा न जाने	दबे–पाँव घुसी न जाने
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------
	------------	------------

इस कविता में दो ऐसे शब्द हैं जिनमें एक अक्षर संयुक्त रूप में लगता है।

भौंचक्के में पहले आधा क (क्) फिर पूरा 'क' **चिल्ला** में आधा ल (ल्) फिर पूरा 'ल'

तुम सबके साथ मिलकर दोनों तरह के और शब्द सोचो और यहाँ लिखो। उन से वाक्य भी बनाओ।

----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------

इस कविता में आए क्रिया शब्द छाँट कर यहाँ लिखो ।

----	----	----	----
----	----	----	----
----	----	----	----
----	----	----	----

– कुछ **सर्वनाम** तो तुमने छाँटे। ये शब्द भी सर्वनाम हैं:

मैं, मुझे, मेरे	यह, वह, उस, उन	आप, स्वयं, खुद (जैसे, मैं अपने आप ही खाना बना लेता हूँ।)
हम, हमारे	कोई, किसी	
तू, तुम, तेरे, तुम्हारे	कौन, क्या, कहाँ	
आप, आपके	जो	

क्या तुम अब यह बता सकते हो कि सर्वनाम शब्दों का इस्तेमाल कहाँ होता है?
– –

इस कहानी में से सर्वनाम छाँटो और यह पता करो कि कौन से सर्वनाम सबसे ज़्यादा उपयोग में आए हैं।

सर्वनाम	कितनी बार आया	सर्वनाम	कितनी बार आया
– – – – – –	– – –	– – – – – –	– – –
– – – – – –	– – –	– – – – – –	– – –
– – – – – –	– – –	– – – – – –	– – –
– – – – – –	– – –	– – – – – –	– – –

"अब्बू खाँ की बकरी" - कुछ अभ्यास

पन्ना नं. 1

*कहानी के इन वाक्यों में से अब **क्रियाएँ** छाँटते हैं।*

कहानी में से	क्रिया	क्रिया से एक नया वाक्य
भेड़िया ज़मीन पर बैठा था।	बैठा	– – – – – – – – – – – – – – – –
ठंडी हवा चलने लगी।	चलने	– – – – – – – – – – – – – – – –
वह भेड़िये से लड़ रही थी।	– – – –	– – – – – – – – – – – – – – – –
पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था।	– – – –	– – – – – – – – – – – – – – – –
दो आँखें अँधेरे में चमक रहीं थीं।	– – – –	– – – – – – – – – – – – – – – –
वह उन्हें खा जाता था।	– – – –	– – – – – – – – – – – – – – – –

कहानी में देखो – क्या हर वाक्य में क्रिया शब्द आता है? इस कहानी में आयीं अलग–अलग क्रियाएँ यहाँ लिखो।

जिन वाक्यों में क्रिया न आती हो उन्हें यहाँ लिखो।

– – – – – – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – – – – – –

– – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – –
– – – – – – – – – – – –

नजानू कवि बना

(बच्चों के खेलने का मैदान। एक कोने में नजानू उदास बैठा है। उसके मित्र अपने खिलौने लेकर वहीं आते हैं। सब बच्चे मिलकर गीत गाते हैं।)

सारे बच्चे: देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो-देखो .....
कुछ नया दिखाने की मन में अगन
पर घड़ी दो घड़ी में ही टूटे लगन
बड़ा उल्टा हुआ यह सवाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो

मोटू : अरे नजानू। वहाँ क्यों बैठे हो?

छोटू : आओ हम नदी पहाड़ खेलेंगे।

नजानू : नहीं तुम लोग खेलो।

(सारे बच्चे खेलने लगते हैं। नजानू उन्हें मुँह चिढ़ाता है। उसी समय गुलदस्ता वहाँ आता है।)

गुलदस्ता : नजानू, ओ नजानू! वहाँ चुपचाप क्यों बैठे हो? खेलोगे नहीं?

नजानू : नहीं, मेरा मन खेल में नहीं लगता। मैं बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : अरे हाँ! तुम तो चित्रकारी सीख रहे थे न?

नजानू : हाँ। लेकिन वो काम मुझे पसन्द नहीं आया।

गुलदस्ता : क्यों, क्यों?

नजानू : एक दिन मैंने डॉक्टर गोलीवाला की दीवार पर भैंस का चित्र बनाया था। उन्होंने मेरी माँ से शिकायत कर दी।

गुलदस्ता : अच्छा! तो यह बात है।

नजानू : गुलदस्ता जी! आप कविताएँ कैसे लिख लेते हैं?

गुलदस्ता : बहुत आसानी से। लेकिन उसके लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी।

नजानू : आप मुझे कविता लिखना सिखा देंगे? मैं भी कवि बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : हूँ... सिखा तो सकता हूँ...मगर तुम्हारी प्रतिभा की परख करनी पड़ेगी। तुम जानते हो, तुक क्या होती है?

नजानू : तुक? नहीं, मैं तो नहीं जानता।

गुलदस्ता : तुक उसको कहते हैं जब दो शब्दों का अन्त एक ही तरह से होता है। जैसे– नानी–रानी, घोड़ा–थोड़ा, समझे।

नजानू : हाँ, समझ गया।

गुलदस्ता : अच्छा छड़ी की तुक बताओ।

नजानू : झाड़ी!

गुलदस्ता : यह कैसी तुक है– छड़ी– झाड़ी? इन शब्दों से तुक नहीं बनती।

नजानू : वाह क्यों नहीं बनती? इनका अन्त तो एक ही तरह से होता है।

गुलदस्ता : मगर कविता रचने के लिए इतना ही काफ़ी नहीं है। यह ज़रूरी है कि शब्द एक ही तरह के हों औरकविता का जोड़ बैठ सके। लो, सुनो, छड़ी–घड़ी,भट्टी–खट्टी, किताब–हिसाब।

नजानू : समझ गया, समझ गया! छड़ी–घड़ी, भट्टी–खट्टी, किताब–हिसाब, शाबाश।

(नजानू अपनी ही पीठ ठोककर खुश होता है)

गुलदस्ता : अच्छा, अब कुरसी शब्द का तुक बताओ।

नजानू : टुरसी!

गुलदस्ता : टुरसी? ऐसा तो कोई शब्द नहीं है।

नजानू : है, है क्यों नहीं?

गुलदस्ता : बिलकुल नहीं है।

नजानू : अच्छा तो छुरसी।

गुलदस्ता : यह छुरसी क्या चीज़ है?

नजानू : छुरी से काटने वाले को छुरसी कहते हैं।

गुलदस्ता : तुम मुझे बुद्धू बना रहे हो। इस तरह का कोई शब्द नहीं होता। सुनो, अगर कविता लिखना सीखना है तो ऐसा शब्द चुनना चाहिए जिसे सब समझते हों। ऐसा नहीं, जिसे खुद ही बना लिया।

नजानू : और अगर ऐसा शब्द न मिले जिसे सब समझते हों, तो?

गुलदस्ता : इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं।

नजानू : तो तुम खुद ही बताओ, कुरसी की तुक क्या होगी?

गुलदस्ता : अभी लो।

(काफ़ी देर तक सोचता है, सिर खुजाता है और परेशान होता है।)

गुलदस्ता : गुरसी.....मुरसी....जुरसी....पुरसी ....उफ़। यह कैसा शब्द है। इस शब्द को

क्या हो गया है। इसकी कोई तुक ही नहीं।

नजानू : देखा! खुद ने ही ऐसा शब्द लिया जिसकी कोई तुक ही नहीं है। उस पर कहते हो कि मुझ में कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।

गुलदस्ता : अच्छा–अच्छा, है प्रतिभा! बस? मेरा तो सिर दर्द करने लगा। इस तरह की कविताएँ लिखो, जिनका कोई अर्थ हो।

नजानू : इसका मतलब.....यह तो बहुत आसान है।

गुलदस्ता : बिलकुल! बहुत आसान है.. बुद्धू कहीं का। कविता करते–करते कहीं पिट न जाए।

(गुलदस्ता बड़बड़ाता हुआ चला जाता है। नजानू उछलता है। अपनी पुरानी जगह पर पहुँचकर सोचने लगता है। दूसरे बच्चे खेलते खेलते थक जाते हैं।)

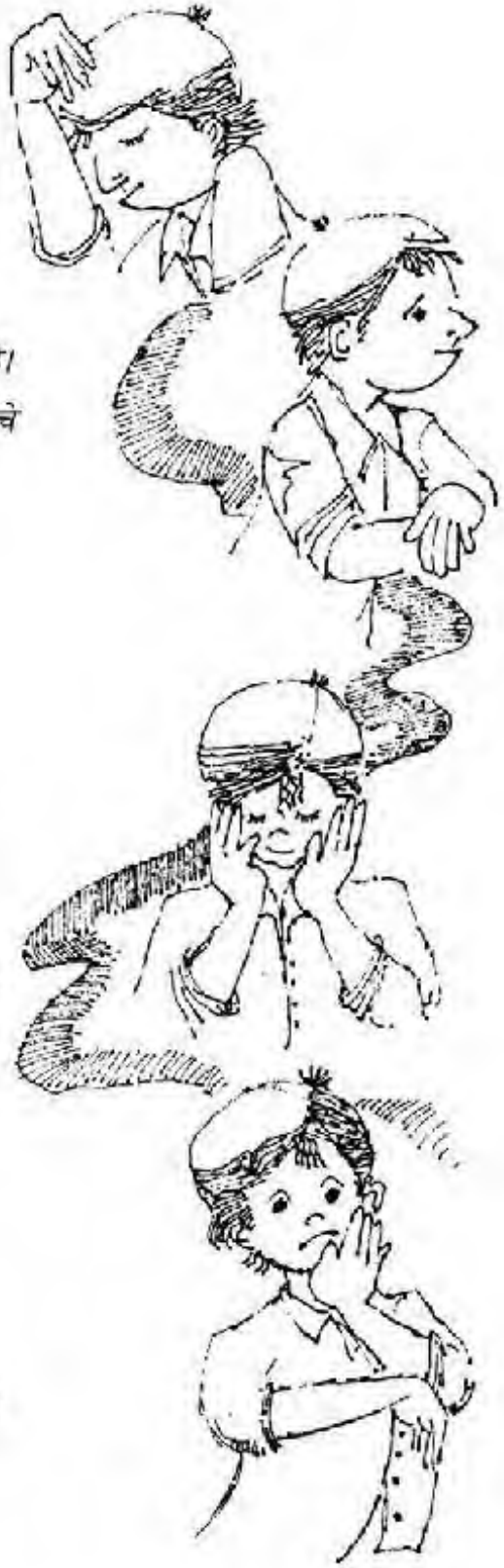

सुस्तराम : भई, अपन तो थक गए।

मोटू : हम भी।

जानू : हम भी।

(नजानू अचानक चिल्लाता हुआ उनके पास आता है।)

नजानू : अरे सुनो सुनो! मैंने बहुत अच्छी कविताएँ रची हैं।

मोटू : अच्छा। किसके बारे में हैं तुम्हारी कविताएँ? ज़रा सुनाओ तो।

नजानू : मेरी सारी कविताएँ तुम्हीं लोगों के बारे में हैं। सबसे पहली कविता तो जानू की ही है। लो, सुनो,

जानू गया टहलने नदिया के तट पर
जाते–जाते कूदा मोटर की छत पर।

जानू : झूठ, मैं मोटर की छत पर कब कूदा?

नजानू : अरे, ऐसा तो सिर्फ़ कविता में हुआ, तुक मिलाने के लिए।

जानू : यानी तुक मिलाने के लिए तुम मेरे बारे में ऐसी झूठी बातें कहोगे।

नजानू : और क्या, मुझे सच्ची बात कहने की क्या पड़ी है? जो सच है वो तो है ही।

जानू : अच्छा! जरा फिर से तो ऐसा करके देखो तब पता चलेगा।

मोटू : ठीक है, ठीक है! लड़ो मत। अच्छा, और दूसरों के बारे में तुमने क्या लिखा है?

नजानू : लो, जल्दबाज़ के बारे में सुनो:

जल्दबाज़ को भूख लगी
निगल गया ज़िन्दा मुर्गी।

जल्दबाज़ : छी! यह मेरे बारे में इसने क्या लिखा है? मैंने तो कभी अण्डा भी नहीं निगला।

नजानू : हाँ–हाँ। मगर तुम चिल्लाते क्यों हो? यह तो मैंने तुक मिलाने के लिए कहा है।

जल्दबाज़ : मगर मैंने कोई मुर्गी नहीं निगली। न ज़िन्दा न पकी।

नजानू : ओफ़्। तो मैं सच में थोड़े ही कह रहा हूँ। यह तो कविता है।

जल्दबाज़ : बड़ी अच्छी कविता, थू।

नजानू : अच्छा, लो! सुस्तराम की कविता सुनो:

सुस्तराम की जेब देखो,
रखा है मीठा सेब देखो!

सब : दिखाओ–दिखाओ।

सुस्तराम : झूठ, सफ़ेद झूठ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।

छोटू : हाँ–हाँ! इसकी जेब में तो कुछ भी नहीं है।

नजानू : तुम लोग कविता के बारे में तो कुछ भी नहीं समझते। ऐसा सिर्फ़ तुक मिलाने के लिए कहा गया है कि जेब में सेब रखा है। कोई असल में थोड़े ही रखा है। मैंने मोटू के बारे में भी कविता लिखी है।

मोटू : अपनी बकवास बन्द करो। यह हमारे बारे में साफ़ झूठ बघार रहा है और हम चुपचाप सुनते रहें।

छोटू : बस करो, हमें नहीं सुननी कविता–फविता। यह कोई कविता है? यह तो हमें चिढ़ाना है।

जल्दबाज़ : वाह! पहले कैसे चुपचाप सुनते रहे?

जानू : जैसे उसने हमारे बारे में कविताएँ पढ़ीं, उसी तरह वह दूसरों के बारे में भी पढ़ेगा।

छोटू–मोटू : हमें नहीं चाहिए। हम नहीं सुनेंगे।

नजानू : अगर तुम लोग कविता सुनना नहीं चाहते तो मैं जाकर पड़ोसियों को सुनाऊँगा।

मोटू : अच्छा तुम्हारी इतनी हिम्मत! रुको बताता हूँ।

(मोटू और छोटू और बाकी सब मिलकर नजानू को मारने दौड़ते हैं।)

नजानू : रुको–रुको! तुम लोगों को अच्छा नहीं लगता तो मैं कविता नहीं पढ़ूँगा। .. तुम मुझे मारो मत।

छोटू : सच कह रहे हो?

नजानू : सच, बिल्कुल सच।

मोटू : तो लगाओ उठक–बैठक।

(नजानू उठक–बैठक लगाने लगता है।)

नजानू कवि बना– अभ्यास

1. किसने, किससे कहा–

क. नहीं, मेरा मन खेल में नहीं लगता। मैं बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।

ख. इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं।

ग. झूठ, सफेद झूठ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।

2. नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ।

सफेद झूठ, हर चाल उल्टी पड़ना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना।

3. इन शब्दों के मतलब (शब्दार्थ) लिखो और उन से वाक्य बनाओ।

अगन, मेहनत, रचना, हिम्मत, प्रतिभा, परख, अचानक।

1. अपनी कॉपी में इन प्रश्नों के उत्तर लिखो:–

क. बच्चों में कविता कौन लिख लेता था?

ख. नजानू बच्चों के साथ खेलने के लिए क्यों तैयार नहीं हुआ।

ग. नजानू ने सबसे पहले किसके बारे में कविता लिखी? उस कविता की लाइनें लिखो?

घ. जल्दबाज़ अपने बारे में लिखी कविता सुनकर नजानू को क्या कहता है।

तुम भी अपने दोस्तों के बारे में कविताएँ बनाओ।

चूहो म्याऊँ सो रही है

– धर्मपाल शास्त्री

घर के पीछे
छत के नीचे
पाँव पसारे
पूँछ सँवारे
देखो कोई
मौसी सोई
नासों में से
साँसों में से
घर्र घर्र घर्र घर्र हो रही है
चूहो म्याऊँ सो रही है।

बिल्ली सोई
खुली रसोई
भरे पतीले
चने रसीले
उलटो मटका
देकर झटका
जो कुछ पाओ
चट कर जाओ
आज हमारा दूधा–दही है
चूहो म्याऊँ सो रही है।

पूँछ मरोड़ो
पाँव सिकोड़ो
नीचे उतरो
चीजें कुतरो
आज हमारा
राज हमारा
करो तबाही
जो मनचाही
आज मची है
चूहा शाही
डर कुछ चूहों को नहीं है
चूहो म्याऊँ सो रही है।

❖ **खाली जगह में कविता के लिए चित्र बनाओ**

❖ बिल्ली कहाँ सो रही थी?

रसोई में चूहों को क्या–क्या मिला?

बिल्ली से निडर होकर चूहे क्या–क्या करना चाहते हैं?

❖ **इन शब्दों से अपने वाक्य बनाओ –**

सँवारे, ---------- रसीले ----------

तबाही, ---------- मनचाही ----------

श्रुतलेख

1. शिक्षक पैराग्राफ को पढ़कर सुना दें।
2. अब पैराग्राफ को धीरे–धीरे बोलते जाएँ और बच्चे अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखते जाएँ।

मुनिया के घर अक्सर एक बिल्ली आ जाती थी। कभी कुर्सी के नीचे छिपी बैठी मिलती तो कभी बिस्तर के नीचे। उसका रंग सफेद था। उस पर काले और पीले रंगे के धब्बे थे। चितकबरी बिल्ली मुनिया को बहुत अच्छी लगती थी। मुनिया जब भी उसे देखती तो बड़े प्यार से उसे पुचकारती–" बिल्ली, मेरी बिल्ली, म्याऊँ म्याऊँ।" पर बिल्ली मुनिया को पास आती देख फौरन भाग जाती। मुनिया को बहुत बुरा लगता। वह चाहती थी कि बिल्ली से उसकी दोस्ती हो जाए। लेकिन बिल्ली थी कि उसे मुनिया से डर लगता था। एक दिन बिल्ली अम्मा से मार खाते खाते बची थी इसलिए शायद इतना डरती थी।

1. शिक्षक सम्पूर्ण अंश को पुनः पढ़ें। छात्र अपनी भूल सुधारें।
2. बच्चे अभ्यास पुस्तिका को आपस में बदल ले और पुस्तक में से देखकर यह पैराग्राफ जाँचे। गलत शब्दों पर गोला बना दें।
3. गलत शब्दों को सुधार कर तीन–तीन बार लिखें।

गलत शब्द	सही शब्द

श्रुतलेख

इस पैराग्राफ को कोई एक बच्चा जोर से पढ़े तथा शेष बच्चे सुनकर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखें।

कैलाश और रमेश में खूब दोस्ती थी। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। वे हमेशा साथ घूमते थे। गाँव में ऐसा कोई न था जिसे ये दोनों न जानते हों। लेकिन अभी एक सप्ताह पहले रमेश को अपने पिताजी के साथ शहर जाना पड़ा क्योंकि उनका तबादला हो गया था। रमेश को भी पिताजी के साथ जाना था। उसे अब पढ़ना भी शहर में ही था।।

न चाहते हुए भी रमेश को पिता के साथ जाना पड़ा।

प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. दोनों दोस्तों के नाम क्या थे ?
2. रमेश के पिताजी शहर क्यों गये ?

माँ ने की हड़ताल

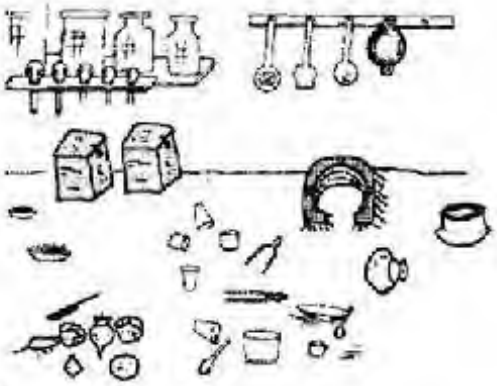

माँ ने की हड़ताल
घर में आया
एक भूचाल।
न ढंग का नहाना-धोना
न ढंग का खाना-पीना।

अँगीठी जली नहीं
दाल गली नहीं
आटा गुँथा नहीं
रोटी पकी नहीं।

पापा करते बड़बड़
मुन्ने ने की गड़बड़
स्कूल दफ्तर को हुई देरी
हर कोई कहे
'आई आफत मेरी'

आकर माँ को खूब मनाया
तब कहीं जाकर चैन आया।

1. 'माँ ने की हड़ताल' से यहां क्या मतलब है?

2. माँ के हड़ताल पर जाने से क्या–क्या हुआ? क्या सच में ही घर में एक भूचाल आया होगा? कैसे?

3. तुम्हें क्या लगता है, माँ ने हड़ताल क्यों की होगी?

4. अपने घर में तुम क्या–क्या काम करते / करती हो? अपनी कॉपी में एक सूची बनाओ।

5. अगर तुमने एक दिन हड़ताल कर दी तो किसकी आफत आएगी? – बाकी लोगों की या तुम्हारी?

6. कक्षा में चर्चा करने के बाद एक पेराग्राफ में लिखो – माँ को कैसे मनाया।

7. अगर माँ की तबीयत खराब हो जाए या माँ घर पर न हो, तो घर का काम कौन करता है?

आओ, कुछ और अभ्यास करें

इनको और किन–किन नामों से जानते हो?

1. भूचाल _____
2. अँगीठी _____
3. दफ़्तर _____

सही शब्दों का चुनाव करो और लिखो। ऐसे कौनसे और शब्द हैं जो एक साथ बोले जाते हैं?

1. हाड़ताल / हड़ताल / हड़तल _____ जैसे, नहाना–धोना _____ खाना–पीना _____
2. भूचल / भूचला / भूचाल _____
3. अँगीटी / अँगीटी / अँगिठी _____

भूचाल क्या चीज है और क्यों आता है ? गुरूजी से पूछकर पता करो।

_____

_____

'*घर में आया एक भूचाल*' का कविता के संदर्भ में क्या मतलब है?

_____

_____

कविता में लिखा है

पापा करते बड़बड़ – बड़बड़ करते हुए पापा क्या–क्या बोलते?

_____

_____

मुन्ने ने की गड़बड़ – मुन्ने ने क्या–क्या गड़बड़ की होगी?

_____

_____

अगर किसी दिन पापा हड़ताल पर जाएँ तो घर पर क्या–क्या होगा?

_____

_____

_____

_____

भालू– से – न – डरने– वाला

जब रेड इंडियन कबीलों के लड़के बड़े होते हैं तो उन्हें ' बहादुर ' कह कर पुकारा जाता है –किसी से न डरने वाले –यानी बहादुर।

लेकिन एक कबीले में एक ऐसा लड़का था जिसे किसी भी चीज़ से डर लग सकता था। कबीले के लोगों ने उसे "कमज़ोर-दिल " का नाम दे रखा था ।

एक दिन जब कमज़ोर – दिल जंगल में घूम रहा था,उसे एक बहुत ही बड़ा भालू मिला। डर के मारे कमज़ोर–दिल का तो जैसे खून ही जम गया।" ओ... " उसने भालू से कहा । "तुम क्या करने वाले हो? " "तुम्हें जकड़ कर मार डालने वाला हूँ । " भालू ने कहा ।

"क्यों ? "

"क्योंकि मैं बहुत गुस्से में हूँ ? "भालू ने कहा ।

"क्यों ? "

" क्योंकि मेरा सिर बहुत दर्द दे रहा है। क्या तुमने कभी ऐसे भालू के बारे में नहीं सुना जिसका सिर दर्द दे रहा हो? चलो इधर आओ ताकि मैं तुम्हें जकड़ कर मार सकूँ ।"

" पर आखिर तुम्हारा सिर क्यों दर्द दे रहा है? " कमज़ोर दिल ने पूछा। भालू बैठ गया और सोचने लगा।

" बहुत ज्यादा बेर खा लिए होंगे मैंने शायद इसलिए।" उसने कहा। "उसी से मुझे सिर दर्द हो गया होगा ।"

" पर बेरों से तो पेट दर्द होना चाहिए, सिर दर्द नही।" कमज़ोर–दिल ने कहा ।

"ओह " भालू ने कहा। " तब फिर वो तो नहीं हो सकता। शायद जब मैं मधुमक्खी का छत्ता तोड़ रहा था तब किसी मधुमक्खी ने मुझे जोर से काट लिया हो।"

" पर मधुमक्खी के काटने से भालुओं को तो कुछ भी नहीं होता।" कमज़ोर दिल ने कहा।

" ओह।" भालू ने कहा।" अच्छा। फिर वो तो नहीं हो सकता। शायद मैं पेड़ से गिर गया होउँगा, सिर के बल ।"

"पर भालू तो पेड़ों से गिरते ही नहीं हैं। " कमज़ोर–दिल ने कहा।

"ये तो सही है।" भालू ने कहा। "वो गिरते नहीं हैं। तुम ही बताओ कि मेरा सिर क्यों दर्द दे रहा है।"कमज़ोर–दिल ने एक गहरी साँस ली।

"मुझे लगता है कि तुम्हारा सिर दर्द ही

नहीं दे रहा है।" उसने कहा,"तुम तो यू हा कल्पना कर रह हा कि तुम्ह ।सरदद ह।
"सचमुच?" भालू ने कहा । उसने अपना सिर थोड़ा–सा हिलाया और सोचने लगा।
"पता है, " फिर उसने कहा। "पता है, मुझे लगता है तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो । मुझे तो लगता है कि मुझे सिरदर्द है ही नहीं।"
"तो तुम गुस्से में नहीं हो?" कमज़ोर–दिल ने पूछा।
"नही।"
"तो तुम मुझे जकड़ कर मारना नहीं चाहते हो?"
"नहीं।" भालू ने कहा। "लेकिन मेरा सिरदर्द दूर करने के लिए मैं तुमसे हाथ जरूर मिलाना चाहता हूँ।"
"ये तो आपकी मेहरबानी है," कमज़ोर दिल ने कहा। "लेकिन आप अगर मेरी थोड़ी–सी मदद कर सकते तो मेरे लिए बेहतर रहता।"
"ज़रूर " भालू ने कहा। " तुम बताओ तो सही।"
"थोड़ा आगे झुकिए।" कमज़ोर–दिल ने कहा, और भालू थोड़ा आगे झुका ताकि लड़का अपनी बात धीरे से उसके कान में कह सके।
भालू ने ध्यान से सुना।
"सचमुच?" उसने थोड़ी देर बाद कहा। " तुम? डरते हो?..... अच्छा, अच्छा, तुम चाहते हो कि मैं.... हा... हा.... आहा! क्या मजा आ जाएगा।"

उस शाम को जब कबीले के डेरे में भालू आया तो इतना डर, इतना डर फैला सब तरफ कि पूछो मत। पर सबसे बड़ी बात तो ये हुई कि उसका सामना करने आया–कोई और नहीं बल्कि कमज़ोर – दिल! जो कि चूहों तक से डरता था। आश्चर्य! उसने भालू को एक घूँसा मारा पेट में, और जब भालू पेट पकड़ कर झुका तो एक घूँसा मारा नाक में। और जब भालू भागने के लिए मुड़ा तो एक लात मारी पीठ पे। भालू जोर से कराहा–ओ! उसने पीठ पकड़ी पंजों से और भागा जंगल की ओर। भागते–भागते उसकी हँसी फूट पड़ी, लेकिन कबीले के लोगों को ये कैसे दिखता? वो तो बस चुप–चाप अचम्भे में देखते रह गए।
फिर कबीले के मुखिया आगे आए। उन्होंने कमज़ोर–दिल के सिर की पट्टी में बाज़ का एक पंख लगाया। फिर उन्होंने पूरे कबीले की ओर मुड़कर कहा–"आज से हमारे पास कमज़ोर-दिल नाम

का लड़का नहीं है। ये एक बहादुर है और इसका नाम है– भालू–से–न–डरने–वाला।"

"इसका नाम है भालू–से–न–डरने–वाला!!" पूरे कबीले ने जोर से दोहराया।

पेड़ों के पीछे से झाँकते हुए भालू ने खुशी से अपने आप को ही जकड़ लिया और फिर मुस्कराते हुए जंगल की ओर बढ़ने लगा ।

अब इन प्रश्नों के उत्तर दो –

1. कबीले के लोग किसको बहादुर बुलाते थे ?
2. भालू गुस्से में क्या करना चाहता था ?
3. कमज़ोर–दिल ने भालू के कान में क्या कहा होगा, अपने शब्दों में लिखो–
4. कमज़ोर–दिल ने भालू से लड़ाई क्यो की ?
5. क्या तुमको लगता है कमज़ोर –दिल सच में कमज़ोर था ? बताओ क्यों ?
6. भालू से लड़ते हुए कमज़ोर दिल का चित्र बनाओ ।
7. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे –

(क) इसका नाम है "भालू –से–न–डरने वाला! "

(ख) "पर आखिर तुम्हारे सिर में दर्द क्यों हो रहा है ?"

(ग) "तुम्हें जकड़ कर मार डालने वाला हूँ ।"

8. तुम्हें किससे डर लगता है–अपने अनुभव लिखो /बताओ ।
9. किसी बहादुर बच्चे के बारे में लिखो– वह तुम्हें बहादर क्यों लगा ?

बहादुर नाम का मतलब है–जो किसी से डरता न हो। हम सब के नामों का कुछ न कुछ मतलब हैं। तुम्हें अपने नाम का मतलब पता है ? यहा लिखो–अपने दोस्तों के नाम का मतलब भी पता कर के यहा लिखो

नाम मतलब

* कमजोर –दिल को किसी भी चीज से डर लगता था । हम सभी को कुछ – चीज़ों से डर लगता है –तुमको भी, मुझे भी, गुरूजी को भी, माँ को भी, बड़े भैया को भी.....।
क्या तुमने अपने दोस्त को कभी बताया है कि तुम्हें किस से डर लगता है ?
कभी किसी और को बताया है ?
अपनी कक्षा के साथ बैठकर सब बारी–बारी से बताओ कि तुम्हें किस से डर लगता है – गुरूजी से भी पूछो उन्हें किन–किन चीज़ों से डर लगता है ।

* क्या कभी ऐसा भी हुआ कि तुम्हें जिस से डर लगता है, तुम उससे नहीं डरे ?

* तुम्हारे गाँव में कोई ऐसा है–जिसने कोई ऐसा हिम्मत का काम किया हो जो और कोई नहीं कर पाया ? उसके बारे में लिखो ।

10. तुमने कक्षा चौथी में नाटक पढ़ा होगा। क्या इस कहानी को नाटक के रूप में लिखा जा सकता है? शुरुआत तुम्हारे लिए कर दी गई है इसे पूरा करो ।

(रेड इंडिन कबीले का एक लड़का जंगल में घूम रहा है। देखने में तो कबीले के और लड़कों की तरह ही है – सिर पर लाल रंग की पट्टी बाँधे , पट्टी में पंख लगाए – लेकिन उसे हर चीज से डर लगता है ।)

सोचता हुआ जा रहा है कोई जंगली जानवर न मिल जाए.....कि तभी सामने से कुछ आता दिखाई दिया " अरे....इ.....इतना बड़ा भा..... भालू.....!")

कमज़ोर दिल: (डरते हुए) "ओ..... तुम क्या करने वाले हो ?"

भालू :

कमज़ोर–दिल :

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

गहरे रंग में लिखे गए शब्द किसके लिए कहे गए हैं? वाक्य के सामने लिखो।

तुम्हें जकड़ कर मार डालूँगा। ----

मुझे ऐसा लगता है कि **तुम्हारा** सिर दर्द ही नहीं दे रहा है? ----------

क्योंकि मैं बहुत गुस्से में हूँ । ----

उसने भालू को एक घूँसा मारा । ----

तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। ----

ये तो **आपकी** मेहरबानी है। ----

भालू ने खुशी से **अपने आप** को ही जकड़ लिया। ----

किसी का नाम बोलने की जगह हम कई और शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इन शब्दों को ***सर्वनाम*** *कहते हैं।*

कहानी में से छाँटकर या सुने हुए ऐसे और शब्द यहाँ लिखो।

रेखांकित शब्दों के बदले सर्वनाम का प्रयोग कर वाक्य लिखो।

उदाहरण–

मोहन बाज़ार जा रहा है। वह बाज़ार जा रहा है।

सीता की आवाज़ बहुत मीठी है। ----------

श्याम ने अभी खाना नहीं खाया। ----------

रमेश आज आया क्यों नहीं? ----------

शाहपुर में मीना को डाक्टर से मिलना है। ----------

मधुमक्खी के काटने से भालुओं को कुछ नहीं होता। ----------

आज मास्साब ने मज़ेदार खेल खिलाए। ----------

हम कल बजरंग घूमने जाएँगे। ----------

चूहे की दिल्ली यात्रा

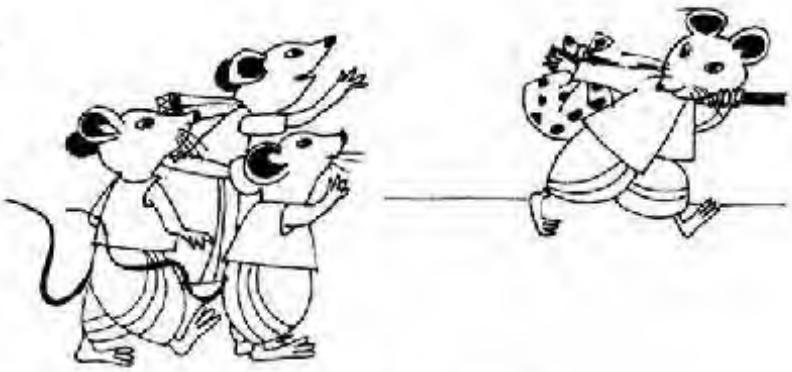

चूहे ने यह कहा कि चुहिया, छाता और घड़ी दो,
लाया था जो बड़े सेठ के घर से, वह पगड़ी दो।

मटर मूँग जो भी है घर में, वही सब मिल खाना,
खबरदार तुम लोग कभी बिल से बाहर मत जाना।

बिल्ली एक बड़ी पाजी है, रहती घात लगाए,
ना जाने कब किसे दबोचे, कब चट कर जाए।

सो जाओ सब लोग, दरवाजे पर लगाकर किल्ली,
आज़ादी का जश्न देखने, मैं जाता हूँ दिल्ली।

दिल्ली में देखूँगा, आज़ादी का नया ज़माना,
लाल किले पर खूब तिरंगे झंडे का लहराना।

अब न रहे अंग्रेज़, देश पर काबू है अपना,
पहले जहाँ लाट साहब थे, राष्ट्रपति है अपना।

घूमूँगा दिन रात, करूँगा बातें नहीं किसी से,
हाँ, फुरसत जो मिली, तो मिलूँगा मैं प्रधानमंत्री से।

गांधी युग में कौन उड़ाए, चूहों की अब खिल्ली
आज़ादी का जश्न देखने, अब मैं जाता हूँ दिल्ली।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. चूहे ने दिल्ली जाने के लिए चुहिया से क्या–क्या माँगा?
2. यदि तुम दिल्ली जाते तो क्या–क्या ले जाते?
3. चूहे ने प्रधानमंत्री से क्या–क्या बातें की होंगी?
4. अपने देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कौन–कौन हैं?
5. तुमने कभी कोई यात्रा की हो तो उसके बारे में लिखो।
6. खाली जगह में कविता के लिए दो–तीन चित्र बनाओ।
7. चूहा चूहिया को साथ क्यों नहीं ले गया?
8. चूहे की दिल्ली यात्रा के बारे में एक पैराग्राफ लिखो।
9. इनके मतलब बहनजी/मास्साब से पूछो–

   पाजी, घात, जश्न, काबू, फ़ुरसत।

   अब इन शब्दों से एक–एक वाक्य बनाओ।
10. भारत का नक्शा देखकर लिखो कि इटारसी से दिल्ली तक कितने बड़े–बड़े स्टेशन पड़ेंगे।
11. यह कविता किस कवि की है, उनका नाम लिखो।
12. चूहे ने दरवाज़े पर किल्ली लगाने की बात क्यों की?
13. इन पर चर्चा करो और इनके बारे में पता करो–

    आज़ादी का नया ज़माना, लाल किला, तिरंगा, अंग्रेज़, लाट साहब, राष्ट्रपति, गांधी युग।
14. **नीचे तिरंगे झंडे का चित्र बनाओ।**

तिल का ताड़ राई का पहाड़

तो वक्त सबको अच्छे दिन दिखाये और समय पर ठीक अकल सुझाये कि किसी बेनाम गांव के बाहर एक कबीले ने डेरा डाला। हट्टे-कट्टे, लम्बे-तगड़े कई जवान। एक से बढ़कर एक। एक दिन कबीले का एक आदमी गुड़ लेने पंसारी के यहां पहुंचा। बोनी के समय सीधा-सादा ग्राहक आया देख पंसारी बहुत खुश हुआ। तीन बार में तीन से कम तौलना तो उसके बाएं हाथ का खेल था।

गुड़ देखकर आदमी ने कहा, "गुड़ बहुत गीला है।"

पंसारी तपाक से हँसकर बोला, "बरसात का मौसम है ना! नमक और गुड़ तो गीले होंगे ही। माल में खामी हो तो कहना।"

मोल-भाव से निपट कर पंसारी ने बोरी खोली और गुड़ तौलने लगा। वह आदमी तराजू की डांडी और पलड़ों को गौर से देख रहा था। पर उसकी क्या बिसात की पंसारी के हाथ की सफाई ताड़ ले। तभी उस आदमी की नज़र गुड़ पर चिपके एक तिनके पर पड़ी। एक तिनके से तौल में भला क्या फर्क पड़ता है? पर ग्राहक से रहा न गया, उसने तिनका उठाया और अंगुली के झटके से सामने की ओर फेंक दिया।

जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आयेंगी ही। वे किसी न्योते का इंतज़ार नहीं करतीं। इधर दीवार पर तिनके का चिपकना हुआ और उधर दो-तीन मक्खियां उसकी मिठास का मज़ा लेने लगीं। मक्खियां मिठास के आनन्द में डूबी थीं कि छिपकली एक झपाटे में दो मक्खियां निगल गयी। तीसरी उड़ गयी। छिपकली दूसरी मक्खियों की ताक में दीवार पर अविचल बैठी थी। सहसा पंसारी की बिल्ली अपनी समाधि तोड़कर उस पर झपटी। वह मक्खियों समेत उसके पेट में समा गयी। बिल्ली को अपने शिकार के अलावा कुछ ध्यान न था।

कुत्ते और बिल्ली की दुश्मनी जाने कब से चली आ रही है! उस आदमी का कुत्ता इसी फिराक में था कि किसी तरह बिल्ली उसके हाथ लगे। सीधे बिल्ली पर छलांग मारी। पर यों पकड़ में आ जाये, वह बिल्ली ही क्या! वह पलटकर बिजली की तेज़ी से दुकान में घुस गयी। आगे बिल्ली और पीछे कुत्ता। उनकी भगदड़ में कई बासन लुढ़क गये। कई मटकियां फूट गयीं। बतासे, मिसरी, चीनी, मिर्च-मसाले दालें बिखर गयीं। तेल फैल गया। बैठे-बैठाये पंसारी का नुकसान हो गया। पंसारी ने अपना आपा भूल कर, ज़ोर से एक बाट कुत्ते की ओर फेंका। निशाना तो उसका अचूक नहीं था, पर होनी कहें या संजोग कि वो सीधे कुत्ते के ललाट पर लगा। खून का फव्वारा छूट गया। अब उस आदमी को भी गुस्सा आया! खुद की चोट तो शायद बर्दाश्त कर लेता, पर अपनी जान से भी प्यारे कुत्ते के चेहरे पर खून देखकर उसका खून खौल उठा। उसने पंसारी को एक चांटा जड़ दिया। पंसारी तोबा-तोबा मचाने लगा। पास के दुकानदारों ने पंसारी का रोना-धोना सुना और अपनी-अपनी तोंद और धोती संभालते दौड़े चले आये।

इधर कुत्ता भागा-भागा कबीले गया और जवानों को बुला लाया। तू-तू, मैं-मैं से बात बढ़ी और हाथा-पाई तक पहुंच गई। सैकड़ों लोगों की भीड़ मरने मारने पर उतर आयी। इतने में किसी ने पुलिस को सूचना कर दी पुलिस

आता देख कई लोग भागे, कुछ पकड़े गए और थाने में बंद हुए। बात ही बात में गांव की शांति भंग हो गई। पुलिस ढूंढ-ढूंढ कर लोगों को पकड़ने लगी। काम-धंधा छोड़, लोग छिपने-छिपाने लगे।

गुड़ तौलने वाले पंसारी की दीवार पर तिनका अभी भी चिपका हुआ था। कुछ मक्खियां अब भी मंडरा रही थीं। एक दूसरी छिपकली उनकी टोह में लार टपका रही थी। एक छोटे से तिनके के कारण जितना फसाद हुआ वह ही बहुत, आगे सबको सुमत मिले। कहानी थी तो खतम। पैसे थे तो हजम।

राजस्थानी लोक-कथा

1. बरसात में नमक और गुड़ पसीजकर गीले हो जाते हैं। और क्या-क्या पसीजकर गीला होता है? उनके नाम लिखो।

2. आदमी तराजू को ध्यान से क्यों देख रहा था? तराजू से सही-सही तोलने के लिए क्या-क्या चीज़ें होना ज़रूरी हैं?

3. हम लीटर से क्या-क्या नापते हैं?

4. किलो से क्या-क्या तौलते हैं?

5. मीटर और फुट से क्या-क्या नापते हैं?

6. गुड़ देखकर आदमी ने कहा, "गुड़ बहुत गीला है" पंसारी तपाक से हँसकर बोला, "बरसात का मौसम है ना! नमक और गूड़ तो गीले होंगे ही। माल में खामी हो तो कहना।"

ऐसे ही एक बार सरजू आम वाले से बोली, "आम तो हरे हैं।" आम वाला फिर क्या बोला होगा?

- दूध वाले से जीवन ने कहा, "दूध तो पतला दिखता है।" तो दूध वाला तपाक से बोला होगा

---

7. मतलब लिखो -

कबीला ---------- पंसारी ----------

खामी ---------- समाधि ----------

बासन ---------- अविचल ----------

8 तुमने देखा होगा जरा सी बात पर कोई झगड़ा पड़ा। देखा तो पता लगा कि झगड़ने लायक कोई बात ही न थी। ऐसी कोई घटना सुनाओ।

9. क्रम से जमाओ -

मक्खी बैठी, तिनका दीवार पर चिपका, बिल्ली ने छिपकली खायी,

दूसरे दुकानदार आये, चांटा मारा, कुत्ता बिल्ली पर दौड़ा।

कौआ और मुर्गी

कहानी पढ़ते जाओ और उसमें छूटे हुए शब्दों को खाली स्थान में भरते जाओ।

कौआ और मुर्गी दोनों एक घर में ——— थे।

——— दाना लाता था।——— भी दाना लाती थी।

ऐसा करते-करते घर में बहुत ——— जमा हो गया।

एक दिन कौवे ने ——— "मैं चावल लेने ——— हूँ,

तू घर का ——— बन्द रखना नहीं तो कोई

——— ले ———।"

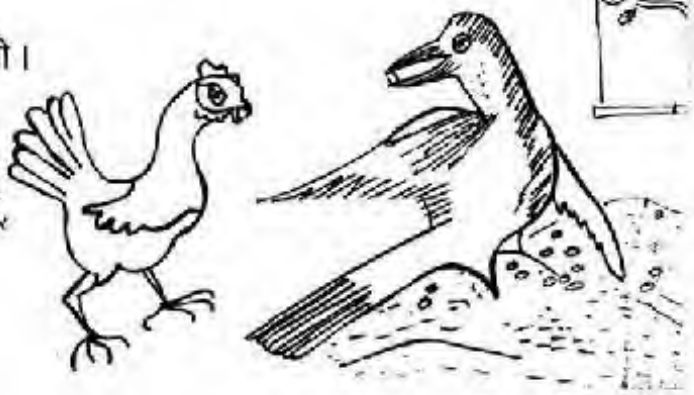

थोड़ी देर बाद एक घोड़ा ———। ———ने कहा,

"मुर्गी-मुर्गी दरवाज़ा——— और मुझे दाना दे।"

——— ने कहा, "नहीं, नहीं मैं दाना ——— ———।"

——— ने कहा, "मुर्गी, मुझे ——— दे,

मुझे बहुत ——— लगी है।"

मुर्गी को दया आ गई। उसने सारा दाना ——— को दे दिया।

अब ——— सोचने लगी, कौआ दाना माँगेगा तो मैं कहाँ से दूँगी ।

मुर्गी बहुत ———गई।

जब कौआ ———लेकर घर लौटा तब मुर्गी चक्की के पीछे छिप गई।

कौवे ने आवाज लगाई, "———, ——— , तू ——— ?"

डर के मारे ——— चुप रही।

एक आवाज़ भी नहीं निकाली।

उस समय एक बिल्ली घर में आई।

बिल्ली ने कहा, "मुर्गी, मुझे अपनी चक्की दे।

मुझे दाना ———————है।"

कौए ने कहा " मुर्गी तो घर में ———————है।

तू अपना ——————— यहीं लाकर पीस ले।"

——————— दाना ले आई और पीसने को बैठी।

बिल्ली ने दाना ——————— में डाला।

मुर्गी ने चट उसे मुँह में भर लिया।

———————ने और दाना ——————— में डाला।

——————— ने उसे भी चट ———————।

बिल्ली ———————लगी पर आटा न निकला।

ये देख बिल्ली बहुत ——————— हुई।

——————— ने सारी बात कौवे को बताई।

कौवा भी बहुत चकित हुआ।

कौवा सोचने लगा दाना कहाँ होगा।

ढूँढ़ते–ढूँढ़ते उसने चक्की के पीछे ———————।

वहाँ मुर्गी मुँह में ——————— भरे बैठी थी।

उसका मुँह दाने से एकदम फूल गया था।

उसे देख कौवा हँसा।

उसे देख बिल्ली भी बहुत ——— ।

दोनों हँसे तो मुर्गी को भी जोर की ———आई।

वो हँसी और उसके मुँह से सारे दाने निकल पड़े।

पहेलियाँ

1. गड़ी खेत में झंडी हरी
   खड़ी खेत में, उल्टी पड़ी
   नीचे सफेद, ऊपर हरी

2. छाँटा जाता, पीसा जाता
   काटा जाता, बाँटा जाता
   बावन हैं, सब साथ रहते
   इनको पत्ता भी हैं कहते

3. एक लाठी की सुनो कहानी
   छुपा है इसमें मीठा पानी

4. पंख नहीं पर उड़ती हूँ
   हाथ नहीं पर लड़ती हूँ

5. नहीं लगते इनके रोपे?
   बीज न इनके होते हैं?
   सबके तन पर होते हैं?

6. घर के कोने में बैठी
   हरदम बुनती रहती जाल
   लेकिन जाकर पकड़े मछली
   कभी न आता उसको ख्याल

7. दर्जन से लाते हैं
   छील के उसको खाते हैं

● खाली जगह में पहेली के उत्तर के चित्र बनाओ।

चाचाजी ने पकड़ा चोर

एक रात की बात है
हो रही बरसात है।
घर से निकले चाचाजी
पकड़ो चोर! आवाज़ है।
इधर से आए चाचाजी
उधर से आया चोर।
ज़ोर से भागे चाचाजी,
ज़ोर से भागा चोर।
हुई ज़ोर से टक्कर उनकी
हम सब दौड़े आए
पड़े बेहोश हैं दोनों देखो
अपने सिर फुड़वाए।

सरकारी अस्पताल
वार्ड दो, बिस्तर नम्बर चार ।
3 अक्टूबर

दोपहर दो बजे

प्रिय बिसनू,

देखो न कितनी अजीब–सी बात हो गई। आज सुबह जब मैं होश में आया तो यहाँ बिस्तर पर पड़ा हुआ था। सिर में ज़ोरों का दर्द हो रहा था और मोटी–सी पट्टी बँधी हुई थी। पहले–पहले तो कुछ समझ न आया कि क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, मैं यहाँ कैसे पहुँचा।

याद करने की कोशिश करता हूँ तो सिर का दर्द और बढ़ जाता है। लेकिन कुछ समय बाद मुझे याद आया कि रात के समय मैं कहीं जा रहा था। बारिश भी हो रही थी। फिर चोर! चोर! की आवाज़ आई थी। मैं डर गया था। जिधर से आवाज़ आ रही थी उसकी उल्टी दिशा में भागा था, चोर से बचने के लिए। फिर पता नहीं क्या हुआ और मैं यहाँ अस्पताल में आ पहुँचा।

रात नौ बजे

नर्स आ गई थी इसलिए चिट्ठी आगे नहीं बढ़ी। उसने बताया कि मैंने चोर से टक्कर कर ली थी– हम दोनों का सिर भिड़ गया था और दोनों बेहोश हो गए। चोर भी अस्पताल में दर्ज है, लेकिन दूसरे वार्ड में है और पुलिस उसकी निगरानी कर रही है। नर्स का कहना है कि मैं अब हीरो बन गया हूँ । चोर को पकड़ने के लिए मुझे इनाम मिलेगा! अजीब–सी बात है। जहाँ तक मुझे याद आ रहा है, मैं तो चोर से डर कर भाग रहा था, उसे पकड़ने के लिए नहीं।

बस, अब आगे नहीं लिखता, सिर दर्द करने लगा है। शाम को डॉक्टर ने कहा था कि एक हफ्ता और यहाँ रहना पड़ेगा। हो सके तो तुम सब मुझसे आकर मिलना, नहीं तो चिट्ठी ज़रूर भिजवा देना।

अभ्यास

1. बिसनू ने चाचाजी को अपनी चिट्ठी में क्या लिखा होगा? उसकी तरफ से चाचाजी को एक चिट्ठी लिखो।
2. अस्पताल में चाचाजी को क्या–क्या दिखा होगा? किस–किस तरह की गंध आई होगी? पता कर के लिखो।
3. चाचाजी अस्पताल में क्यों थे?
4. चाचाजी को अस्पताल कौन लाया होगा? कैसे लाया होगा?
5. ऊपर की कविता और चाचाजी की चिट्ठी पर कुल मिलाकर पाँच सवाल बनाओ।
6. अस्पताल में मिलते हैं **नर्स** और **डॉक्टर** बताओ इन जगहों में कौन–कौन मिलते हैं?

बस अड्डा	पुलिस थाना	ब्लाक ऑफिस	तहसील कार्यालय	स्कूल

● खाली जगह में चाचाजी और चोर की टक्कर दिखाते हुए चित्र बनाओ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

चाचाजी की बातें पूरी करो।

खाली स्थान में एक शब्द भरना है–
यह शब्द वाक्य में से ही किसी एक शब्द का उल्टा होगा।

1. कल रात को मैं बेहोश था फिर सुबह होश में आया।

2. सिर की पट्टी मोटी, अंगुली की पट्टी ––– ।

3. –––––– में नहीं आया, तू है नासमझ।

4. ––––––तो भाग गया, –––––– मुझे पकड़ लाई।

5. जब मैं आया तब वह –––––– ।

6. जब मैं अंदर आया तब चोर ––––––– गया।

7. कौन ––––––, कौन चतुर।

8. इस नर्क में –––––– कहाँ ।

9. कहीं ––––––, कहीं अनुचित।

10. असली –––––– की क्या पहचान।

कबीर के दोहे–

माँखी गुड़ में गड़ि रहे, पंख रहयो लिपटाय।
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।

बड़ा हुआ सो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपौ सीतल होय।

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर
कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर।

कबीरदास .

प्रश्न–1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. लालच करना बुरा है। इसके लिए कबीर ने किसका उदाहरण दिया है ?

2. खजूर के पेड़ के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं ?

प्रश्न–2. यह अर्थ किस दोहे का है। लिखो।

1. कबीर दास जी कहते हैं कि हमेशा मीठी बोली बोलना चाहिए। इससे खुद को भी सुख मिलता है और दूसरों को भी।

2. कबीर दास जी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भगवान मुझे केवल इतना धन दीजिए जिसमें परिवार का पालन–पोषण भी हो जाए और मेहमान भी भूखा न जाएं।

प्रश्न–4. अधूरे दोहों को पूरा कीजिए

ऐसी बानी बोलिए .....
औरन को सीतल करें .....
बुरा जो देखन मैं .....
जो मन खोजा .....

प्रश्न–5. शब्दों के अर्थ लिखो।

बानी माँखी पंथी छाँड़ि साईं

स्नेगुरका - बर्फ की कुमारी

स्नेगुरका - ये नाम हमारे यहां सुनने को नहीं मिलता। इसे दो-तीन बार बोल कर देखो, बोला जाता है कि नहीं। स्नेगुरका का मतलब है – बर्फ की कुमारी। ये है उसकी कहानी –

दूर एक जगह पर, जहां ठंड के दिनों में बर्फ गिरती थी – ठंडी, मुलायम, रूई जैसी बर्फ – वहां मरूशा नाम की एक औरत और उसका पति इवान रहते थे। उनके कोई बच्चे न थे। वे जब आस-पड़ोस के बच्चों को खेलते देखते तो बड़े खुश होते।

ठंड के मौसम में एक दिन, ताज़ी, सफेद, मुलायम बर्फ चारों ओर पड़ी थी। इवान और उसकी पत्नी बच्चों को खेलते और हंसते देखकर खुश हो रहे थे। बच्चे बर्फ का आदमी बना रहे थे। बर्फ का आदमी मरूशा और इवान की आंखों के सामने बढ़ता जा रहा था और उसे बढ़ते देखने में दोनों को बहुत मज़ा आ रहा था।

अचानक इवान ने कहा,'मरूशा, चलो हम भी बर्फ से आदमी बनाएं।'

मरूशा तैयार हो गई। हां, हां 'क्यों न हम लोग भी अपना मन बहलाएं। पर बर्फ का आदमी ही क्यों बनाएं? बर्फ की एक बच्ची बनाते हैं।'

यह कह कर वे दोनों बर्फ से एक बच्ची बनाने में लग गए। उन्होंने छोटा-सा एक शरीर बनाया, छोटे-छोटे हाथ और नन्हे-नन्हे पांव भी बनाए। फिर उन्होंने बर्फ का एक छोटा-सा गोला बनाया जिसे उन्होंने बच्ची के सिर का आकार दिया।

पास से निकल रहे एक आदमी ने पूछा,'तुम लोग क्या कर रहे हो?'

'हम लोग बर्फ की एक बालिका बना रहे हैं।' मरूशा ने जबाब दिया।

मरूशा ने बर्फ की लड़की के सिर पर नाक और ठोड़ी लगाई, और आंखों के लिए दो छोटे-छोटे गड्ढे किए। जैसे ही बर्फ की लड़की बन कर तैयार हुई वह थोड़ी-सी हिली। इवान और मरूशा दंग रह गए। इवान ने उस लड़की की गर्म सांस महसूस की। वह थोड़ा पीछे हटा तो उसने देखा कि बर्फ की इस कुमारी की आंखें नीली और होंठ गुलाबी थे। उसके होंठों पर प्यारी-सी मुस्कान थी।

'यह क्या?' इवान ठिठक कर बोला। बर्फ-कन्या ने अपना सर हल्के-से झुकाया तो उसके अब सुनहरे बालों से हल्के-से बर्फ गिरी। वह बर्फ में अपने हाथ-पांव हिलाने लगी, बिल्कुल असली बच्ची की तरह।

'इतान, इवान!' मरूशा चिल्लाई। 'देवताओं ने हमारी प्रार्थना सुन ली।' वह कन्या को गले लगाकर चूमने लगी। 'ओह, स्नेगुरका! मेरी अपनी प्यारी-सी बर्फ की बेटी।' उसने कहा और उसे उठा कर घर के अंदर ले आई।

हर घंटे में स्नेगुरका बढ़ती जाती और खूबसूरत होती जाती। इवान और मरूशा अब खुशी से फूले न समा रहे थे।

स्नेगुरका बहुत ही प्यारी बच्ची थी। सभी उसे बहुत प्यार करते। वह और बच्चों के साथ बर्फ में खेलती। वह अपने छोटे-छोटे हाथों से बर्फ की सुंदर चीज़ें बना लेती। स्नेगुरका के साथ सभी खुश थे – इवान, मरूशा, आसपास का पूरा मोहल्ला।

फिर आखिर ठंड का मौसम खत्म होने लगा। वसन्त की कुनकुनी धूप बर्फ को पिघलाने लगी। हरी दूब निकल आई। पक्षी के गान शुरू हो गए।

बाकी सब बच्चे वसन्त की बहार से खुश बाहर खेलने निकल आते, पर स्नेगुरका खिड़की के पास बैठी दुखी होती रहती।

'क्या बात है बेटी?' मरूशा ने उससे पूछा। तुम इतनी दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?'

'कुछ नहीं मां, मैं बिल्कुल ठीक हूं।' स्नेगुरका ने उत्तर दिया।

ठंड की आखिरी बर्फ पिघल चुकी थी। सब जगह फूल निकल आए थे। वसन्त की बहार चारों तरफ थी। चिड़ियां भी चहक रही थीं। सब खुश थे पर स्नेगुरका थी कि दुखी होती चली जाती थी।
वह अपने दोस्तों के पास नहीं जाती। धूप से डरकर छिप जाती। उसे छांवदार पेड़ों के नीचे, झरनों के पास, ठंडक में खेलना ही पसंद था। वह रात को सबसे ज़्यादा खुश रहती थी, चाहे रात के भयंकर तूफान भी आए या ओले गिरें। जब ओले पिघलने लगते तो वह रोने लगती।

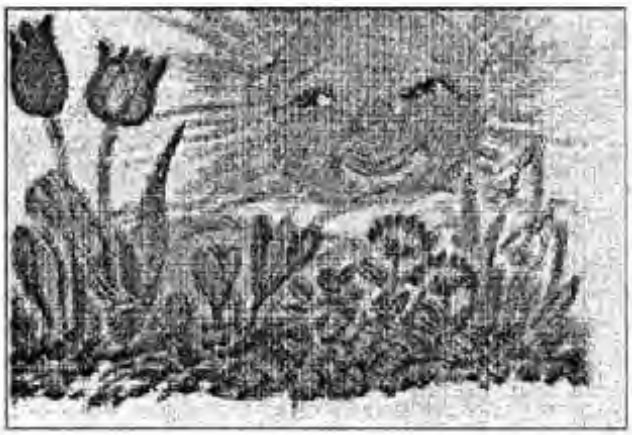

फिर गर्मी के दिन आ गए। और एक दिन स्नेगुरका के दोस्तों ने उसे अपने साथ जंगल में फल और फूल बटोरने के लिए बुलाया। स्नेगुरका जाना नहीं चाहती थी पर उसकी मां के बहुत कहने पर उनके साथ चली गई। 'जाओ मेरी प्यारी स्नेगुरका, जाकर खेलो। और बच्चों, तुम भी इसका ध्यान रखना। तुम जानते हो कि ये हमें कितनी प्यारी है।' मरूशा ने कहा।

बच्चे खेलते-कूदते सुंदर फूल और झरबेरियां इकट्ठी कर रहे थे। कुछ बच्चों ने जंगली फूलों की माला भी बनाई। माला पहनकर सब बच्चे गीत गा रहे थे।

'हमें देखो। हमारे साथ आगे चलो।' बच्चे स्नेगुरका को आवाज़ देते। वे नाचते-गाते आगे बढ़ रहे थे कि पीछे से अचानक उन्हें हल्की-सी 'आह' सुनाई दी। उन्होंने मुड़कर देखा तो पीछे बर्फ का एक छोटा-सा ढेर था जो तेज़ी से पिघल रहा था। स्नेगुरका अब उनके साथ नहीं थी।

1. *अपनी कापी में इन सवालों के उत्तर लिखो।*

(क) इवान और मरूशा कैसी जगह रहते थे?

(ख) दोनों ने बर्फ की बालिका कैसे बनाई? अपने शब्दों में बताओ कि पहले उन्होंने क्या किया, फिर उसके बाद क्या किया . . . और उसके बाद?

(ग) स्नेगुरका के लिए पाठ में कौन-कौन से और शब्द उपयोग में आए हैं?
जैसे कन्या, बेटी ..... आदि-आदि।

- वसंत आने पर बाकी बच्चे क्यों खुश थे? और स्नेगुरका क्यों दुखी थी?

- जंगल में स्नेगुरका को क्या हो गया?

- खबर सुनकर इवान और मरूशा पर क्या गुज़री होगी? दोनों ने क्या कहा होगा?

- **सही या गलत** का निशान लगाओ। *वसंत आने पर-*

1. कुनकुनी धूप निकल आई थी।
2. ठंड बढ़ गई थी
3. हरी दूब दिखने लगी।
4. फूल निकल आये थे।
5. बादल निकल आये थे।
6. चिड़ियों के गीत सुनाई देते थे।

● अगली ठंड में क्या स्नेगुरका फिर से वापस लौटेगी?

- अगर हमें एक छोटी-सी लड़की बनानी हो तो हम किन-किन चीज़ों की बना सकते हैं?
मिट्टी, बांस, टटेरा, तीलियां, कागज़ . .

- नीचे मैंने स्नेगुरका की कहानी दी है। ध्यान से देखो।

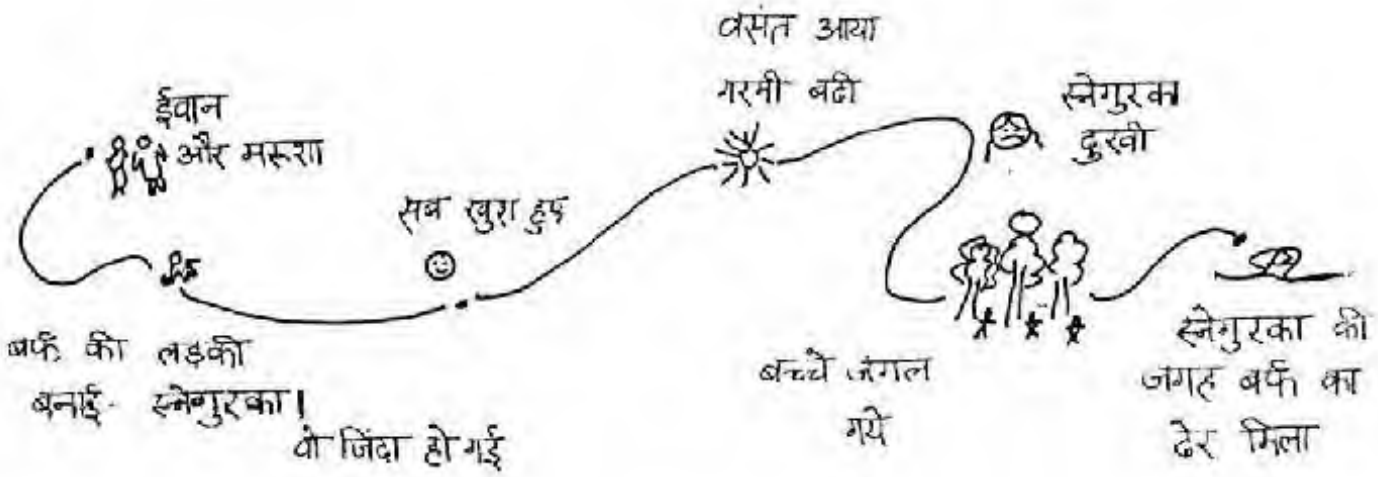

अब अगली कहानी नीचे के चित्र को देखकर तुम बनाओ।

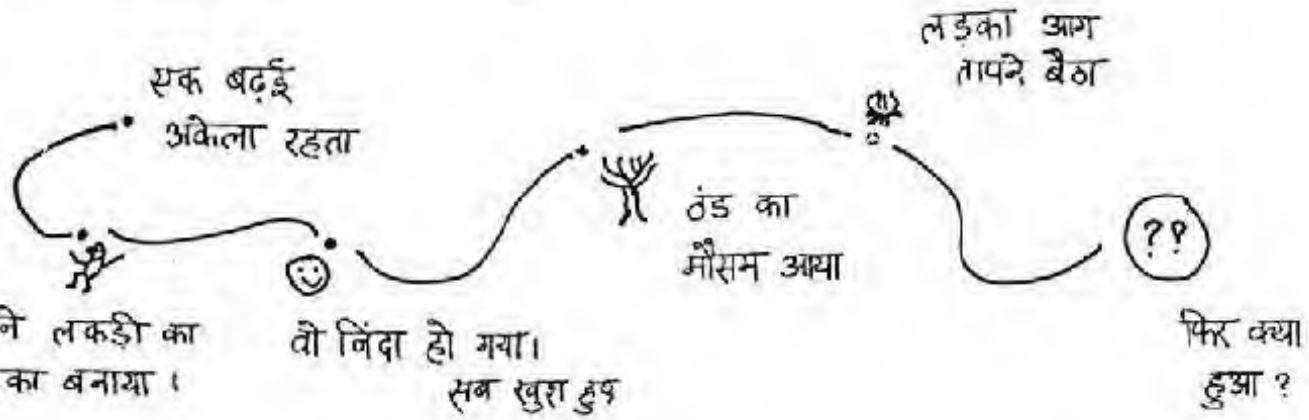

- नीचे तीन बच्चों की बनाई हुई मिट्टी की स्नेगुरका हैं। बताओ इनमें सबसे लम्बी कौन है? सबसे चौड़ा सिर किसका है? स्केल से नाप कर पता करो।

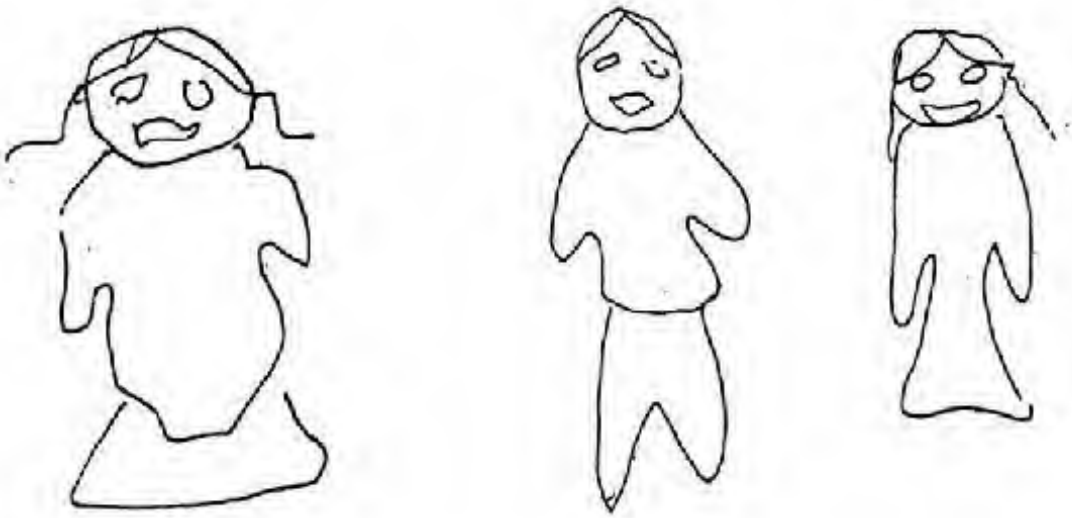

- **बूझो मैं कौन** (सारे उत्तर कहानी में ही हैं) -

1. ठंडी, सफेद, मुलायम रूई जैसी हूं मैं –
2. छोटे हाथ, नन्हें पांव, नीली आंखें और गुलाबी होंठ –
3. कुनकुनी धूप, चहकते पक्षी, सुंदर फूल –

अपने मन से ढेर सारी ऐसी और पहेलियां बनाओ और एक दूसरे से पूछो।

- अगर स्नेगुरका मिट्टी की बनी होती तो उसे किस चीज़ से बचना पड़ता?
  और अगर कांच की बनी होती तो. . . . और अगर कपड़े की होती तो: . . . .

उल्लू की बोली

आफन्ती अक्सर कहता रहता था कि वह पक्षियों की बोलियाँ समझ सकता है। यह बात बादशाह के कानों में पड़ी तो उसने आफन्ती को अपने साथ शिकार खेलने बुला लिया।

चलते-चलते वे एक गुफा के सामने जा पहुँचे, जो बुरी तरह ढह चुकी थी। उसके खण्डहरों पर एक उल्लू बैठा हुआ था। उल्लू की आवाज सुनकर बादशाह ने पूछा : "आफन्ती! यह उल्लू क्या कह रहा है?"

"जहाँपनाह, यह कह रहा है कि अगर आपने रियाया पर जुल्म ढाना बन्द न किया तो वह दिन दूर नहीं जब आपकी सल्तनत भी इस गुफा की ही तरह खण्डहर बन जाएगी।"

कुछ दिनों बाद आफन्ती ने किसी से सोने के कुछ टुकड़े उधार लिये और अपने गधे पर सवार होकर एक बालू तट पर जा पहुँचा। वहाँ वह बड़ी संजीदगी के साथ छलनी से सोने के टुकड़ों को छानने लगा। कुछ देर बाद, बादशाह शिकार खेलता हुआ वहाँ से गुजरा। आफन्ती की यह हरकत उसे बड़ी अजीब लगी। उसने पूछा :

"आफन्ती, तुम यह क्या कर रहे हो?"

जहाँपनाह, मैं इस वक्त सोने की बुआई में मशगूल हूँ।"

यह सुनकर बादशाह को और भी ताज्जुब हुआ। वह बोला :

"मेरे आफन्ती, यह तो बताओ, सोना बोने से तुम्हें क्या फायदा होगा?"

"क्या आपको यह भी नहीं मालूम, जहाँपनाह?" आफन्ती ने जवाब दिया, "आज सोना बो रहा हूँ और शुक्रवार को इसकी फसल काट लूँगा। पहली फसल में मुझे कम सोना जरूर मिलेगा।"

यह सुनते ही बादशाह के मुँह से लार टपकने लगी। उसने सोचा, इस बढ़िया व्यापार में वह भी साझेदार क्यों न बन जाए? वह मुस्कराता हुआ आफन्ती से बोला :

"आफन्ती भाई, तुम इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बन सकते हो? अगर सोना ही बोना चाहते हो तो ज्यादा से ज्यादा बोओ। बीज के लिए सोना काफी न हो, तो मेरे महल से ले आओ। जितना चाहो, ला सकते हो। अब मैं तुम्हारा साझेदार बन गया

हूँ। फसल में से अस्सी फीसदी हिस्सा मुझे दे देना। बोलो, तैयार हो?"

"ठीक है जहाँपनाह, मुझे आपकी शर्त मंजूर है।"

दूसरे दिन आफन्ती महल से दो चिन सोना उठा लाया और एक हफ्ते बाद दस चिन सोना बादशाह को भेंट कर आया। सोने की चमचमाती सिल्लियाँ देखकर बादशाह का दिल बाँसों उछलने लगा। उसने फौरन अफसरों को हुक्म दिया कि वे शाही भण्डार में मौजूद सारा सोना बोने के लिए आफन्ती को दे दें।

घर लौटकर आफन्ती ने सारा सोना गरीबों में बाँट दिया।

एक हफ्ते बाद वह मुँह लटकाकर खाली हाथ बादशाह के पास जा पहुँचा। उसे देखते ही बादशाह खुशी से उछल पड़ा और बोला:

"तुम आ गए हो, आफन्ती? पर सोना ढोने वाली गाड़ियों का काफिला कहाँ है?"

"जहाँपनाह, क्या बताऊँ? मैं बिल्कुल बरबाद हो गया हूँ। मेरी किस्मत फूट गई है।" आफन्ती माथा पकड़कर रोता हुआ बोला। "इस बीच एक भी बूँद पानी नहीं पड़ा और सोने की सारी फसल सूख गई। फसल तो दूर रही, बीज से भी पूरी तरह हाथ धोना पड़ा।"

आफन्ती की बात सुनकर बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और गरजकर बोला :

"तुम सफेद झूठ बोल रहे हो, आफन्ती। क्या कहीं सोना भी सूख सकता है? तुम मुझे धोखा देना चाहते हो।"

"मेरी बात पर आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है, जहाँपनाह?" आफन्ती ने उत्तर दिया। "अगर आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि सोना सूख सकता है, तो इस बात पर कैसे यकीन हो गया कि सोने को ज़मीन में बोया जा सकता है और उसकी फसल काटी जा सकती है।"

बादशाह अवाक रह गया, जैसे उसके मुँह में किसी ने मिट्टी का लोंदा ठूँस दिया हो।

अभ्यास :

1. आफन्ती ने राजा का सारा सोना लेकर लोगों में क्यों बांट दिया?
2. आफन्ती के किस्से पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में आफन्ती का क्या चित्र बनता है? वह कैसा आदमी है? उसके बारे में 5-10 वाक्य लिखो।
3. कहानी पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में राजा के व्यक्तित्व का क्या चित्र उभरता है? क्या वह अकलमंद है या बुद्धू है? अपनी प्रजा की देखभाल करता है या नहीं?

4. इन मुहावरों के अर्थ लिखो और उनसे वाक्य बनाओ - दिल बाँसों उछलने लगा, खाली हाथ, खुशी से उछल पड़ा, किस्मत फूट गई, सफेद झूठ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

प्रश्न–1 पढ़ो

शब्द	शुरू में जोडा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया
वार	स	सवार	वह गधे पर सवार था।
महल	ताज	ताजमहल	आगरा में ताजमहल है।
वाक	अ	अवाक	बादशाह अवाक रह गया

(अ) अब (ना, मन, शि, जहाँ) को शब्दों के शुरू में लगाकर नए शब्द बनाइये।

शब्द	जोड़ा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया।
मुमकिन	_____	_____	_____
पसंद	_____	_____	_____
पनाह	_____	_____	_____
कार	_____	_____	_____

(ब) अब (वार, दार, कर, वाला, वान,) को शब्द के अन्त में जोड़कर शब्द बनाइये।

शब्द	जोड़ा	नया शब्द बना	वाक्य बनाया।
शुक	वार	शुकवार	आज दिन शुकवार है।
साझे	_____	_____	_____
दूध	_____	_____	_____
कर्ज	_____	_____	_____
रवि	_____	_____	_____
पान	_____	_____	_____
गाड़ी	_____	_____	_____
पहल	_____	_____	_____

जो शब्द मूल शब्दों के आगे जुड़कर नये शब्द बनाते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं जैसे– शि, ना, आदि। कुछ शब्द मूल शब्दों के बाद में जुड़कर नये शब्द बनाते है उन्हें प्रत्यय कहते हैं जैसे – वार, वान,

प्रश्न–2. इस पैराग्राफ को पढ़ो।

बादशाह ने कहा " आफन्ती भाई, तुम इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बन सकते हो? अगर सोना ही बोना चाहते हो तो ज्यादा से ज्यादा बोओ। बीज के लिए सोना काफी न हो, तो मेरे महल से ले आओ। जितना चाहो, ला सकते हो। अब मैं तुम्हारा साझेदार बन गया हूँ।

अब इन शब्दों के मतलब लिखो।

शब्द	मतलब	शब्द	मतलब
साझेदार	_____	बादशाह	_____
अमीर	_____	ज्यादा	_____
काफी	_____	महल	_____

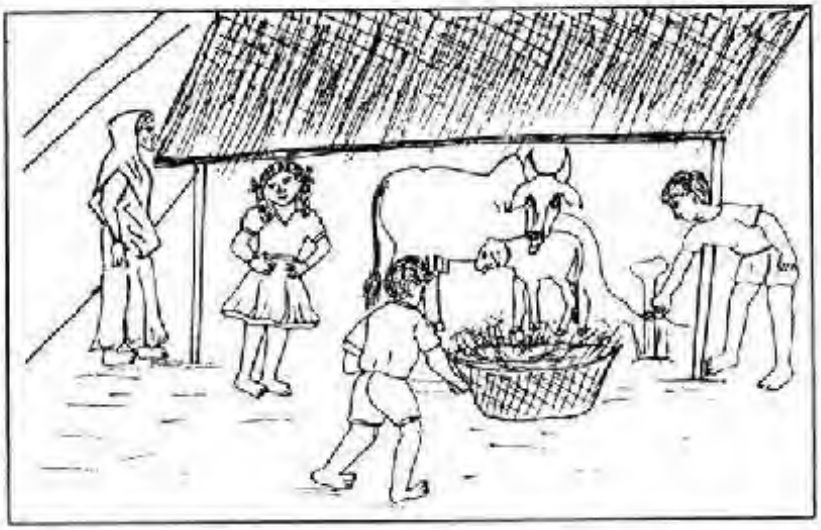

बचपन

बात उतनी ही पुरानी है जितना बचपन। बचपन की छुट्टियों के दिनों की बात है। इधर छुट्टियां शुरू होतीं, उधर नानी के घर जाने की तैयारी होने लगती। मां शर्त रखती। पहले स्कूल का काम खत्म करो फिर नानी के घर की बात। हमारे बचपन में न स्कूल का बस्ता इतना भारी था और न ही ढेर सारा होमवर्क (स्कूल का काम)। सो कुछ ही दिनों में काम खत्म हो जाता और हम लोग नानी के घर के लिए चल पड़ते।

स्टेशन की चहल-पहल में भी गाड़ी की खिड़की वाली सीट घेरना कोई न भूलता था। बार-बार झांक कर सिग्नल और गार्ड की झंडी का हिसाब रखा जाता। इधर गाड़ी चलती और उधर भूख लग आती। छीना-झपटी भी होती और लेना-देना भी। मोड़ों पर इंजन और सारी गाड़ी को देखने की ललक में कई बार आँखें धुंएं और धूल-मिट्टी से भर जातीं। डांट पड़ती। मल-मसल कर, पानी के छींटे देकर धूल-मिट्टी निकाली जाती और फिर वही सब नए सिरे से शुरू हो जाता।

दिल्ली से चलते ही अमृतसर से पहले वाले स्टेशन का इंतज़ार शुरू हो जाता। गाड़ी रुके तो, और न रुके तो, हर स्टेशन का नाम ज़ोर-ज़ोर से बताने का अपना ही मज़ा था। गाड़ी रात की हो या दिन की, इस कार्यक्रम में कोई तबदीली न आती। हां, रात में कभी कभी आँख झपक ज़रूर जाती।

अमृतसर के स्टेशन पर नाना, मामा या मौसी आए होते। गाड़ी के प्लटफार्म पर रुकने से पहले ही हम उन लोगों को चिल्ला-चिल्ला कर पुकारते। स्टेशन से घर काफी दूर था। पर बातों में रास्ते का पता ही नहीं लगता था। घर पहुंचते ही पहला काम होता था – भैंस या गाय और उनके बच्चों को देखना। नानी के घर में हमेशा गाय या भैंस या दोनों ही होतीं थीं। एक बार की याद है, जब कोई भी जानवर नहीं था तो पिछली छुट्टियों वाला मज़ा नहीं आया था।

गाय-भैंस के बाद नानी का नंबर आता और फिर नानी आगे और हम पीछे। नानी हमें बहुत अच्छी लगती थीं। एक तो वह डांटती कभी नहीं थीं और दूसरा, पढ़ने के लिए भी नहीं कहती थीं। उनका विश्वास था कि ज़्यादा पढ़ने से आंखें खराब हो जाती हैं। तीसरी और असली बात थी – वह बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दिया करती थीं। बचपन में डांट न पड़े, पढ़ने को न कहा जाए और खाने से रोका न जाए – इस से अच्छी कोई बात हो सकती है क्या?

काम क्या है और नानी कितना करती थीं इसकी तब न समझ थी और न अहसास। आज सोचता हूं तो हैरानी होती है। अकेली जान और इतना ढेर-सा काम। नानी का दिन तारों की छांव में शुरू होता था। जब तक हम उठते, तब

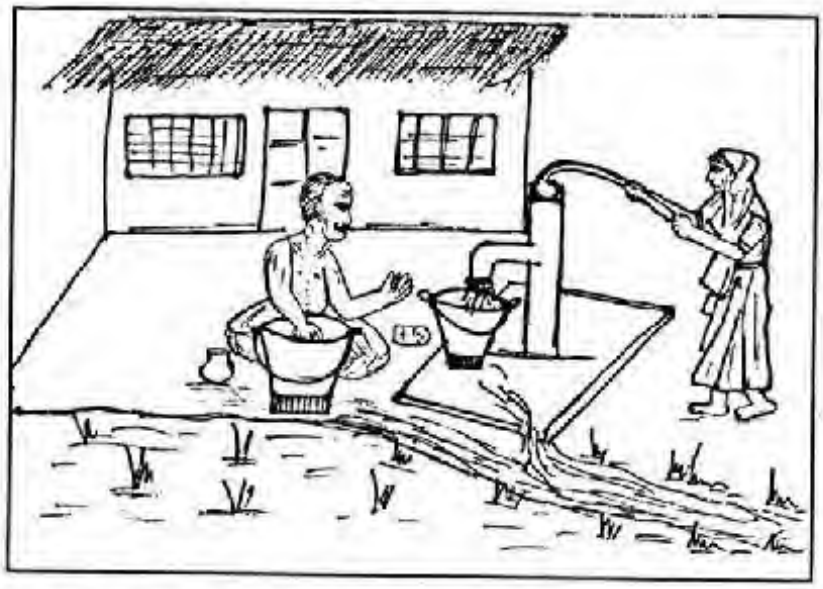

तक दही बिलो कर मक्खन निकाल रही होती थीं। इस समय तक घर की सफाई कर चुकी होतीं। भैंस का खाना - पीना भी। ग्वाला दूध दुहकर जा चुका होता और अगर कभी वह न आता तो दूध भी नानी को ही दुहना पड़ता।

इन सब कामों के साथ-साथ, नाना को नहला-धुला कर मंदिर रवाना करके वह दही बिलोना शुरू करतीं। नाना को नहलाना-धुलाना कुछ अटपटा सा लगता है पर बात सही है। वह हैंडपंप चलातीं और नाना नहाते। नाना के कपड़े वगैरह भी नानी ही धोतीं और यदि नानी कुछ और कर रही होतीं तो नाना घर को सिर पर उठा लेते।

ताज़े मक्खन के साथ बासी रोटी का नाश्ता मेरा मनपसंद खाना था। खाने के बाद हम लोग खेलने के लिए निकल जाते और नानी खाने की तैयारी और दूसरे लोगों के नाश्ते इत्यादि में जुट जातीं। नानी के घर दोपहर के खाने में सब्ज़ी बनती थी और दाल रात को।

खाने के बाद दिन में वह या तो चर्खे पर सूत काततीं या छोटे से लकड़ी के खड्डे पर परान्दे या निवाड़, नाले (नाड़े) बुनतीं। शाम को फिर भैंस को खिलाना-पिलाना, दूध दुहना और दूसरे कामों के अलावा खाने की तैयारी। दाल तो वह सारी शाम उपलों की हल्की-हल्की आंच पर उबलने के लिए रख देतीं थीं। उस दाल की मिठास और ज़ायके का अंदाज़ा बिना खाए करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। रात के खाने के बाद सब लोगों को दूध पिला कर सुलाना भी नानी की ही ज़िम्मेदारी थी।

इन सब कामों के अलावा नानी अचार-मुरब्बे भी बनाती थीं। दालें, मसाले छान-बीन कर बर्तनों में भरकर रखना भी वही करती थीं। कभी-कभी जब सब लोगों का तंदूरी परांठे खाने का मन होता तो वे नानी से कहते। और नानी भरी दोपहर में तंदूर गरम करके परांठे बनातीं थीं। उस समय उनका चेहरा तंदूर जैसा ही चमचमाया होता। हम बच्चे ऊपर की तीसरी मंज़िल से नीचे ठंडी ड्योढ़ी में गर्मागर्म परांठे पहुंचाने का काम करते थे।

यह बताना ज़रूरी है कि अमृतसर में हमारी नानी का मकान भी, और मकानों की तरह, तीन मंज़िला ही था। ड्योढ़ी नीचे और रसोई आमतौर पर दूसरी मंज़िल पर होती थी। सर्दियों में तो हम लोग ऊपर ही खाना खाते पर गर्मी के दिनों में दोपहर का खाना नीचे ठंडी ड्योढ़ी में ही खाया जाता।

नानी को दिन में आराम करते या बिना काम करते कभी देखा हो, मुझे याद नहीं। काम और काम। नानी जैसे काम के ही लिए बनीं थीं।

छुट्टियां कब खत्म हो जातीं पता ही नहीं लगता था। वापिस आने का मन नहीं होता था पर फिर भी आना तो पड़ता ही था। और फिर अगले साल की छुट्टियों का इंतज़ार शुरू हो जाता।

अभ्यास

1. नानी रोज़ कौन-कौन से काम करती थी? (पहले क्या फिर क्या ....) । कौन से काम थे जो वे कभी-कभी करती थीं? तुम्हारे घर में यदि कोई बुज़ुर्ग महिला है (नानी, दादी..) तो उनके दिन भर के काम के बारे में लिखो।

2. नानी को रसोई में दही बिलोते हुए कल्पना करो- इसका चित्र बनाओ।

3. इन शब्दों के लिए दूसरे शब्द लिखो-
नामुमकिन, तब्दीली, ललक, अटपटा, ज़ायका, ड्योढ़ी, बिलोना।

4. तुम कभी रेलगाड़ी/ बस में घूमे हो?
कहाँ से कहाँ तक?
रास्ते में कौन-कौन से स्टेशन/ शहर/ गाँव आए थे?

5. तुम गर्मी की छुट्टियों में क्या–क्या करते हो? लिखो-
क्या किसी दूसरे गांव/ शहर जाते हो? कहां जाते हो और वहां क्या-क्या करते हो? यहाँ रहते हो तो क्या करते हो? 15-20 वाक्यों में लिखो।
लिखने के बाद सबको पढ़कर सुनाओ।

6. (क) कहानी में बहुत सी-जगह है जहां दो शब्दों के बीच एक छोटी सी '-' है। उन्हें ढूंढ कर लिखो।
सभी से एक-एक वाक्य बनाओ।
उदाहरण: धूल-मिट्टी- मंगल जब पूरे दिन के सफर के बाद घर लौटता है, तो वह धूल-मिट्टी में सना होता है।

(ख) इसमें जो दोनों शब्दों का जोड़ा है उसमें दोनों शब्द अलग-अलग हैं- धूल और मिट्टी।
दोनों शब्द एक से भी हो सकते हैं - ज़ोर- ज़ोर;
तुकबन्दी वाले भी हो सकते हैं- चहल- पहल आदि।

तुमने जो जोड़े ढूँढ़े हैं, क्या उन्हें इन तीन तरह के जोड़ों में बांट सकते हो-

जोड़े के दोनों शब्द एक से	दोनों शब्द अलग	दोनों शब्दों में तुकबन्दी

(ग) यदि हम कुछ शब्दों के जोड़े में दूसरा शब्द बदल दें तो उनका अर्थ कैसे बदलेगा?

(i) कभी-कभी की जगह कभी-कभार?

(ii) ज़ोर-ज़ोर की जगह ज़ोर-जबरदस्ती?

(iii) हल्की-हल्की की जगह हल्की-फुल्की?

(iv) छान-बीन की जगह छान-छान?

- कहानी में छान-बीन का क्या अर्थ है देखो।
  अब यह वाक्य ध्यान से पढ़ो।

(1) कल रात डॉक्टर साहब के यहां चोरी हो गई। पुलिस चोर की छान-बीन में लगी है। दोनों जगह छान-बीन का अर्थ क्या एक ही है?

7. नीचे दिये वाक्यों का उदाहरण देखो। जिन शब्दों के नीचे लाईन खिची है उन से ऐसा ही एक-एक वाक्य और बनाओ।

(क) इधर छुट्टियाँ शुरू होतीं, उधर नानी के घर जाने की तैयारी होने लगती।
तुम्हारा वाक्य :

(ख) पहले स्कूल का काम खत्म करो फिर नानी के घर के बात।
तुम्हारा वाक्य :

(ग) यदि नानी कुछ और कह रही होती तो नाना घर को सिर पर उठा लेते।
तुम्हारा वाक्य :

(घ) वापस आने का मन नहीं होता था पर फिर भी आना तो पड़ता ही था।
तुम्हारा वाक्य :

बिना नाम की नदी

मेरे गांव को चीरती हुई
पहले आदमी से बहुत पहले से
चुपचाप बह रही है वह पतली सी नदी
जिसका कोई नाम नहीं
तुमने कभी देखा है
कैसी लगती है बिना नाम की नदी?
कीचड़, सिवार और जलकुम्भियों से भरी
वह इसी तरह बह रही है कई सौ सालों से
एक नाम की तलाश में
मेरे गांव की नदी।
सूरज निकलने के काफी देर बाद
आती हैं भैंसें
नदी में नहाने के लिए
नदी कहीं गहरे में हिलती है पहली बार
फिर आते हैं झुम्मन मियां
हाथ में लिए बंसी और चारा
नदी में पहली बार एक चमक आती है।
जैसे नदी पहचान रही हो झुम्मन मियां को
दिन भर कितनी मछलियाँ
फंसती हैं उनकी बंसी में?

कितने झींगे, कितने सिवार
पानी से कूदकर आ जाते हैं
उनके थैले के अन्दर
कोई नहीं जानता
नदी को कौन देता है नाम
तुमने कभी सोचा है?
क्या सुबह से शाम
नदी के किनारे
नदी के लिए नाम की तलाश में
एकटक बैठे रहते हैं झुम्मन मियाँ?

● केदारनाथ सिंह

अभ्यास

● कविता में :

- नदी में क्या-क्या है?
- नदी पर भैंसे क्यों आती हैं?
- नदी पर झुम्मन मियां क्यों आते हैं?
- झुम्मन मियां नदी से क्या-क्या ले जाते हैं?
- क्या तुम्हारे गांव के पास कोई नदी है? उस नदी का क्या नाम है?

● पता करो कि तुम्हारे गांव का नाम कैसे पड़ा और कॉपी में लिखो।

● इस नदी के किसी एक समय के दृश्य को 5-10 वाक्यों में लिखो।

● नदी से तुम्हें क्या-क्या मिलता है?

● सबसे ज़्यादा पानी किस मौसम में होता है?

● नामों के बारे में :

- तुम अगर झुम्मन मियाँ होते तो इस नदी को क्या नाम देते?
- पता करो तुम्हारा और तुम्हारे साथियों के जो नाम हैं वे क्यों रखे गए थे?

निबंध लिखना

चरण–1. अपने गुरुजी के साथ मिलकर निबंध का विषय तय करो। जैसे– ' पेड़ '

चरण–2. विषय तय हो जाने पर दो मिनिट उस विषय पर सोचो और चर्चा करो जैसे– पेड़ कैसा होता है ? कहाँ होता है ? उसमें क्या–क्या होता है ? क्या लगता है ? चर्चा के आधार पर 2–3 वाक्य लिखो।

चरण–3. शिक्षक उस विषय से जुडे 5–6 शब्द दें जो निबंध की विषयवस्तु से मौलिक रूप से जुडे हों। बच्चे 4–5 वाक्य लिखें। शब्द दिए– जैसे जंगल, हरा, टहनियाँ, फूल, फल

पेड़ हरा होता है। ये पेड़ की नई टहनियां होती है। पेड़ पर फूल मिलते हैं। पेड़ पर फ़ल लगते हैं। जंगल में ढ़ेर सारे पेड होते हैं।

चरण–4 इसके बाद कुछ और शब्द दें जो ऊपर दिए गए शब्दो से संबंधित या थोड़े कल्पना शील हों इन शब्दों का उपयोग करके 3–4 वाक्य लिखें।

शब्द दिये– जैसे दोस्त, हवा, पानी, जानवर, वृक्षारोपण।

पेड हमारे दोस्त हैं। पेड़ हमें हवा देते हैं। पेड़ों के कारण पानी बरसता है। पेड़ों पर कई पक्षी रहते हैं। पेड़ों की छाँव में जानवर बैठते हैं। बरसात में वृक्षारोपण करने से पेड़ जल्दी उगते हैं।

चरण–5 शिक्षक कल्पनाशील शब्द देकर उनका उपयोग करते हुए 3–4 वाक्य लिखवाएँ

जैसे–संगीत, जीवन, प्रेम, सपना

पेड़ों से जब हवा बहती है तो संगीत जैसी लगती है। पेड़ों पर पंछी गाते हैं तो लगता है जैसे मधुर संगीत बज रहा हो। पक्षियों का तो जीवन ही पेड़ हैं। वे पेड़ से प्रेम भी करते है। और रात दिन पेड़ों का सपना देखते हैं। अगर पेड़ न हों तो क्या होगा।

चरण–6. जिस विषय पर निबंध लिखा जा रहा है, बच्चे स्वयं वह विषय बनकर 2–3 वाक्य लिखे। "अगर मैं पेड़ होता।"

कितना अच्छा होता अगर मैं एक पेड़ होता। मैं सबको छाया देता सुन्दर फूल देता। मीठे फल देता। बच्चे मुझ पर चढ़कर लटकते और खेलते। मुझे बहुत मजा आता।

चरण–7. अब बच्चे से निबंध पढ़ने को कहें। 'पेड़'

पेड़ हरा होता है। ये पेड़ की नई टहनियाँ होती हैं। पेड़ पर फूल मिलते हैं। पेड़ पर फल लगते हैं। जंगल में ढ़ेर सारे पेड़ होते हैं।

पेड़ हमारे दोस्त हैं। पेड़ हमें हवा देते हैं। पेड़ों के कारण पानी बरसाता है। पेड़ों पर कई पक्षी रहते हैं। पेड़ों की छाँव में जानवर बैठते हैं। बरसात में वृक्षारोपण करने से पेड़ जल्दी उगते हैं। पेड़ों से जब हवा बहती है तो संगीत जैसी लगती है। पेड़ों पर पछी गाते हैं तो लगता है जैसे मधुर संगीत बज रहा हो। पक्षियों का तो जीवन ही पेड़ है। वे पेड़ से प्रेम भी करते है। और रात दिन पेडों का सपना देखते हैं। अगर पेड न हो तो क्या होगा।

कितना अच्छा होता अगर मैं एक पेड होता। मैं सबको छाया देता, सुन्दर फूल देता। मीठे फल देता। बच्चे मुझ पर चढ़कर लटकते और खेलते। मुझे बहुत मजा आता।

निबंध लिखो

'नदी'

चरण–1 नदी पर पांच वाक्य लिखो।

चरण–2. उद्गम, संगम, किनारे बसे नगर, नदी का नाम, स्नान पर एक–एक वाक्य लिखो

चरण–3. मां, संगीत, आनंद, जीवन, आकाश पर एक–एक वाक्य लिखो।

चरण–4. मैं एक नदी हूँ समझकर पांच वाक्य लिखो।

चरण–5. अब जो लिखा पूरा पढ़कर सुना दो।

शब्द भण्डार

बच्चों को दो समूहों में बॉटकर बच्चों से कहें। आओ शब्द खोजें।

समूह	शब्द
कपड़ा समूह–	10
फसल समूह	10
जंगल समूह	10
खाने की चीजों का समूह	10
फल समूह	5
फूल	5

1. बच्चे शब्द लिखें। शब्द के अंत में क्या आ रहा है। पूछें अ, ई, इ, आ
2. उनसे मतलब पूछें। 3. और उनसे वाक्य बनाओ।

प्रश्न– पैराग्राफ को पढ़कर उस पर चित्र बनाओ।

दिनेश ने अपने घर में नारियल का पेड़ लगाया। कुछ दिन बाद नारियल का पेड़ बहुत बड़ा होगया। उसमें खूब नारियल लगे। लेकिन तोड़े कैसे, उसने एक बंदर पाला और उसे नारियल तोड़ना सीखाया। जब भी नारियल तोडना होता। बंदर को बोलता। बंदर पेड पर चढ़ता। नारियल तोड़कर नीचे फेंकता जाता। दिनेश उठाता जाता।

प्रश्न– शब्द लिखो। (रहते थे, काट दिया, गई, रहता था, फंस गई, रोहू, बिछाया, रहती थी,दोस्ती थी।)

एक तालाब के किनारे एक बगुला _____ । उसी तालाब में एक बड़ी रोहू मछली भी _____ । बगुले और रोहू के बीच बहुत गहरी _____ ___। दोनों हमेशा साथ –साथ _____ ____। एक दिन एक मछुआरे ने तालाब में अपना जाल _____ । रोहू ने अपनी नुकीली चोंच से जाल _____ _____ अब _____ आजाद हो _____।

दोहे

सीधा सादा डाकिया, जादू करे महान ;
एक ही थैले में भरे, आँसू और मुस्कान।

सुना है अपने गाँव में, रहा न अब वो नीम ;
जिसके आगे माँद थे, सारे बैद–हकीम।

बूढ़ा पीपल घाट का, बतियाए दिन–रात ;
जो भी गुज़रे पास से, सर पे रख दे हाथ।

चीखे घर के द्वार की लकड़ी हर बरसात ;
कटकर भी मरते नहीं, पेड़ों में दिन रात।

इक पलड़े में प्यार रख, दूजे में संसार ;
तोले ही से जानिए, किसमें कितना भार।

चाहे गीता बाँचिए, या पढ़िए कुर्आन ;
मेरा तेरा प्यार ही, हर पुस्तक का ज्ञान।

निदा फ़ाज़ली

प्रश्न– नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. "एक ही झोले में भरे आँसू और मुस्कान" का क्या मतलब है।
2. बूढ़े पीपल के बारे में क्या कहा गया है?
3. संसार से तुम क्या समझते है।

प्रश्न– शब्दों के अर्थ लिखो।

हकीम मुस्कान बाँचिए चीख घाट

एक पत्र की आत्मकथा

मैं एक पत्र हूँ। मैं उम्र में बहुत बड़ा नहीं हूँ। हाल ही में मेरा जन्म हुआ 18 अगस्त 1998 को। मेरा जन्म स्थल काँटावाड़ी, जिला बैतूल है। हुआ यह कि काँटावाड़ी में एक लड़की रहती है। नाम है उसका शांति। शांति चौथी की छात्रा है। शांति का एक चचेरा भाई है, रमेश। रमेश रहता है दिल्ली में। शांति और रमेश का एक दूसरे से बड़ा नियमित पत्र व्यवहार चल रहा है। पहले रमेश भोपाल में रहता था। इसलिए वह शांति से अक्सर मिलता रहता था। पर जबसे रमेश के माता-पिता दिल्ली में जा बसे उनका मिलना-जुलना बंद हो गया है। दिल्ली काँटावाड़ी से दूर उत्तर भारत में है। दिल्ली जाने के बाद रमेश को सब कुछ नया और अजीब सा लगा। पहले-पहले उसे कुछ अकेलापन भी महसूस हुआ। पर एक तरह से उसे उस नए माहौल में मज़ा भी आ रहा था। उसने दिल्ली के बारे में सारी बातें शांति को लिख डालीं और उससे घर की खबर पूछी। शांति ने फिर रमेश को एक लम्बी चिट्ठी लिखी। इस तरह उनका पत्र व्यवहार बढ़ता गया।

18 अगस्त की शाम शांति ने एक सुन्दर-सी राखी बनाई। उसने रमेश को एक पत्र लिखा और एक लिफाफे में पत्र व राखी को बंद कर दिया। इस तरह मेरा जन्म हुआ। शांति की माँ दूसरे दिन पास के एक शहर शाहपुर जाने वाली थीं। शांति ने मां से कहा कि ज़रा रमेश की चिट्ठी शाहपुर की पत्र-पेटी में डाल देना ताकि वह दिल्ली जल्दी से पहुँचे। शांति की माँ ने मुझे लेकर एक थैली में डाल दिया। रात भर मुझे बहुत उत्सुकता रही कि कल मैं कहाँ जाऊँगा और उसके बाद क्या होगा? दूसरे दिन सुबह-सुबह बैलगाड़ी में बैठकर हम शाहपुर पहुँचे। शाहपुर में काफी भीड़-भाड़ और चहल-पहल थी। मैं इसका मज़ा ले रहा था कि ढप से मैं एक काली-सी गुफा में जाकर गिर पड़ा। शांति की माँ ने मुझे पत्रपेटी में डाल दिया था। पहले तो मैं उस नई जगह से काफी परेशान हुआ। मैं पत्रों के ढेर पर जा गिरा था। दूसरे पत्रों ने मेरे लिए जगह बनाई। फिर उन्होंने मुझ पर प्रश्नों की बौछार की। तुम

कहाँ से आ रहे हो? कहाँ जा रहे हो? तुम इतने मोटे क्यों हो? तुम्हारे अंदर क्या राखी है? इनके उत्तर देते-देते मेरी बाकी पत्रों के साथ दोस्ती हो गई। मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। यही थे मेरे कपड़े। मेरे कुछ दोस्त फीके-नीले रंग के थे, कुछ एक पीले कार्ड थे, कुछ सफेद या खाकी लिफाफे पहने हुए थे, कुछ लम्बे थे, कुछ चौड़े। ऐसे ही विविध रूप थे उनके। वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे।

अब मुझे चिन्ता होने लगी। मैं दिल्ली में रमेश के घर तक कैसे पहुँचूँगा? कहीं और पहुँच गया तो? किसी को कैसे एता चलेगा कि मुझे कहाँ जाना है?

एक सफेद लिफाफा जिस पर लाल व नीली धारियाँ बनी थीं, सबसे बातें करने लगा। कहने लगा, "पता है, मुझे कैनेडा देश जाना है। रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र है। इसलिए मैं रेल या बस से नहीं, हवाई जहाज़ से कैनेडा पहुँचूँगा। सुना है जब हवाई जहाज़ नहीं बने थे, तब समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाज़ों से पत्र भेजे जाते थे।"

तभी ताला खुलने की सी आवाज़ आई। पेटी में उजाला हुआ। किसी का हाथ अन्दर आया। और हम सब पत्रों को निकाल-निकाल कर एक थैले में डालने लगा। थैले में बंद होने से पहले मैंने देख लिया कि यह खाकी वर्दी पहने हुए डाकिया है। उसने पेटी में ताला डाला और हमारे बोरे को साईकिल पर रखकर चल पड़ा। रास्ते में रुक-रुक कर उसने तीन पेटियों में से पत्र निकालकर हमारे ऊपर डाल दिया। जल्दी ही हम शाहपुर डाकघर पहुँच गए। डाकिए ने हमारे बोरे को डाकघर की मेज़ पर उलट दिया। फिर वह एक भारी ठप्पे से हम पर लगे टिकट पर सील लगाने लगा- ठप ठपा ठप,.ठप ठपा ठप ठप उसके हाथ बड़ी तेज़ी से चल रहे थे। सील लगाना खत्म करके उसने हमें इकट्ठा किया और एक दूसरी मेज़ पर पटक दिया। मैंने सोचा अब कुछ देर चैन की साँस लेकर सुस्ता लूँ। पर वहाँ डाकघर के दो लोग आए और उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। इस तरह पत्रों के एक ढेर के बजाय दो ढेरियाँ बन गईं। एक बैतूल जिले की और एक ज़िले के बाहर की।

तब तक डाकघर की एक बाई दो खाकी बोरे लेकर मेज़ के पास आई और बोली ज़िले के बाहर वाली डाक आर.एम.एस. के बोरे में डाल दो और ज़िले वाली डाक बैतूल डाकघर के बोरे में।

डाकियों ने दोनों बोरों में उन दो अलग-अलग ढेरियों की डाक डाल दी। मुझे आर.एम.एस. के बोरे में डाला गया। मेरा दिल बैठा जा रहा था। "मुझे बैतूल क्यों ले जा रहे हैं? मुझे तो दिल्ली जाना है और ये आर.एम.एस. क्या बला है?" न जाने कैसे उस बोरे ने मेरे मन की बात सुन ली। मुझे सहलाते हुए बोलने लगा "दिल्ली बहुत दूर है। वहाँ तुम रेलगाड़ी से जाओगे। दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी बैतूल स्टेशन पर रुकती है, इसलिए मैं तुम्हें बैतूल आर.एम.एस. ले जा रहा हूँ। आर.एम.एस. का अर्थ है "रेलवे मेल सुविधा" - हर बड़े स्टेशन पर इसका कार्यालय है। यहाँ पर आसपास की डाक इकट्ठी की जाती है और दिशावार छाँटी जाती है। दक्षिण भारत की डाक (चिट्ठियाँ, पार्सल आदि) दक्षिण की ओर जाने वाली ट्रेन में, उत्तर की चिट्ठियाँ उत्तर की ओर जाने वाली ट्रेन में भेज दी जाती हैं। तुम डरो नहीं हम तुम्हें सही ठिकाने पर पहुँचा देंगे।" मुझे बोरे की बात से तसल्ली हुई। उसकी बात खत्म भी नहीं हो पाई थी कि किसी ने हमें ताँगे में डाल दिया। मैंने बोरे से ही पूछा "क्या हम ताँगे से बैतूल जाएँगे?" वह बोला

"नहीं। ताँगे से हम बस स्टैण्ड तक जा रहे हैं। जिस बस से हमें शाहपुर से बैतूल जाना है उसका समय हो गया है।" बस स्टैण्ड पर हमें बस में पटक दिया गया। हम कब बैतूल पहुँचे, मुझे पता ही नहीं चला।

एकदम से किसी ने बोरे का मुँह खोला और बाहर की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं। एक डाकिये ने सारे पत्र बाहर मेज़ पर उलट दिये। 4, 5 लोग फुर्ती से आए और फिर शुरु हुई छँटाई। मैं ढेर के ऊपर की ओर था। मैंने जल्दी से अपने आस-पास नज़र दौड़ाई- एक बहुत बड़े कमरे में खूब सारे लोग थे- अलग-अलग मेज़ों पर छँटाई चल रही थी। लेकिन यह क्या? दीवार में खूब सारे छोटे-छोटे खानों वाली खुली अलमारियाँ थीं। ऐसे ही कुछ खाने आड़े में भी बने थे। हर खाने के ऊपर कुछ लिखा था। हमारे अलावा और बहुत सारे पत्र थे, बहुत सारे बन्द बोरे भी।

एक मैडम कुछ पत्र लेतीं और उन पर लिखा पता पढ़-पढ़ कर अलग खानों में डाल देतीं। मेरी बारी अब आई यह सोचकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। तभी मैडम ने मुझे एक अंधेरे से खाने में डाल दिया। उसके ऊपर लिखा था **दिल्ली।** वहाँ और भी कई सारे पत्र थे। उन सभी पर दिल्ली के पते लिखे थे। थोड़ी देर बाद एक डाकिए ने हमें निकाल कर एक बोरे में डाल कर बन्द कर दिया। बोरे में पड़े-पड़े मेरी नींद लग गई। हर थोड़ी देर में झटका पड़ता मानो बोरे को उठा कर कोई कहीं पटक रहा हो। जब मेरी नींद खुली तो ज़मीन हिल रही थी और छुक-छुक -छुक-छुक की आवाज़ आ रही थी। लगातार यह आवाज़ आती रहती थी। रेलगाड़ी को छुक-छुक गाड़ी भी कहते हैं- यह मैंने सुना था। मैं समझ गया कि मुझे बैतूल स्टेशन से दिल्ली की रेलगाड़ी में चढ़ा दिया गया है।

पूरे 18 घंटे चलने के बाद हम दिल्ली स्टेशन पहुँचे। गाड़ी से निकाल कर हमें एक लाल रंग की छोटी बस में लाद दिया गया। इस तरह मैं दिल्ली के बड़े डाकघर पहुँचा। वहाँ के डाकिये ने मुझे अपनी थैली में डाल दिया और हम सायकिल पर निकल पड़े। हर जगह मेरी मुलाकात नए पत्र मित्रों से होती और मेरे पुराने साथी छूटते रहते। डाकिये ने मुझे किसी के घर के दरवाज़े के नीचे से अंदर सरका दिया। थोड़ी देर बाद रमेश की माँ बाहर से घर आई तो उन्होंने मुझे उठाकर मेज़ पर रख दिया। शाम को जब रमेश घर लौटा तो मुझे पाकर वह बहुत खुश हुआ। राखी के दिन रमेश ने शान्ति द्वारा भेजी गई राखी बांधी और मुझे उठाकर और पत्रों के साथ एक अलमारी में रख दिया। यहीं अब मैं एक आराम की ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।

- *तुम्हारे घर में कहाँ-कहाँ से पत्र आते हैं- पता लगाओ।*
- *यदि कोई पत्र तुम्हारे गांव से नागपुर जाना है तो वो कैसे-कैसे जाएगा- पास के डाकघर या डाकिये से पता लगाकर लिखो।*

अभ्यास के प्रश्न :

1. पत्र कब, कहाँ, किस के द्वारा और किसको लिखा गया?
2. क्रम में जमाओ। वाक्य आगे पीछे हो गए हैं। पत्र पहले कहां पहुँचा, फिर कहां, फिर कहां से दिल्ली

1. कांटावड़ी से शाहपुर	2. रेलगाड़ी से दिल्ली
3. बस से बैतूल	4. छंटाई का कार्य
5. बंडल बंधे शाहपुर में	6. दिल्ली में डाकिए द्वारा रमेश के घर में

3. अपने मित्र को अपनी छुट्टियों के बारे में पत्र लिखो।
4. किन-किन साधनों से डाक पत्र पेटी से डाक घर, डाक घर से स्टेशन, स्टेशन से बड़े शहर पहुंचती है? इनके चित्र बनाओ।
5. पत्तों की छंटाई कहाँ-कहाँ और कैसे हुई? 4 - 5 वाक्यों में लिखो।
6. पत्र की इस यात्रा का विवरण संक्षेप में कापी में लिखो (10- 15 लाईन में)
7. मनीआर्डर क्या है? क्या तुमने कभी मनीआर्डर का फार्म देखा है? इस पर कक्षा में बातचीत करो।
8. ज़रूरी संदेश जल्दी भेजने के लिए हम क्या करते हैं? क्या तुमने कभी तार भेजा है? इसके बारे में कक्षा में चर्चा करो। तुम अपनी कापी में 2 - 3 वाक्यों के तार का एक संदेश लिखो।
9. खाली जगह भरो -

लिफाफा	लिफाफों
पेटी	----------
----------	पत्रों
कबूतर	----------
----------	थैलियों

10. कल्पना करो कि तुम एक डकिया हो। डाकिये के एक दिन के सफर का वर्णन करो।

पत्र

मित्र को पत्र (मेला देखने के लिए बुलाना)

शाहपुर,
15 मई, 2000

प्रिय प्रदीप

तुमको याद होगा कि सावन के महीने में हमारे यहाँ एक मेला लगता है। यह बहुत बड़ा मेला है। इसमें दूर–दूर से लोग आते हैं। कई तरह की दुकानें आती हैं, सरकस, सिनेमा और तरह–तरह के झूले आते हैं मेला बड़ा सुन्दर होता है।

मेरी इच्छा है कि इस साल तुम मेला देखने आओ। हम लोग साथ–साथ मेला देखने चलेंगे। हमारे साथ दीदी, भैया और मेरे दोस्त भी चलेंगे। तुम जरूर आना।

माँ व बाबूजी को प्रणाम। दीदी, भैया और तुम सबको नमस्ते।

तुम्हारा
रवि

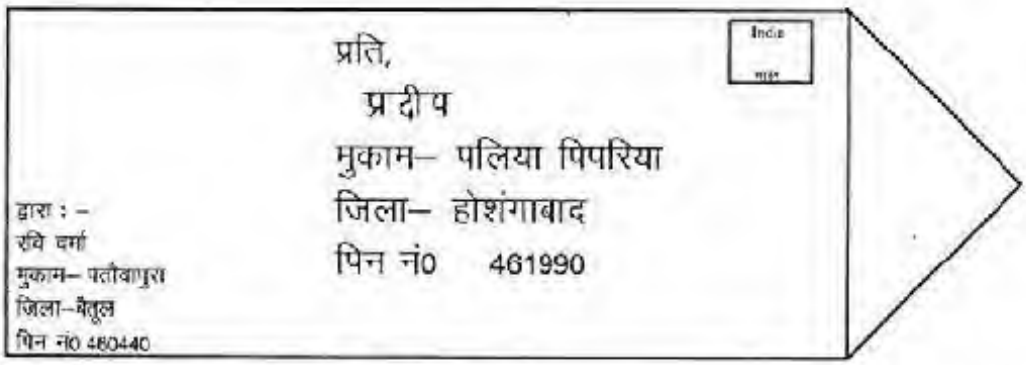

उपर लिखे पत्र को ध्यान से पढ़ो और बताओ।

1. पत्र के दाएँ हिस्से पर सबसे ऊपर क्या लिखा है।
2. इसके बाद क्या लिखा है।
   इसके बाद पत्र शुरू होता है।
3. पत्र में क्या–क्या बातें हैं।
4. अंतिम पैराग्राफ में क्या लिखा है।
5. अंत में नीचे दाहिनी ओर क्या लिखा है।
6. पता कहाँ और कैसे लिखा है।
7. भेजने वाले का पता कहाँ लिखा है।

अब एक पत्र में क्या क्या बातें होना जरूरी हैं, यह सोचकर अपने मन से कोई पत्र लिखो।

एक पत्र / आवेदन पत्र अपने प्रधानाध्यापक को छुट्टी के लिए लिखो।

दिनांक 06.07.2000

प्रधानाध्यापक,
नवीन प्राथमिक शाला
शाहपुर।

विषय : एक दिन की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

मैं यह बताना चाहता हूँ कि मै एक दिन के लिए अपने माता पिता के साथ जबलपुर जा रहा हूँ। इसलिए मैं दिनांक 6.7.2000 को स्कूल में नहीं आ पाऊँगा।
अतः आप मेही एक दिन की छुट्टी स्वीकृत करने का कष्ट करें।

धन्यवाद सहित।

आपका प्रिय छात्र/छात्रा

नाम – प्रेमलाल मालवीय
कक्षा – 5वी
नवीन प्रा.शा.शाहपुर।

दिनांक 7.5.2000

एक अच्छे पत्र को लिखने के लिए नीचे लिखे सभी बिन्दुओं का समावेश होना जरूरी है।

1. पत्र के दाएँ हिस्से पर सबसे ऊपर क्या लिखा है। दिनांक
2. इसके बाद बाएँ हिस्से पर क्या लिखा है। प्रधानाध्यापक, स्कूल का नाम
3. संबोधन। महोदय,
4. पत्र का विषय क्या है। एक दिन की छुटटी के लिए आवेदन पत्र
5. पत्र की विषय वस्तु क्या है। (वर्णन) हेमराज अपने माता–पिता के साथ घूमने जबलपुर जा रहा है इसलिए वह स्कूल में एक दिन की छुट्टी स्वीकृत करने की बात कह रहा है।
6. भावना के शब्द क्या हैं। धन्यवाद सहित।

नीचे लिखे शब्दों को खाली स्थान में भरो।

शाहपुर, 4/10/2000, प्रणाम, पास हो चुका हूँ, मैं प्रवेश लेना चाहता हूँ। 200 रू. रूपये भेजे, उरू मालवीय

पत्र

स्थान _____

दिनांक _____

आदरणीय बाबूजी,

_____

मैं इस वर्ष कक्षा 5 वीं की परीक्षा _____ ____ _____ ____

अब मैं आगे की पढाई हेतु कक्षा छटवीं ____ _____ ____ _____ _____।

इसके लिए मुझे _____ ____ की जरूरत होगी। कृपया आप रूपए भेज दें।

सभी को प्रणाम।

आपका सुपुत्र

_____

_____

मित्र को पत्र

प्रेय मित्र रमेश,

स्थान – उज्जैन

दिनांक 17.9.2000

नमस्ते।

मैं यहाँ कुशलता पूर्वक हूँ। आशा है आप भी सपरिवार कुशलपूर्वक होंगे। मैं शाहपुर में कक्षा 5 वीं की परीक्षा देने आया हूँ। मेरे तीन पेपर अच्छे गए हैं। आशा है मैं उनमें पास हो जाऊँगा। कल आखिरी पेपर देकर मैं तुमसे मिलने भौंरा आ रहा हूँ । तुम शाम 5 बजे बस–स्टैंड पर जरूर मिलना। फिर हम घूमने चलेंगे।

	टिकट
	पता रमेश राठी मु. भौरा पोस्ट भौंरा तह. शाहपुर, जि.बैतूल
पिन	कोड

आपका मित्र

कैलाश

बाबाजी का भोग

रामधन अहीर के द्वार पर एक साधु आकर बोला - "बच्चा तेरा कल्याण हो, कुछ साधु पर श्रद्धा कर।"

रामधन ने जा कर स्त्री से कहा - "साधु द्वार पर आए हैं, उन्हें कुछ दे दे। "

स्त्री बर्तन मांज रही थी, और इस घोर चिंता में मग्न थी कि आज भोजन क्या बनेगा, घर में अनाज का एक दाना भी न था। बैसाख का महीना था। किन्तु यहाँ दोपहर ही को अंधकार छा गया था। उपज सारी की सारी खलिहान से उठ गयी। आधी महाजन ने ले ली, आधी ज़मींदार के प्यादों ने वसूल की, भूसा बेचा तो बैल के व्यापारी से गला छूटा, बस थोड़ी-सी गाँठ अपने हिस्से में आयी। उसी को पीट-पीटकर एक मन-भर दाना निकाला था। किसी तरह चैत का महीना पार हुआ। अब आगे क्या होगा। क्या बैल खाएंगे, क्या घर के प्राणी खाएंगे, यह ईश्वर ही जाने। पर द्वार पर साधु आ गया है, उसे निराश कैसे लौटाएं, अपने दिल में क्या कहेगा।

स्त्री ने कहा - "क्या दूं? कुछ तो रहा नहीं"

रामधन - "जा, देख तो मटके में, कुछ आटा-वाटा मिल जाए तो ले आ।"

स्त्री ने कहा - "मटका झाड़-पोंछ कर तो कल ही चूल्हा जला था। क्या उसमें बरकत होगी?"

रामधन - "तो मुझसे तो यह न कहा जाएगा कि बाबा घर में कुछ नहीं है। किसी के घर से मांग ला।"

स्त्री - "जिससे लिया उसे देने की नौबत नहीं आयी, अब और किस मुँह से माँगू?"

रामधन - "देवताओं के लिए कुछ अँगौवा निकाला है न वही ला, दे आऊँ।"

स्त्री - "देवताओं की पूजा कहाँ से होगी?"

रामधन - "देवता माँगने तो नहीं आते? समाई होगी करना, न समाई हो न करना।"

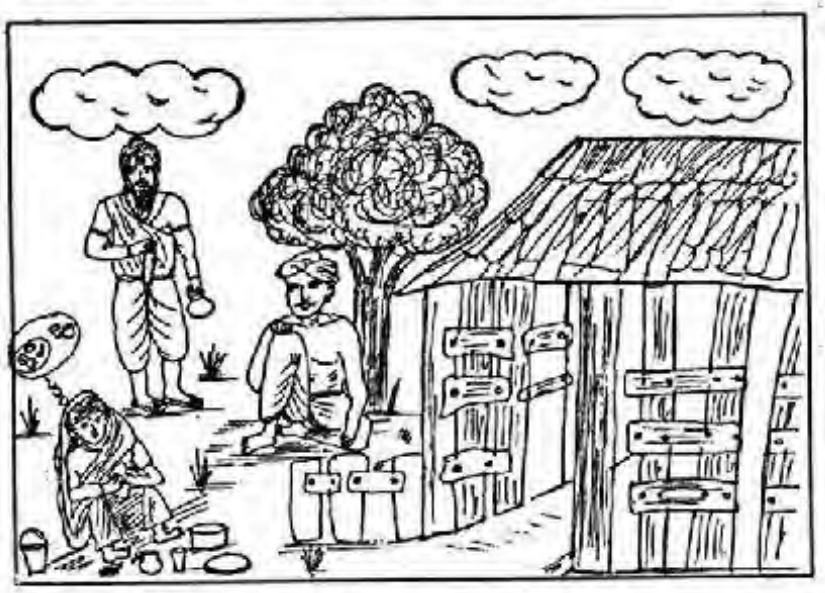

स्त्री - "अरे तो कुछ अंगौवा भी पंसेरी दो पंसेरी है? बहुत होगा तो आध सेर। इसके बाद क्या फिर कोई साधु न आएगा? उसे तो जवाब देना पड़ेगा।"

रामधन - "यह बला तो टलेगी, फिर देखी जाएगी।"

स्त्री झुंझलाकर उठी और एक छोटी-सी हांडी उठा लायी, जिसमें मुश्किल से आधा सेर आटा था। वह गेहूँ का आटा बड़े यत्न से देवताओं के लिए रखा हुआ था। रामधन कुछ देर खड़ा सोचता रहा, तब आटा एक

कटोरे में रख कर बाहर आया और साधु की झोली में डाल दिया।

महात्मा ने आटा लेकर कहा- "बच्चा अब तो साधु आज यहीं रमेंगे। कुछ थोड़ी-सी दाल दे, तो साधु का भोग लग जाय। "

रामधन ने फिर आ कर स्त्री से कहा। संयोग से दाल घर में थी। रामधन ने दाल, नमक, उपले जुटा दिए। फिर कुएं से पानी खींच लाया। साधु ने बड़ी विधि से बाटियां बनायीं, दाल पकायी और आलू झोली में से निकाल कर भुरता बनाया। जब सब सामग्री तैयार हो गयी, तो रामधन से बोले - "बच्चा, भगवान के भोग के लिए कौड़ी-भर घी चाहिए। रसोई पवित्र न होगी, तो भोग कैसे लगेगा?"

रामधन - "बाबाजी, घी तो घर में न होगा।"

साधु - "बच्चा, भगवान का दिया तेरे पास बहुत है। ऐसी बातें न कह।"

रामधन - "महाराज, मेरे गाय-भैंस कुछ नहीं हैं, घी कहां से होगा?"

साधु - "बच्चा, भगवान के भंडार में सब कुछ है जाकर मालकिन से कहो तो?"

रामधन ने जा कर स्त्री से कहा - "घी मांगते हैं, मांगने को भीख, पर घी बिना कौर नहीं धंसता।"

स्त्री - "तो इसी दाल में से थोड़ी ले कर बनिए के यहां से ला दो। जब सब किया है तो इतने के लिए क्यों नाराज़ करते हो?"

घी आ गया। साधुजी ने ठाकुरजी की पिंडी निकाली, घंटी बजायी और भोग लगाने बैठे। खूब तन कर खाया, फिर पेट पर हाथ फेरते हुए द्वार पर लेट गए। थाली, बटली और कड़छुली रामधन घर में मांजने के लिए उठा ले गया।

उस रात रामधन के घर रोटी नहीं पकी। खाली दाल पका कर ही पी ली।

रामधन लेटा, तो सोच रहा था - "मुझसे तो यही अच्छे।"

अभ्यास

1. रामधन की स्त्री का नाम क्या हो सकता है? उसने कैसे कपड़े पहने होंगे?
2. साधु का क्या नाम होगा? उसके कपड़ों के बारे में लिखो।
3. रामधन के खलिहान में जो भी पैदा हुआ उस सब का क्या हुआ?
4. किन वाक्यों से पता लगता है कि साधु का आना रामधन के लिए एक मुसीबत बन गया था?
5. रामधन की स्त्री साधु को खाना खिलाने के बारे में क्या सोचती है?
6. रामधन के यहां खाना खाने के लिए साधु ने क्या-क्या तरीके अपनाए।
7. रामधन ने साधु को खाना क्यों दे दिया?
8. अगर रामधन के घर साधु की जगह कोई और व्यक्ति खाना मांगने आया होता तो क्या वह उसे खाना देता?

9. अगर तुम साधु होते तो क्या करते?

10. रसोई व खाने-पीने से जुड़े कई शब्द इस कहानी में हैं। उन्हें ढूंढकर नीचे लिखो :

बर्तन, भोजन, अनाज

11. क) इस कहानी में कई शब्द ऐसे हैं जिनके बीच में छोटी-सी लाइन है जैसे- मार-मार कर आदि। शब्दों या शब्दों के हिस्सों को दोहरा कर कई नए शब्द बनते हैं। उनमें कुछ नए शब्द जोड़कर भी नए-नए शब्द बनते हैं। तुम भी कहानी में से व अपने मन से नए-नए शब्द बनाओ। उनके बदलते अर्थ के बारे में भी सोचो।

	शब्द	अर्थ
1.	मार-मार कर	खूब मार कर।
2.	रो-रो कर	
3.	चाय-वाय	चाय इत्यादि
4.	चाट-वाट	
5.	मन-भर	लगभग एक मन
6.	हल्का-सा	
7.	गाय-भैंस	
8.	झाड़-पोंछ	सफाई

ख) अपने वाक्य बनाओ :

बरकत, अँगौवा, समाई, बाटी, पिंडी, तन कर खाना, संयोग,

ग) बहुवचन बनाओ। कुछ शब्दों के बहुवचन में दो रूप हैं। इन दोनों रूपों का अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो।

एकवचन	बहुवचन	का,के, की, ने आदि से पहले आने वाले रूप
घोड़ा	घोड़े	घोड़ों
घड़ा		
मटका		
देवता	देवता	देवताओं
प्रजा		
भ्राता		
महात्मा		

● कहानी में आ (ा) में खत्म होने वाले शब्द ढूंढो। उनके बहुवचन बनाओ।

भिश्ती की बादशाही

कहते हैं कि निज़ाम नाम का एक साधारण भिश्ती कुछ देर के लिए हिन्दुस्तान का बादशाह बना था। कोई कहता है कि वह दो दिन के लिए हिन्दुस्तान के राज-सिंहासन पर बैठा था, तो कोई कहता है कि वह दो घंटे के लिए सिंहासन पर बैठा था।

आखिर ऐसा कैसे हुआ? पानी भरने का काम करने वाला एक आदमी अचानक थोड़ी देर के लिए बादशाह कैसे बन गया? क्या उसने कोई लड़ाई जीती थी? या राज्य हथियाने की साजिश की थी? नहीं। उसने सिर्फ एक डूबते हुए बादशाह की जान बचाई थी। वह बादशाह था हुमायूं।

एक बार हुमायूं की सेना पर दूसरे एक राजा ने ज़बरदस्त हमला कर दिया। हुमायूं के सैनिक जान बचाने को यहां-वहां भागे। हुमायूं खुद घबरा के दौड़ा और कर्मनासा नाम की नदी में कूद गया। उसने सोचा वह तैर के पार हो जाएगा और भाग निकलेगा। पर, नदी में बड़ी तेज़ बाढ़ थी। हुमायूं तैर नहीं पाया। वह डूबने लगा।

इतने में निज़ाम ने देखा एक आदमी डूब रहा है। उसने तुरन्त अपने मश्क में हवा भरी और नदी में कूद गया। (मश्क चमड़े के उस थैले को कहते थे जिसमें पानी भर कर जगह-जगह पहुंचाया जाता था।) निज़ाम अपना फूला हुआ मश्क लेकर हुमायूं के पास पहुंचा और मश्क का सहारा देकर हुमायूं को किनारे तक ले आया।

हुमायूं निज़ाम का बहुत एहसानमन्द था। उसने कहा, "जो मांगोगे तुम्हें दूंगा।"

तब निज़ाम ने यह मांगा कि उसे दो घंटे (या दो दिन) के लिए हिन्दुस्तान का बादशाह बना दिया जाए। ज़ुबान देकर हुमायूं मुकर नहीं पाया और उसने निज़ाम को सिंहासन पर बैठा दिया। तुम जानते होगे कि जो बादशाह बनता है वह अपने नाम से सिक्के जारी करता है। पुराने सिक्के पर उस समय के राजा रानियों के चेहरे व नाम खुदे होते थे। क्या तुमने कभी देखे हैं? खैर, तो निज़ाम ने भी बादशाह बनने पर अपने नाम से सिक्के जारी किए। पर, मज़े की बात यह कि उसने सोने, चांदी के नहीं, चमड़े के सिक्के जारी किए। आखिर चमड़े के थैले की मदद से ही तो एक बादशाह की जान बची थी।

- निज़ाम ने किसकी जान बचाई और कैसे?
- अगर तुम्हें दो दिन के लिए सरपंच बना दिया जाए तो तुम क्या करोगी?
- और अगर स्कूल के बड़े गुरूजी या बड़ी बहनजी बन जाओ, तब?

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. हुमायूं नदी में क्यों कूदा ?
2. हुमायूं किस नदी में कूदा था।
3. हुमायूं को नदी में से किसने निकाला ?
4. निजाम ने चमड़े के सिक्के ही क्यों जारी किये। सोचकर लिखो।
5. मश्क क्या है? तथा उसकी उपयोगिता क्या है?
6. जुबान देकर हुमायूं मुकर नहीं पाया। इस वाक्य का क्या मतलब है? लिखो।
7. जब भी कोई सवाल पूछा जाता है तो सवाल के अंत में (?) प्रश्नवाचक चिन्ह लगाया जाता है। इस पाठ में ऐसे चिन्ह लगे वाक्यों को छांटकर लिखो।
8. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखो।

जीत	डूबना	तेज
सहारा	आया	फूला

एक खेल खेलो–

1– इस खेल को अपने गुरूजी/बहनजी या एक या ज्यादा भी साथियों के साथ खेल सकते हो।

2– इस खेल को शुरू करने के पहले कोई एक विषय चुन लो। जैसे– नदी, पहाड़, जंगल, घर आदि में से कोई एक।

3– अब इनमें से किसी एक विषय पर उससे संबंधित कोई दस–दस शब्द सभी साथी कागज पर लिख लें।

4– जब सभी साथी शब्द लिख चुके हों तो एक–एक व्यक्ति बताता जाए कि उसने क्या लिखा। पता करो कितने ऐसे शब्द हैं जो ज्यादा लोगों ने लिखें हैं।

प्रश्न– पैराग्राफ पढ़कर वर्तनी की गल्तियाँ सुधारकर लिखो।

बहुत दीनों की बात है। एक गाव में एक कीसान रहता था। कीसान के पास दो बेल थे। बेलों के गले में एक–एक घंटी बँधी थी। कीसान बेलों से खेति करता था। किसान की पत्नि बेलों को पानि पिलाती और चारा डालती थी। दोनों बेलों को बहुत प्यार करते थे। बेल कीसान की झोपड़ी की सोभा थे।

प्रश्न– नीचे दी गई लाइनें पढ़कर वर्तनी की गल्तियाँ छांटकर सही लिखो।

मछलि जल कि रानी है। जिवन उसाका पनि है।
हाथा लगेना से डर जती है। बहर निकाली मर जाती है।

गलत	सही
मछलि	मछली

प्रश्न– नीचे लिखे शब्दों के अक्षर ढूंढकर गोला बनाओ। हर शब्द से एक वाक्य बनाओ।

लड़का
लड़के
गाय
गायें
पुस्तक
पुस्तकें
माता
माताएँ
ऋतु
ऋतुएँ
चिड़िया
चिड़ियाँ

ग ा य
म ा त ा ए ँ
ऋ त ु ए ँ
ल ड क ा
ि च ि ड य ा
प ु स् त क े ं
ग ा य े ं
ल ड क े
म ा त ा
प ु स् त क
ि च ि ड य ा ँ
ऋ त ु

वाक्य – लड़का खेलता है। ____________________
लड़के खेलते हैं। ____________________

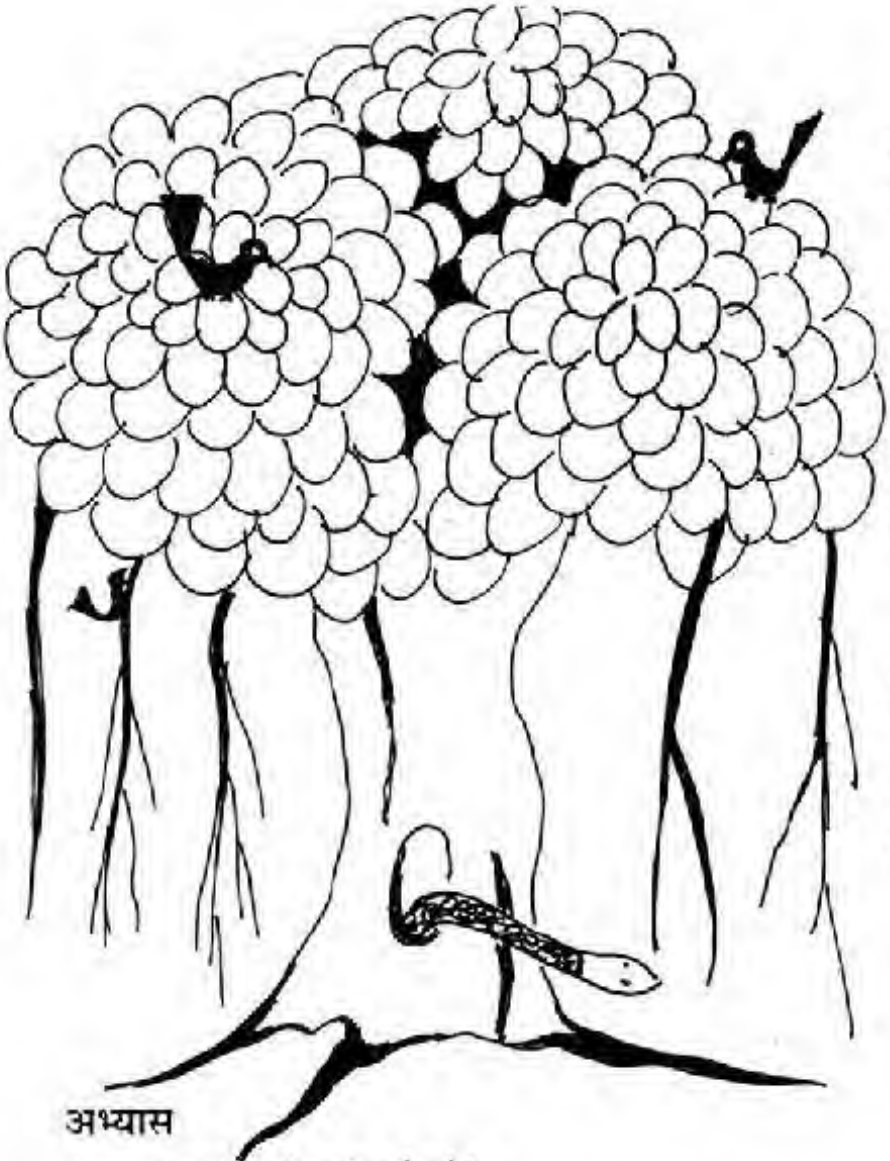

बरगद जी

दादा जी की पीढ़ी वाले बरगद जी
रहते हैं बस बैठे-ठाले बरगद जी!

कोटर में अजगर हैं, पक्षी डालों पर
पड़े हुए किन-किनको पाले बरगद जी!

हवा, पखेरू या राही की बातों को
सुनते मुंह पर डाले ताले बरगद जी!

जड़े जमाकर धरती की गहराई में
बुनते हैं डैनों के जाले बरगद जी!

हर आने-जाने वाले की आंखों में
देख रहे है आंखें डाले बरगद जी!

भगवती प्रसाद द्विवेदी

अभ्यास

1. *इस कविता के कवि कौन हैं?*
2. *बरगद जी कौन हैं? उनके बारे में कवि ने क्या-क्या कहा है?*
3. *इस बात से क्या समझ में आता है? "दादा जी की पीढ़ी वाले बरगद जी"*
4. *कवि ने बरगद की जड़ों के बारे में क्या लिखा है?*
5. *इन शब्दों का क्या मतलब है*

   बैठे- ठाले -

   मुँह पर डाले ताले - ; डैनों - ; आँखों में आँखें डाले
6. *तुमने कोई बरगद का पेड़ देखा है? उसका चित्र यहाँ बनाओ। उस पर तुम्हें कौन-कौन से पक्षी, कीड़े दिखे- उनके चित्र भी बनाओ। उसकी जड़ें कैसी हैं? उनके बारे में लिखो।*
7. *अगर यह बरगद चल सकता तो क्या-क्या करता, कहाँ जाता?*

सिंह और कुत्ता

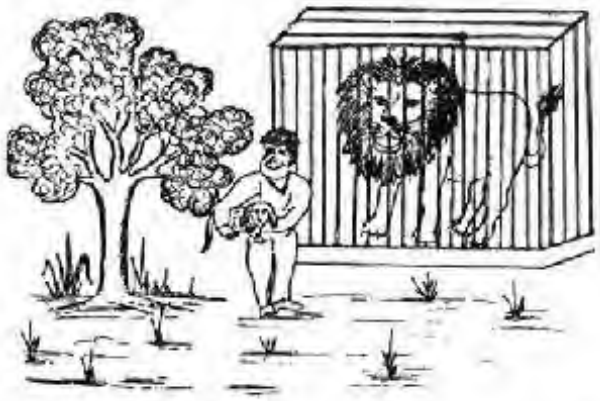

एक बार लन्दन में जंगली जानवरों का प्रदर्शन किया जा रहा था। उन्हें देखने के लिये दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियां और कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाये जाते थे।

एक आदमी का जंगली जानवर देखने को मन हुआ। उसने गली में से एक कुत्ते को पकड़ लिया और उसे लेकर जानवरों के मालिक के पास पहुंचा। इस आदमी को जानवर देखने की इजाज़त दे दी गई और कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया गया।

इस छोटे-से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। सिंह उसके पास आया और उसने कुत्ते को सूंघा।

कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुआ और अपनी पिछली टांगों के बल सिंह के सामने बैठ गया।

सिंह इस छोटे से कुत्ते को ध्यान से देखता रहा, उसने दायें-बायें अपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुआ।

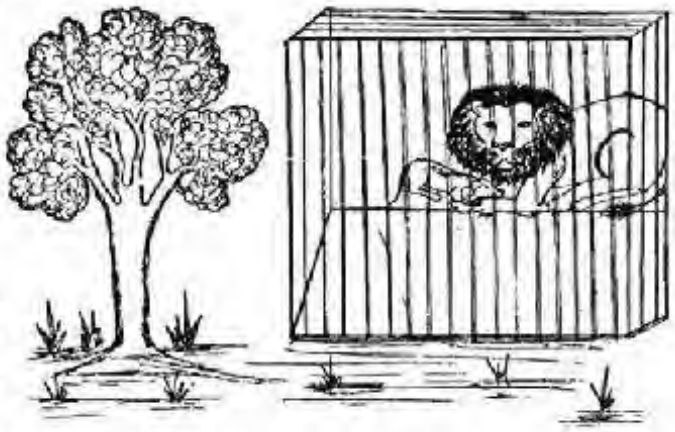

जंगली जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में मांस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काट लिया और बाकी कुत्ते के लिए छोड़ दिया।

शाम हुई तो सिंह सोने के लिये लेट गया। कुत्ता भी सिंह के करीब ही लेट गया और उसने अपना सिर सिंह के पंजों पर रख दिया।

उस दिन से यह छोटा सा कुत्ता एक ही पिंजरे में सिंह के साथ रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाई। वह मालिक द्वारा दिया जाने वाला मांस खाता, कुत्ते के साथ ही सोता और

कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।

एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने जानवरों के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है और अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाये। मालिक ने कुत्ता लौटाना चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर निकालने के लिए उसे बुलाया जाने लगा कि सिंह की गर्दन गुस्से से तन गई और वह गरजने लगा।

इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।

एक साल के बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया, कुत्ते को सूंघता, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा।

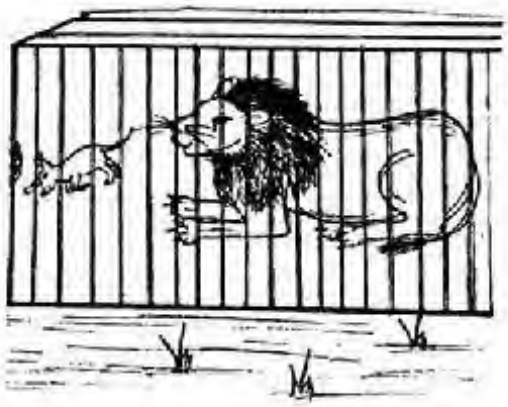

सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ, उसके अयाल तन गये, वह अपनी दुम को अगल-बगल मारने लगा, बार-बार पिंजरे की सलाखों से टकराने और फर्श को नोचने लगा।

सिंह दिन भर पिंजरे की सलाखों से इधर-उधर टकराता, छटपटाता और गरजता-तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ रहा और चुप हो गया। मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहां से हटाना चाहा, मगर सिंह ने किसी को उसके पास भी फटकने नहीं दिया।

मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुख भूल जायेगा। उसने एक जिन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन करके उसी तरह पांच दिनों तक पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।

अभ्यास

1. जानवरों का प्रदर्शन कहां हो रहा था?
2. आदमी कुत्ते को कहां से लाया और क्यों लाया?
3. शेर ने एक कुत्ते को नहीं मारा पर दूसरे को मार दिया। तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों हुआ।
4. इस कहानी का एक और नाम सोचो।
5. इन शब्दों के अर्थ लिखो और वाक्य बनाओ अयाल, आलिंगन, इजाज़त, प्रदर्शन, कभी-कभार

वाक्यों में जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची है वह शब्द किसके लिए उपयोग किये गये हैं लिखो।

1. कुत्ते को सिंह के पिंजरे में डाल दिया। सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।
2. उन्हें देखने के लिये दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे।
3. शाम हुई तो सिंह सोने के लिये लेट गया। कुत्ते ने अपना सिर उसके पंजों पर रख दिया।
4. एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया।
5. मालिक ने अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाय।
6. मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा।

जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची हुई है उन शब्दों को क्या कहते हैं। गुरूजी से पूछकर लिखो।

वाक्य में किन–किन शब्दों से काम का पता चलता है। छांटकर लिखो। जैसे– सूँघना, खाना, पीना, टकराना आदि काम हैं। ऐसे सभी कामों को किया भी कहते हैं।

इन वाक्यों में किया क्या है, लिखो।

1. गली से एक कुत्ता पकड़ लिया।
2. कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया।
3. कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

मुहावरा	अर्थ	वाक्य में प्रयोग किया
दुम दबाना	भाग जाना।	मोहन शेर को देखकर दुम दबाकर भाग गया।
गुस्से से तनना	क्रोधित होना	कुत्ते को देखकर सिंह गुस्से से तन गया।
फटकने नहीं देना		
टुकड़े–टुकड़े करना		

छोटे से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। इस वाक्य में मुहावरा क्या है, लिखो।

1. आलिंगन करना 2. दुम हिलाना 3. दुबक कर बैठना

सही शब्द चुनकर खाली स्थान में भरो। (गुस्से, कुत्ता, सिंह)

1. उसने अपना सिर _____ के पंजों पर रख दिया।
2. सिंह समझ गया कि _____ मर गया है।
3. सिंह की गर्दन _____ से तन गई।

कर्फ्यू

क्या कभी तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है कि कक्षा में जब तुम लोग बहुत शैतानी या शोरगुल मचा रहे होते हो तो मास्टरजी या बहनजी ने यह कहा हो कि सब के सब चुपचाप बैठ जाओ?

शहर या बस्ती या गांव में जब कर्फ्यू लगा दिया जाता है तो कुछ ऐसी ही स्थिति होती है। मुर्गा तो नहीं बनाते लोगों को पर सबको अपने घरों से निकलने की मनाही होती है। सिर्फ विशेष प्रयोजन से निकलने वाले कुछेक लोगों को कर्फ्यू पास दिए जाते हैं। जिनके पास ये पास होते हैं वे ही बाहर निकल सकते हैं।

दुकानदारों को दुकान बंद कर घर जाने को कह दिया जाता है। जब कर्फ्यू लगा हो तो जो लोग सड़क पर बाहर निकल जाते हैं उन्हें वापस घर जाने के लिए कहा जाता है। अगर वे ना माने तो गिरफ्तार करके जेल में भेजा जा सकता है। कर्फ्यू तब लगाते हैं जब किसी बस्ती में बहुत ज़्यादा झगड़ा हो जाता है। या फिर किसी कारणवश झगड़ा या लूटपाट होने का खतरा होता है।

मैंने बचपन में एक बस्ती के लोगों के बारे में एक कहानी सुनी थी जिन्हें कर्फ्यू का मतलब नहीं पता था। बात काफी पुरानी है। वह कहानी कुछ ऐसी थी.....

एक समय की बात है जगदीशपुर गांव में उड़ती-उड़ती खबर पहुंची कि पास के छपरा शहर में कर्फ्यू लग गया है। शाम के समय महेश चाचा के घर पर चौपाल बैठी। बलीटर चाचा मुंह से गुड़गुड़ निकालते हुए बोले - "क्यों भाई, सुना तुम लोगों ने, छपरा में कर्फ्यू लग गया है।"

"ये तो बड़ी अच्छी बात है।"

"नहीं बहुत बुरी बात है।"

नन्हा ननकू ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा - "अच्छी बात, बुरी बात, बुरी बात, अच्छी बात।"

चौपाल में बैठे और लोगों के दिमाग में भी बात साफ नहीं थी। रामशरण काका ताव में आ गए "भाई ठीक से फैसला कर लो, मैं कहता हूं कर्फ्यू बहुत बुरी चीज़ है।"

ननकू के दादा हलकू गांव में सबसे ज़्यादा उम्र के व्यक्ति थे। उन्होंने गुड़गुड़े का एक लम्बा कश लिया और बोले - "भाई नए ज़माने में नई-नई चीज़ें आ रही हैं। ये कर्फ्यू है क्या?"

इतना कहकर हल्कू काका लाठी लेकर बाड़े की तरफ भागे उनकी भैंस खूंटा तोड़कर रामअवधेश के खेत की तरफ जा रही थी।

जो लोग ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे, वे एकाएक चुप हो गए। नन्हा ननकू जो जीभ-होठ मरोड़ कर 'कर्फ्यू' बोलने की कोशिश कर रहा था बोला "करफू, करफू, करफू।"

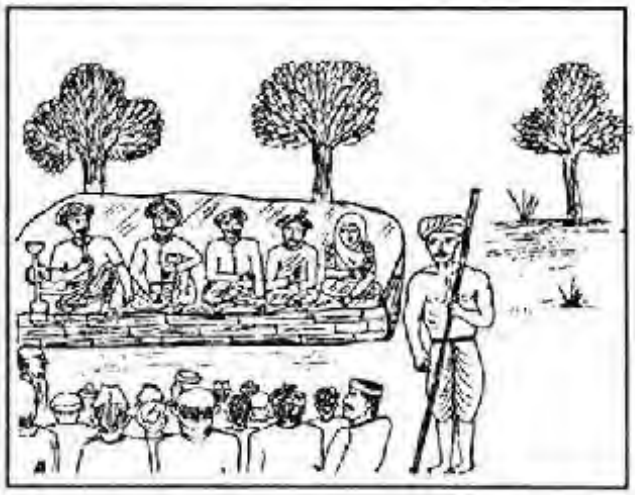

रामशरणजी जो पिछले साल ही शहर देखकर आए थे, बोले - "ये हलकू बेकार की बात बनाता है, शहर में मारकाट रोकने के लिए कर्फ्यू लगाया जाता है। हाकिम बोलता है कर्फ्यू लग जाए, तो कर्फ्यू लग जाता है और फिर बोलता है कर्फ्यू हट जाओ तो कर्फ्यू हट जाता है।"

अब तक हल्कू काका लौट आए थे। बोले- "तो क्या यह तेल जैसी कोई लगाने वाली चीज़ है? अगर ऐसा है तब तो बढ़िया चीज़ ही होगी।"

बलीटर चाचा से नहीं रहा गया बोले - "किसी को तो कुछ मालूम है नहीं, सिर्फ बकबक किए जा रहे हैं।"

ननकू के दादा बोल पड़े "मैं तो कहता हूं कि जब गांव के नज़दीक ही ऐसी चीज़ है तो क्यों न चलकर देख लें। मेरी भी बुढ़ापे की एक इच्छा पूरी हो जाए। पता नहीं फिर मेरे रहते कर्फ्यू लगे या न लगे।"

लोगों को बात जँच गई। पास के शहर में कर्फ्यू लगा है। क्यों न चलकर देख लें। तय हुआ अगली सुबह गांव से निकल लेंगे।

अगली सुबह जब लोग तैयार होकर निकलने लगे तो घर की औरतें ठान कर बैठ गईं। बोलीं - "ये क्या बात है, सिर्फ मर्द लोग ही कर्फ्यू देखने शहर जाएंगे। हम भी देखना चाहते हैं कर्फ्यू।"

अन्त में यही फैसला हुआ कि जब गांव के नज़दीक की ही बात है तो औरतों को भी कर्फ्यू दिखा ही दिया जाए।

और इस तरह करीब पच्चीस लोगों का झुंड गांव से निकल पड़ा। जैसे ही चौपाल के बाहर निकले कि दूसरी तरफ से हलकू की घरवाली पानी से भरा घड़ा लेकर आती दिखाई दी। ठीक उसी समय नन्हें ननकू ने ज़ोर की छींक मारी। सब लोग रुक गए।

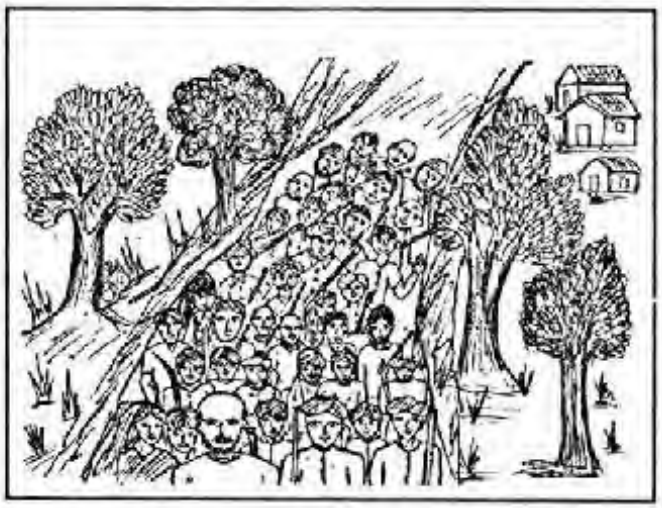

हलकू काका बोले - "पानी भरा घड़ा तो यात्रा के लिए बड़ा शुभ लक्षण है। दूसरी तरफ ननकू है तो छोटा बच्चा लेकिन छींक लगाने में अपने दादाजी को भी मात दे दी उसने। छींक तो अशुभ चीज़ होती है।"

इस पर सब चुप हो गए। ऐसे ही खड़े रहने के बाद बलीटर चाचा कुछ सोच कर बोले - "अरे भाई कर्फ्यू कहीं काट ले तो क्या करोगे।"

बात सबकी समझ में आ गई। सब लोग जल्दी-जल्दी अपने-अपने घरों से लाठी, भाला आदि ले आए।

हलकू काका बोले - "बताओ भला हम लोग असली चीज़ ले जाना ही भूल रहे थे।"

दोपहरी को जब ये काफिला शहर पहुंचा तो देखा सड़कें बिलकुल सूनी थीं। कहीं कोई बताने वाला भी नज़र नहीं आया। थोड़ा इधर-उधर घूमे तो दूर एक सिपाही दिखाई पड़ा।

ननकू के दादा चिल्लाए - "अरे ओ सिपाही भईया, ज़रा हमको बता दीजिए कि कर्फ्यू कहां लगा है।"

सिपाही मुड़ा। जब उसने इतने सारे लोगों को लाठी, भाले के साथ देखा तो मानो उसे सांप सूंघ गया। वह फौरन वहां से भाग खड़ा हुआ। उसके बाद लगातार सीटियां बजने लगीं। फिर देखते-देखते कई पुलिस वाले चारों तरफ आ जुटे।

चार दिनों के बाद सारे लोग वापस गांव पहुंचे। कर्फ्यू के बारे में इन लोगों ने बातचीत करने से मना कर दिया। कुछ महिलाओं ने ज़रूर कहा कि सबों को थाने में रखा गया था। इसी बीच फेंकनी को बेटा हुआ। फेंकनी इसी कारण से कर्फ्यू देखने नहीं जा पाई थी। बेटे का नाम रखा करफ्यू सिंह।

अभ्यास :

1. ननकू के दादा के चिल्लाने के बाद क्या हुआ?
2. गुरूजी से चर्चा करो कि कर्फ्यू क्या होता है? कब लगता है? और क्यों?
3. (क) क्या तुम भी छींकने को अशुभ मानते हो? क्यों?

   (ख) क्या घड़ा भर कर पानी लाती औरत को देखने से यात्रा शुभ हो जाती है?
4. सिपाही इन लोगों को देख कर क्यों डर गया?
5. तुमने भी नयी चीज़ों के आने पर हुई मज़ेदार घटनाएं सुनी होंगी। ऐसी एक घटना कापी में लिखो।
6. इस कहानी में कौन-कौन से मुहावरे आए हैं? उनके नीचे लाइन खींचो और उनके मतलब पता कर उनसे दो-दो वाक्य बनाओ।
7. क्या तुम किसी मेले में जाते समय अपनी छोटी बहन को ले जाते हो या ले जाओगे? क्यों ले जाओगे या क्यों नहीं ले जाओगे? इस बारे में कक्षा में चर्चा करो।
8. अर्थ पता करो और एक-एक नया वाक्य बनाओ

   प्रयोजन काफिला सांप सूंघ गया

पानी और धूप

एक भूमिका

पानी और धूप नाम की यह कविता सुभद्राकुमारी चौहान की लिखी हुई है। वे एक लेखिका थीं। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। उनकी लिखी यह कविता तुम अगले पन्ने पर पढ़ोगे।

जिस समय हमारे देश में आज़ादी की लड़ाई ज़ोरों पर चल रही थी उस समय सुभद्रा जी की देश प्रेम की रचनाएँ खूब छपा करती थीं। उनके पति लक्ष्मण सिंह भी आज़ादी की लड़ाई में शामिल होते थे। नमक सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर वे साल भर जेल में रह आए थे। उस समय उनके बच्चों को अपने पिता की याद ज़रूर आती होगी।

सुभद्रा जी के बच्चे अक्सर अपने माता–पिता को सभाओं में जाते देखते थे। घर के बाहर जो कुछ वे देखते थे, घर में उनके लिए वो खेल बन जाते थे। जैसे गरमियों की छुट्टियों में उनका एक खेल था – 'सभा का खेल'.

पिता के काम पर चले जाने के बाद उनकी मेज़ सभा मंच बन जाती थी और कमरा सभा का मैदान। आस–पड़ोस के बच्चे भी आ जाते थे। कोई गाँधी बनता, कोई नेहरू और कोई सरोजिनी नायडू बनता था। गाँधी जी चरखा चलाने को कहते, नेहरू जी खद्दर पहनने को कहते थे। कोई बच्चे पुलिस वाले बन जाते थे। जब सभा चल रही होती तो पुलिसवाले झूठमूठ की पिटाई करते भी थे।

सुभद्रा जी बच्चों के इन खेलों को देखतीं और बच्चों के लिए नई–नई कविताएँ लिखती थीं। एक बार ज़ोरों से पानी बरस रहा था। एक बच्चे ने माँ से पूछा, ' अभी–अभी तो धूप थी, ये पानी कहाँ से बरसने लगा? क्या किसी ने शैतानी से बादल का घड़ा फोड़ दिया है?'

'और सूरज अभी से अपने घर क्यों चला गया, क्या उसकी माँ ने उसे पुकारकर बुला लिया है?'

इसी बात को सुभद्राजी ने कविता में ढाल दिया है। ये बच्चे अपने पिता को काका कहते थे। इनके जेल जाने की याद उनके बच्चों के मन में कई दिनों तक रही होगी। अपने काका को दुबारा जेल न जाने की तरकीबें वे अपनी माँ को सुझाते भी होंगे। इस तरह की भावनाओं को भी सुभद्राजी ने अपनी कविता में लिखा है।

पानी और धूप

अभी-अभी थी धूप, बरसने
लगा कहाँ से यह पानी
किसने फोड़ घड़े बादल के
की है इतनी शैतानी।
सूरज ने क्यों बंद कर लिया
अपने घर का दरवाज़ा
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कहकर आजा।
ज़ोर-ज़ोर से गरज रहे हैं
बादल हैं किसके काका
किसको डाँट रहे हैं किसने
कहना नहीं सुना माँ का।

बिजली के आँगन में अम्मा
चलती है कितनी तलवार
कैसी चमक रही है फिर भी
क्यों खाली जाते हैं वार।
क्यों अब तक तलवार चलाना
माँ वे सीख नहीं पाए
इसीलिए क्या आज सीखने
आसमान पर हैं आए।

एक बार भी माँ यदि मुझको
बिजली के घर जाने दो
उसके बच्चों को तलवार
चलाना सिखला आने दो।
खुश होकर तब बिजली देगी
मुझे चमकती सी तलवार
तब माँ कोई कर न सकेगा
अपने ऊपर अत्याचार।

पुलिसमैन अपने काका को
फिर न पकड़ने आएँगे
देखेंगे तलवार दूर से ही
वे सब डर जाएँगे
अगर चाहती हो माँ काका
जाएँ न अब जेलखाना
तो फिर बिजली के घर मुझको
तुम जल्दी से पहुँचाना।

काका जेल न जाएँगे अब
तुझे मँगा दूँगी तलवार
पर बिजली के घर जाने का
अब मत करना कभी विचार।

सुभद्रा कुमारी चौहान

कुछ प्रश्न – कुछ सोच विचार

1. तुम्हें यह कविता कैसी लगी? अपने दोस्तों से इस पर बातचीत करो।

2. क्या तुम अपने शब्दों में इस कविता का सार लिख सकते हो? यदि कुछ बातें समझ में न आएँ तो अपने गुरूजी या दोस्तों से पूछो।

   तुम्हारी मदद के लिए कुछ सवाल –

   (क) यह कविता कौन किससे कह रहा है?

   (ख) कविता कहने वाले के मन में बादल, सूरज, बरसात के बारे में क्या–क्या विचार आ रहे हैं?

   (ग) तुम्हारे विचार में बादल किसके काका (बाबूजी, पिताजी) होंगे?

   (घ) कविता कहने वाला बिजली के बारे में क्या सवाल पूछ रहा है?

   (ङ) वह बिजली के घर से तलवार क्यों लाना चाहता है?

   (च) उसकी माँ बिजली के घर जाने से क्यों मना करती है?

3. इन शब्दों के मतलब / दूसरे शब्द पता करो –

   अत्याचार, सिखला, वार।

4. यह कविता आज़ादी की लड़ाई के समय की है। उस समय की और कविताएँ ढूँढो। जैसे सुभद्रा जी की ही एक और कविता है – 'झाँसी की रानी' ।

5. आजादी की लड़ाई के बारे में और पता करो। जैसे नमक सत्याग्रह क्या था? उस समय लोग जेल क्यों जाते थे? जो लोग उस समय जेल जाते थे, उन्हें 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' कहते हैं। क्या तुम अपने आसपास के किसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को जानते हो? उनसे स्वतंत्रता संग्राम के बारे पता करो, किस्से पूछो।

6. चित्र बनाओ – पुलिसवाला बच्चे के काका को पकड़कर ले जा रहा है।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

इन लाइनों का क्या मतलब है – उस समय के माहौल के बारे में क्या समझ में आता है?

किसने फोड़ घड़े बादल के की है इतनी शैतानी। – ऐसा लगता है कि बहुत तेज़ और खूब सारा पानी गिर रहा होगा।

सूरज ने क्यों बन्द कर लिया अपने घर का दरवाज़ा – ----------

बिजली के आँगन में अम्मां चलती है कितनी तलवार – ----------

बच्चे को बादल किस के तरह लग रहे हैं?

बच्चा बिजली के घर क्यों जाना चाहता है?

जो चमकती हुई तलवार बिजली उसे देगी उससे बच्चा क्या करना चाहता है?

क्या सूरज की भी माँ होती होगी जो उसे घर के अंदर बुला कर दरवाज़ा बंद कर लेती होगी? तुम्हें क्या लगता है ? ----------

---

इन वाक्यों को पढ़ कर बताओ ये किसके बारे में बता रहे हैं। हर समूह के नीचे लिखो।

1. गगन में सूर्य चमक रहा है।
   अम्बर नीला है।
   आकाश बहुत ऊपर है।
   नभ में ढेरों तारे हैं।

2. जल ही जीवन है।
   पहाड़ी नदी का नीर ठंडा होता है।
   वारि बिन सब सून।
   दूध में पानी मिला है।

3. यह मेरा मकान है।
   स्मृति के घर में दो कमरे हैं।
   हम अपने निवास स्थान पर थे।
   वह गृह निर्माण कार्य में लगा है।

4. कुछ लोग मिट्टी को जननी मानते हैं।
   वो राम की माताजी हैं।
   मेरी माँ कहाँ है ?
   मैं अपनी अम्मा को मम्मी बुलाती हूँ।

5. ग्रहण में सूर्य छिप जाता है।
   गर्मी में रवि की धूप तेज़ होती
   दिनकर रात में छिप जाता है ?

6. आज रात को तुम आना
   बीच रात्रि मेरी नींद खुल ग

इन शब्दों के ही मतलब वाले और कौन–कौन से शब्द ऊपर मिले? तुम और शब्द जानते हो तो यहाँ लिखो।

आसमान ----------

पानी ----------

घर ----------

अम्मा ----------

सूरज ----------

रात ----------

कविता कहने वाले ने कई प्रश्न पूछे। उनकी सूची बनाओ। उनमें से प्रश्नवाचक शब्द अलग लिखो।

प्रश्न	प्रश्नवाचक शब्द
----------	-------
----------	-------
----------	-------

वाक्य पढ़कर पहचानो कि रेखांकित शब्दों का लिंग क्या है।

वाक्य	लिंग (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग)
अभी–अभी थी धूप	------
बरसने लगा पानी	------
सूरज ने बंद किया घर का दरवाज़ा	------
बादल ज़ोर–ज़ोर से गरज रहे हैं	------
चलती है कितनी तलवार	------
बिजली देगी मुझे चमकती सी तलवार	------
उसकी माँ ने भी उसको बुला लिया।	------
काका जेल न जाएँगे।	------

सही शब्द चुनकर इन वाक्यों को पूरा करो।

बारिश के बाद तेज़ धूप निकल ---। (गया/गई/गए)

दरवाज़ा --- है। (खुला/खुली/खुलें)

तलवार चमक --- है। (रही/रहा/रहे)

माँ खूब --- हैं। (हंसती/हंसता/हंसते)

काका काम ---- है। (करते/करता/करती)

बादल ---- दिख रहे हैं। (काली/काला/काले)

नल से पानी ---- है। (बह रहा/बह रही/बह रहे)

आज की ताज़ा खबर

दैनिक भास्कर

ऊपर एक अखबार का एक हिस्सा दिया गया है उसे ध्यान से देखकर बताओ।

–अखबार का नाम क्या है?

–यह किस तारीख का है?

–कहाँ छपा है?

–यह अखबार और कहाँ–कहाँ से छपता है?

अपने गुरुजी या किसी परिचित से पुराने अखबार लेकर देखो। उनके बारे में यह जानकारी पता करो। यह जानकारी अखबार के मुख्य पृष्ठ पर दी होती है।

हाँ! अखबार का नाम, छपकर निकलने का स्थान तथा तारीख, हर पृष्ठ के ऊपरी भाग में छोटे अक्षरों में भी छपे रहते हैं। यहीं पृष्ठ क्रमाँक भी लिखा होता है।

अब हम देखें, कि अखबार में किस–किस तरह की खबरें छपी हैं ?

अखबार में जो खबरें तुम्हें अच्छी लगें उनमें से कुछ खबरें स्वयं पढ़ो। कोई एक खबर जो तुम्हें लगता है कि सबको सुनाना चाहिए, अपने साथियों को पढ़कर सुनाओ। (बारी–बारी से सभी)

खबरों में तुमने देखा होगा, हर खबर के ऊपर बड़े अक्षरों में एक शीर्षक लिखा रहता है जैसे–

चौथ्या ने 100 लोगों को बचाया

कल्पना चावला अंतरिक्ष में उड़ी

छापे में 14 करोड़ मिले

कालाहांडी में सूखे से दो मरे

उग्रवादियों ने बस जलाई।

शीर्षक के बाद नीचे छोटे अक्षरों में खबर छपी रहती है। लेकिन ये खबरें मिलती कहाँ से हैं? किस–किस माध्यम से अखबार खबर जुगाड़ते हैं? खबरों के पास ही नाम व तारीख लिखी रहती है। साथ ही, खबर **किसने भेजी** उसका भी नाम खबर की शुरूआत में रहता है। खबर में शीर्षक के नीचे यदि लिखा हो, **होशंगाबाद, 6 मई (निज संवाददाता)**, इसका मतलब है कि इस खबर को भेजने वाला **होशंगाबाद**

का कोई व्यक्ति है जो इस अखबार का संवाददाता है।

कहीं–कहीं **खेल प्रतिनिधि, विधिक प्रतिनिधि, व्यापार प्रतिनिधि** आदि भी लिखा मिलता है। यह किसी खास तरह की खबरों के लिए अखबार के प्रतिनिधि होते हैं। कुछ में **भाषा, डी. पी. ए, आई. ए. एन. एस**, इस तरह का संक्षिप्त रूप लिखा होता है। यह समाचार एजेन्सी का नाम है। इनका काम अखबारों को खबरें बेचना होता है।

दिन भर से छाये बादल आखिर बरस ही पड़े

भोपाल, 25 जून (न. प्र.)

आकाश में दिन भर से छाये बादल रात्रि में अंततः बरस ही पड़े। रिमझिम बारिश ने गर्मी और उमस से तात्कालिक राहत दी। कल भी सायं तक फिर वर्षा की संभावना है। बिलासपुर, बस्तर एवं सागर संभागों में कुछ जगह, जबलपुर संभाग के एक दो स्थानों पर आज वर्षा हुई। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार कल राजधानी में दिन भर आकाश में आंशिक मेघ बने रहने व सायं वर्षा की संभावना है। राज्य के रायपुर, जबलपुर, बिलासपुर एवं बस्तर संभाग में अनेक स्थानों पर तथा रीवा, सागर संभाग के कुछ क्षेत्रों में वर्षा की संभावना है। शेष राज्य में गरज–चमक के साथ बौछार हो सकती है। आज राजधानी का अधिकतम तापमान 39.4 डिग्री, इंदौर का 39.1 डिग्री, ग्वालियर का 44 डिग्री और जबलपुर का अधिकतम तापमान 38.3 डिग्री दर्ज किया गया।

भारत और नेपाल में दुर्लभ प्रजातियों के पक्षियों को खतरा

काठमांडो, 2 जुलाई। (आईएएनएस)।

भारत और नेपाल से लाखों पक्षियों की तस्करी कर उन्हें पाकिस्तान और खाड़ी देशों में भेजा जा रहा है। यह तस्करी नेपाल के रास्ते हो रही है। पक्षी विज्ञानियों और संरक्षणवादियों ने चेतावनी दी है कि दोनों देशों की सरकारों ने पक्षियों के अवैध व्यापार में लगे अपराधियों के खिलाफ कड़ा रुख नहीं अपनाया तो विलुप्त हो रहे पक्षियों की पूरी प्रजातियों के खात्मे का खतरा पैदा हो सकता है। भारत में दुर्लभ पक्षियों की 1228 और नेपाल में 841 प्रजातियाँ है।

इज़राइल में अखबार के प्रकाशक को आठ महीने की सज़ा

यरूशलम, 2 जुलाई (डीपीए) । इज़राइल के सबसे बड़े अखबार के प्रकाशक को एक प्रतिद्वंदी समाचार पत्र के कार्यालय में गैर कानूनी रूप से संदेश टेप करने के आरोप में आज आठ महीने की जेल की सज़ा सुनाई गई।

इज़राइल रेडियो के अनुसार तेल अवीव में अदालत द्वारा *मारीव* दैनिक समाचार पत्र के प्रकाशक और पूर्व मुख्य संपादक डोफेर निम्रोडी को न्याय में बाधा डालने का भी दोषी ठहराया गया और चार लाख 44 हजार अमेरिकी डालर का जुर्माना देने को कहा गया।

– अलग–अलग तरह की खबरों के लिए हम अलग–अलग टोलियाँ बना सकते हैं।

एक टोली खेलों की खबर लिखेगी, एक टोली बाहर से आने वालों की खबर लिखेगी, एक टोली कक्षा चार की खबरें पता करके लिखेगी, एक टोली कक्षा पाँचवीं की खबर लिखेगी, किसी और तरीके से भी आपस में बँटवारा किया जा सकता है। कुछ साथी खबरों के चित्र बना सकते हैं।

– सब मिलकर बड़े कागज़ पर लिखोगे या अलग–अलग पन्नों में? गुरूजी/बहनजी व अपने साथियों के साथ तय करो। यदि छोटे पन्नों पर लिखो तो उन्हें बड़े चार्ट पर चिपकाकर अखबार बनाओ।

– अखबार ऐसी जगह लगाना जहाँ सभी साथी उसे पढ़ सकें।

यदि हर सप्ताह सम्भव न हो सके, तो पन्द्रह दिन में या माह में एक बार अपना अखबार ज़रूर निकालना। नया अखबार निकलने पर पुराना अखबार पास के किसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा जा सकता है। उनके यहाँ का अखबार अपने स्कूल में मँगाया जा सकता है। दूसरे स्कूल के अखबार की खबरों का सार कहीं पर अपने अखबार में लिखा जा सकता है।

तुमने अखबारों में देखा होगा एक निर्धारित जगह पर लोगों की चिट्ठियाँ छपती हैं। तुम भी अपने अखबार में चिट्ठियाँ ज़रूर छापना।

पिछले पन्ने पर छपी खबरें तुमने ध्यान से पढ़ी होंगी।

– ये खबरें किन अखबारों में छपी हैं? वे कहाँ से छपते है?

– ये खबरें किस तारीख को छपी है?

– ये खबरें किन जगहों की हैं? खबरों में आई जगहों को एटलस में ढूँढो। वे कौन–से नक्शे में मिले? किस देश में है?

– इन खबरों को अखबार तक किसने पहुँचाया?

– खबरों के शीर्षक क्या हैं? शीर्षक पढ़कर बताओ खबर किसके बारे में है?

खबरों को अच्छी तरह समझकर अपने शब्दों में लिखो। मुश्किल शब्दों के अर्थ गुरुजी की मदद् से ढूँढो। खबरें तो तरह–तरह की होती है, पिछले पन्ने पर दी गई खबरें देश विदेश के कई भागों की है।

अपने स्कूल का अखबार निकालो। जब हम अपनी कक्षा की ओर से स्कूल का अखबार निकालेंगे तो उसमें खबरें अलग तरह की होंगी। खबरें स्कूल या गाँव की होगी।

क्या–क्या छप सकता है स्कूल के अखबार में?

– स्कूल में यदि कोई नए गुरूजी आए हैं या कोई नया विद्यार्थी आया है तो यह खबर छप सकती है।

– शाला में यदि बाहर से कोई अधिकारी, शिक्षक या कोई अन्य व्यक्ति तुम्हारी पढ़ाई देखने आता है, तुमसे बातचीत करता है, तो यह खबर भी छप सकती है।

– स्कूल में यदि कुछ दिन की छुट्टी होने वाली है तो यह खबर भी छपेगी।

– स्कूल में कोई नया खेल खेला गया, तो उसके बारे में भी छप सकता है

– कक्षा में स्कूल में जो घटता है, यह तो छाप ही सकते हो, यदि कक्षा और स्कूल के बारे में तुम्हारे कुछ विचार या सुझाव है, उन्हें भी छाप सकते हो।

– स्कूल के अखबार में तुम अपने गाँव मोहल्ले की खबर भी छाप सकते हो जैसे:–

– तुम्हारे गाँव या मोहल्ले में नया हैन्डपम्प लगा या पुराना हैन्डपम्प बंद पड़ा है तो यह खबर छप सकती है।

– गाँव में टीके कब लगने वाले हैं, ग्राम पंचायत या ग्राम सभा की बैठक कब होने वाले है, हुई तो क्या हुआ यह भी छाप सकते हैं ?

– गाँव की पढ़ाई पूरी करके यदि कोई बाहर पढ़ने जा रहा हो तो यह भी छाप सकते हैं।

इसके अतिरिक्त और भी कई बातें छापी जा सकती हैं। वे सारी बातें जिन्हें तुम समझते हो कि सभी लोग जानना चाहेंगे। तो फिर चलें, हम सभी मिलकर स्कूल का अखबार निकालते है–

पता है अखबार निकालने के लिए क्या–क्या करना होगा?

– सभी मिलकर अखबार का एक नाम सोच लो, फिर हर बार अखबार इसी नाम से निकलेगा।

दीया

आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली। ऊपर दीवार में छत के पास से दो ईंटें निकली हुई थीं। जब–जब वहां से हवा का झोंका आता, दीये की बत्ती झपक जाती और कोठरी की दीवारों पर साए से डोल जाते। थोड़ी देर बाद बत्ती अपने आप सीधी हो जाती और उस में से उठने वाली धुँए की लकीर आले को चाटती हुई फिर से ऊपर की ओर सीधे जाने लगती। नत्थू की साँस धौंकनी की तरह चल रही थी और उसे लगा कि उसकी साँस के ही कारण दीये की बत्ती झपकने लगी है।

- यह पैराग्राफ़ किसके घर के बारे में होगा? इसमें किसका विवरण है?
- धुँए की लकीर क्या कर रही थी?
- दीवारों पर साये क्यों बनते हैं?
- नत्थू कौन था? वह कहाँ बैठा था?
- फूँक से तुम क्या बुझा सकते हो? क्या–क्या उड़ा सकते हो?
- दीये के झपकी लेने का क्या मतलब है?
- अगर दीये को झपकी आ सकती है तो क्या उसे नींद भी आती होगी?
- नत्थू को क्यों लगा कि उसकी साँस से दीया झपक रहा है?
- खाली जगह में विवरण के लिए चित्र बनाओ।

कठपुतली का राजा

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा सजता
पैरों को लहंगे से ढंकता
धागा फिर पगड़ी से लगता।
जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मजा चखाना।

तिक्कड़ तिक्कड़ चाल बताकर
कठपुतली की रानी आती
लक्कड़ का वह हाथ हिलाती
भरसक गुस्से में चिल्लाती
"अरे सोचता क्या है तू
सज-धज कर क्या खूब लड़ेगा?
आएगा जब दुश्मन तेरा
क्या वो तेरे पांव पड़ेगा?"
जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मजा चखाना।

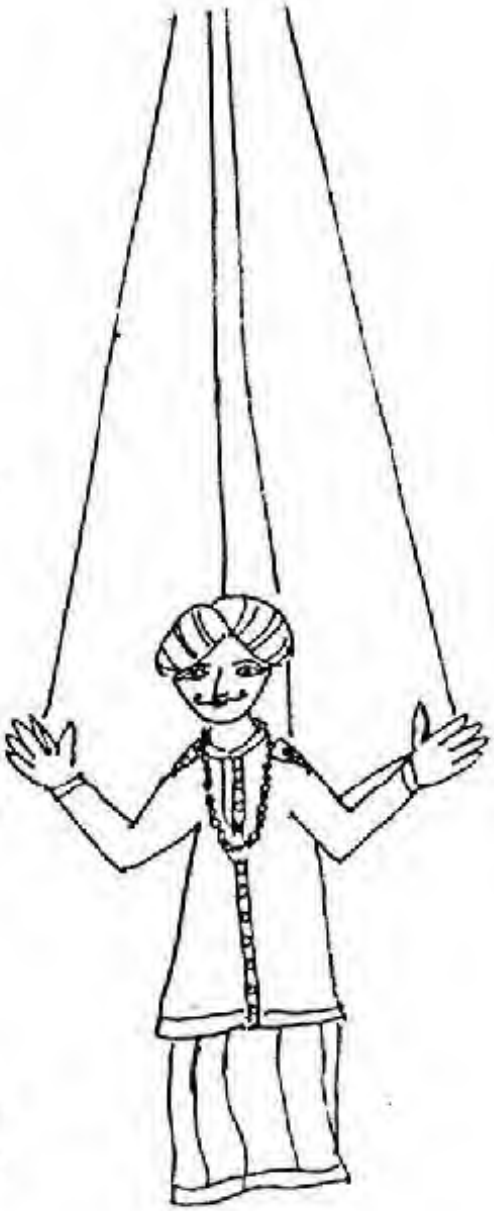

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा सजता
पैरों को लहंगे से ढंकता
लेकर घोड़ा आगे बढ़ता।
जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

निकल गया जब घुड़सवार
उधर से आई एक पुकार
"भूल गए हो तुम तलवार
भाला रह गया, रह गई ढाल
भाला रह गया, रह गई ढाल!"
ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा चलता
निकल पड़ा है रूप संवार
नहीं है सुनता चीख पुकार।
जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

(तुमने कभी कठपुतली का नाटक देखा है? कठपुतलियां छोटी गुड़ियों जैसी होती हैं। उन्हें एक टेबिल के बराबर मंच पर धागों से नचाया जाता है। कठपुतली से जुड़े धागे कठपुतली नचाने वाले की उंगलियों पर बंधे होते हैं। कठपुतली नचाने वाला ही कठपुतली की तरह आवाज़ निकाल कर बोलता है। कभी कठपुतली तुम्हारे गांव या मोहल्ले में आए तो जरूर देखना।)

(मंच बहुत ज़्यादा बड़ा नहीं है। गुरूजी की टेबिल जितना है।

कठपुतली का राजा घोड़े पर बैठा जा रहा है। वह रंगीन कपड़े और पगड़ी पहने हुए है। और उसका घोड़ा फुदक-फुदक कर और ऊंचा उछल कर चल रहा है।

तभी सामने से दुश्मन आता है। दुश्मन ने काले कपड़े पहने हैं और उसकी बड़ी-बड़ी मूछें हैं। उसके एक हाथ में तलवार है और दूसरे हाथ में काले और सुनहरे रंग की ढाल।

बात करते समय दोनों अपनी गर्दन ज़ोर-ज़ोर से हिलाते हैं।)

राजा : *(राजा की आवाज़ ऊंची और पतली-सी है। ऐसा लगता है कि वो अपनी नाक से बोल रहा है)* दुश्मन आ गया! अरे, मैं तो अपनी तलवार भूल आया। अरे, मैं तो अपना भाला और ढाल भी भूल आया। बाबा रे, अब क्या होगा? बाबा रे!

दुश्मन : *(दुश्मन की आवाज़ भारी भरकम है और जब वो बोलता है तो उसकी मूंछ खूब हिलती है। वो हंसता है)* हा ! हा ! हा ! तूने क्या सोचा था? तू दुश्मन से बच निकलेगा? हा ! हा ! हा !

राजा: दुश्मन भैया, दुश्मन भैया, मैं तुम्हें मज़ा चखाने थोड़े ही निकला था। देखो न, मैं तो तलवार-भाला तक नहीं लाया। मैं तो सिर्फ चेहरा देखने वाला शीशा ही लेकर निकला हूं।

(राजा दुश्मन को शीशा दिखाता है)

दुश्मन : तो क्या हुआ, ले संभाल !

(और दुश्मन राजा के ऊपर टूट पड़ता है। तलवार उठा कर राजा पर वार करने लगता है।)

राजा : रुको!

(दुश्मन वार करता है। राजा वार बचाता हुआ बीच-बीच में बोलता रहता है।)

राजा : सुनो भाई! अरे रुको तो सही! दुश्मन भैया, रुको! वो देखो...

(राजा पीछे की ओर इशारा करता है। वह बार बचाते-बचाते थक गया है और हांफ रहा है।)

राजा : *(हांफते-हांफते)* - वो तुम्हारे पीछे शेर खड़ा है।

(दुश्मन पीछे देखता है। राजा भाग उठता है।)

दुश्मन : *(आगे मुड़ते हुए)* वहां तो कुछ नहीं ...अरे कहां भाग गया, दगाबाज़, ज़रा रुको तो सही! अभी बताता हूं।

(राजा आगे-आगे भागता है। दुश्मन पीछे-पीछे भाग रहा है। भागते-भागते दोनों मंच से बाहर चले जाते हैं। पीछे से एक गीत सुनाई देता है, जिसे कई आवाज़ें गा रही हैं।)

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा भगता
कहीं वो गिरता कहीं है पड़ता
पैरों में लहंगा जो अड़ता।

जंग चढ़ाई भूल रहा है
दुश्मन उसको ढूंढ रहा है
दुश्मन उसको ढूंढ रहा है।

(राजा भागता-भागता मंच पर पहुंचता है। उसका लहंगा पैरों में लिपट चुका है और वह गिर पड़ता है।)

दुश्मन : हा! हा! हा! तूने क्या सोचा था, तू दुश्मन से बच निकलेगा? वो भी इतना सुंदर लहंगा पहनने के बाद? हा! हा! हा!

(राजा और भी ज़्यादा हांफ रहा है। वह इतना थक गया है कि ज़मीन से उठने की कोशिश भी नहीं कर रहा है

तभी अचानक एक **शेर** *निकल कर मंच पर आता है और दुश्मन के पीछे खड़ा हो जाता है।)*

राजा : दुश्मन भैया, इस बार सचमुच तुम्हारे पीछे शेर खड़ा है।

दुश्मन : हुं ! बड़ा आया शेर की बातें करने वाला।

राजा : नहीं नहीं, सचमुच तुम्हारे पीछे शेर है।

दुश्मन : अभी देखना मेरी तलवार क्या मज़ा चखाती है, तुझे और तेरे शेर को।

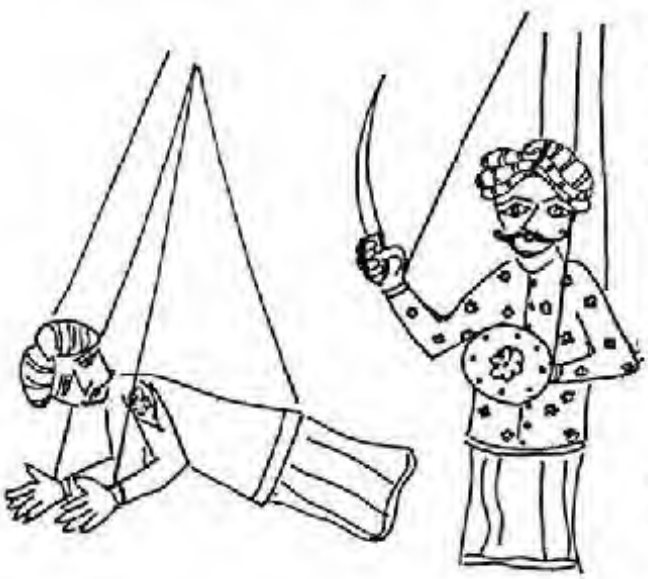

(तभी शेर ज़ोर से दहाड़ता है। दुश्मन मुड़ कर देखता है कि शेर एकदम उसके पीछे खड़ा है।)

दुश्मन : अरे बाप रे, शेर! बचाओ, शेर आ गया! अरे, बचाओ रे बचाओ!

(दुश्मन लपक कर राजा के पीछे दुबक जाता है।)

राजा : मेरा शीशा कहां गया रे?

(राजा झट से चेहरा देखने वाला शीशा निकालता है। शेर उसमें अपना चेहरा देख कर डर के मारे कूद पड़ता है। राजा फिर उसे शीशा दिखाता है।)

शेर : भागो रे भागो! इस आदमी की मुट्ठी में एक और शेर है। मेरा तो कचूमर ही निकाल देगा। भागो!

(शेर भाग जाता है। दुश्मन धीरे-धीरे राजा के पीछे से निकलता है।)

दुश्मन : वाह, राजा भैया! कुछ तो हिम्मत तुममें भी है। दिमाग भी है। मानना पड़ेगा। चलो, करो दोस्ती।

राजा : हां, दुश्मन भैया! कुछ तो डरपोकपन तुममें भी है। चलो, मिलाओ हाथ।

(पीछे से)

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा उठता
पैरों को लहंगे से ढंकता
पीठ पे उसकी झाड़न लगता।

दुश्मन को वह जोड़ चुका है
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।
दुश्मन को वह जोड़ चुका है
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।

● *अपनी कापी में इन सवालों के उत्तर लिखो।*

1. राजा ने लड़ाई पर जाने के लिए क्या-क्या तैयारियां कीं?
2. रानी राजा पर क्यों चिल्लाई?
3. राजा लड़ाई पर कैसे निकला?
4. दुश्मन जब राजा के सामने आया तो राजा क्यों घबराया?
5. राजा ने अपने आप को दुश्मन से कैसे बचाया?
6. राजा ने अपने आप को और दुश्मन को शेर से कैसे बचाया?
7. दुश्मन राजा का दोस्त कैसे बन गया?

- इस कविता और नाटक को ध्यान से अपने-अपने मन में पढ़ो।

- अब एक-एक करके कविता ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो, हाव-भाव के साथ।

- नाटक और कविता में कई पात्र हैं। यहां सभी पात्रों के नाम लिखो
- आपस में पात्र तय कर लो। कोई राजा बन जाए, कोई दुश्मन। और भी पात्र चुन लो। अब एक छात्र-छात्रा हाव-भाव के साथ कविता पढ़े। जैसा कविता में लिखा है, वैसा हर पात्र करता जाए। जब नाटक आएगा तो हर पात्र को अपना-अपना डायलाग पढ़ना है और वैसा ही स्वांग करना है।

- क्या तुमने कठपुतली का खेल देखा है? अगर हां, तो लिखो कि उसमें क्या-क्या देखा था।

- यहां हम कठपुतली बनाने के कई तरीके दिखा रहे हैं। तुम इन्हें देख कर कठपुतलियां बनाओ और गुरूजी की मदद से इनके साथ नाटक भी खेलो।

कठपुतलियां बनाने के लिए तुम्हे इन चीजों की ज़रूरत पड़ेगी

घास, रस्सी, पेंसिल, क्रेयांस या होली के रंग, गोंद, सुई, कैंची, लकड़ी या बांस, कागज़, पुरानी कापी का पुट्ठा।

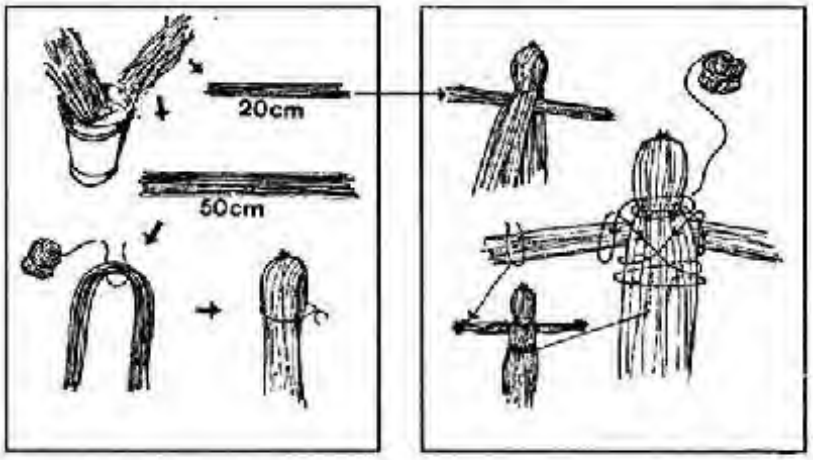

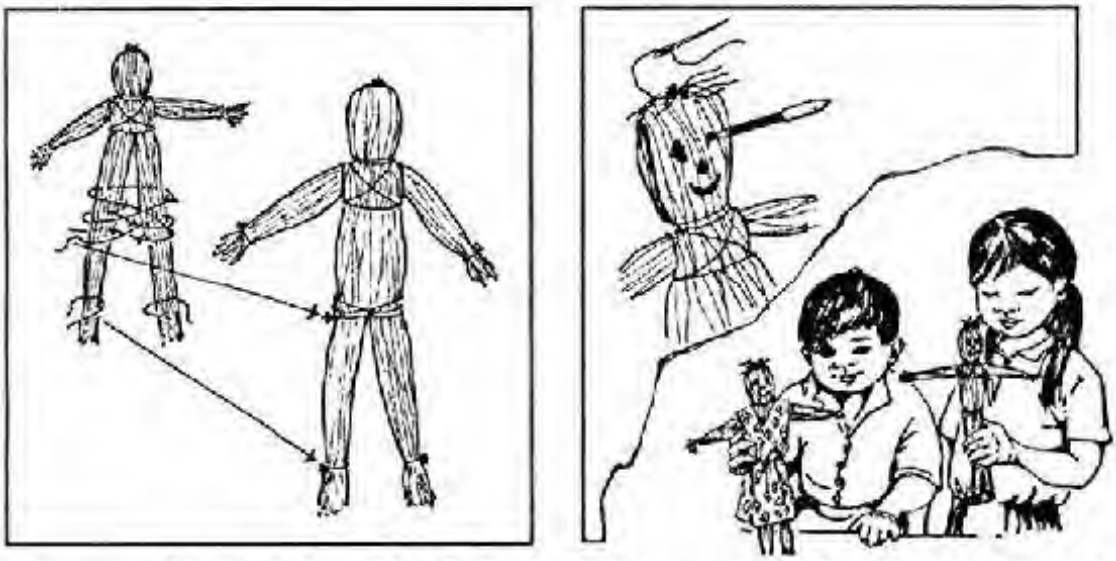

यहां कुछ मुखौटे बनाने के तरीके भी दिए हैं। उन्हें पहन कर भी ये नाटक खेल सकते हो।

● तुम और भी नाटक बनाओ, जिसे कक्षा के सब लोग मिल कर खेल सकें। हम कुछ सुझाव तुम्हें दे रहे हैं।

1. राजू और उसके दोस्त स्कूल के बाहर गिल्ली-डंडा खेल रहे थे। कन्हैया ने गिल्ली मारी तो खिड़की के अंदर चली गई। अंदर गुरूजी, बहनजी और बड़े गुरूजी बैठे थे। गिल्ली बहनजी की टेबिल पर जा गिरी – आगे क्या हुआ? सोच कर जोड़ो और इसका नाटक खेलो।

2. मुनिया, उसकी मां और पिताजी रेल से चारखेड़ा जा रहे थे। मुनिया की उम्र आठ साल से ऊपर थी, पर उन्होंने उसका टिकट नहीं लिया था। बताओ, आगे क्या हुआ होगा? नाटक खेलो।

कालाहारी

हम अभी तक अरुणाचल के घर, बाना–बोगाना, एस्किमो, थार आदि के बारे में पढ़ चुके हैं। इनकी अपने यहाँ के जीवन से तुलना कर के देख चुके हैं। इनमें कहीं बरसात अधिक होती है और कहीं इतनी ठंड की सब कुछ बर्फ से ढँका रहता है। दुनिया में ऐसी भी जगहें हैं जहाँ गर्मी अधिक होती है और बारिश बहुत कम। ऐसी एक जगह है कालाहारी, चलो जानें यहाँ क्या होता है।

कालाहारी

क्या एक सूखी टहनी को देखकर बताया जा सकता है कि ज़मीन के कितने नीचे पानी छिपा होगा? क्या एक बंदर को पकड़ कर पता लगाया जा सकता है कि पानी कहाँ पर मिलेगा? हमारे यहाँ शायद ये पता लगाना इतना ज़रूरी नहीं होता। लेकिन दुनिया में ऐसी कुछ जगहें हैं जहाँ किसी तरह से पानी का पता नहीं लगा पाने का मतलब है प्यास से मर जाना।

कालाहारी ऐसी एक जगह है। कालाहारी एक लम्बा चौड़ा सूखा इलाका है। यह इतना सूखा इलाका है कि इसे रेगिस्तान भी कहा जाता है। इस रेगिस्तान में दूर–दूर तक रेतीले मैदान और कहीं–कहीं झाड़ियाँ या कँटीले पेड़ नज़र आते हैं। और नजर आते है हिरण, लकड़बग्घे, बंदर–और इधर रहने वाले !कुंग जाति के लोग।

!कुंग

!कुंग – इस शब्द को कहने के पहले जीभ को चटकारना होता है। सूखे कालाहारी में कंद–मूल और फल ढूँढकर, और जानवरों का शिकार करके रहने वाले लोग हैं !कुंग। सर्दी और बारिश के समय तो इन्हें पानी की कोई समस्या नहीं होती। परन्तु जैसे–जैसे गर्मी का मौसम आता है, कालाहारी में पानी कम होने लगता है, और फिर नज़र ही नहीं आता। ऐसे में !कुंग लोग पानी पाने के लिए पौधों और जानवरों का उपयोग करते हैं।

एक !कुंग आदमी

जड़ों से पानी

भला पौधों से पानी कैसे? रेगिस्तान में उगने वाले कई पौधे अपनी जड़ों में पानी बचा कर रखते हैं। इनमें एक ऐसा पौधा है जिसका नाम है **बि**। ऊपर से तो इसकी पतली–सी लता होती है, लेकिन इसकी जड़ बहुत

रेगिस्तान में !कुंग बस्ती

ही मोटी होती है। कई बार तो इसके कंद एक छोटे घड़े जितने बड़े होते हैं।

इस तरह की जड़ से पानी निकालना इतना आसान नहीं है। पहले तो गर्मी में लता सूख कर करीब–करीब गायब हो जाती है। फिर उसे ढूंढ कर जड़ तक पहुँचने में काफी समय लग जाता है। और अंत में जड़ एक खाली घड़े के समान नहीं बल्कि काफी ठोस और कड़ी होती है।

पानी निकालने के लिए एक चाकू को जड़ पर आड़ा रख कर घिसा जाता है। सब्ज़ी किसने पर जिस तरह हो जाती है, जड़ भी किसने पर उसी तरह हो जाती है। किसी हुई जड़ को मुट्ठी में भरकर निचोड़ो तब जाकर उसमें से निकलता है थोड़ा–सा पानी, जिसे !कुंग लोग सीधे ही मुँह में ले लेते हैं।

बबून बताता पानी

हो सकता है कि इसकी तुलना में बंदर को पकड़ कर पानी का पता लगाना ज़्यादा आसान हो। यहाँ पर एक तरह का बंदर होता है जिसे बबून कहा जाता है। कालाहारी में कई ऐसी गुफाएँ हैं जिनके अंदर की खाइयों में कहीं–कहीं पानी के सोते मिलते हैं। ये सोते कहाँ होंगे इसका पता करना बहुत मुश्किल है। पर इन पानी के सोतों का पता बबून बंदरों को ज़रूर रहता है। और बबूनों की आदत यह है कि अगर कोई भी जानवर या आदमी आसपास हो तो वे पानी की ओर नहीं जाते।

तो अब गर्मी के समय इन बंदरों से यह जानकारी उगलवाई कैसे जाए? इसके लिए !कुंग लोगों के पास एक अनोखा उपाय है। इस उपाय का विवरण एक यात्री ने दिया है। यह यात्री !कुंग लोगों के गाँव में कुछ समय रहने आया था। यात्री ने देबे नामक व्यक्ति को पानी खोजते हुए देखा। यात्री का इस घटना का विवरण आगे दे रहे हैं।

बबून माँ और बच्चा

देबे ने बबून पकड़ा :

!कुंग कबीले के एक व्यक्ति, देबे, को मैं ने एक अजीब हरकत करते देखा। वो एक बहुत ही संकरे से मुँह वाला घड़ा और साथ में कुछ बीज लेकर घूम रहा था। एक जगह जब उसे एक बबून दिखा तो उसने वहां एक गड्ढा खोदकर घड़े को गाड़ दिया। फिर उसने घड़े के अंदर बीज डाल दिए। बबून एक पेड़ के झुरमुट से बड़े ध्यान से सब कुछ देख रहा था। देबे यह काम करके वहां से चले जाने का स्वांग रचता हुआ थोड़ी दूर जाकर छिप गया। कुछ देर तक इधर–उधर देखने के बाद बबून पेड़ से उतरा और ज़मीन में दबे घड़े को देखने लगा। फिर उसने घड़े के अंदर हाथ डाला।

अंदर खाने के बीज थे। बबून ने उन्हें अपनी मुट्ठी में बंद कर लिए। लेकिन अब मुट्ठी बंद हो जाने के बाद घड़े के संकरे से मुंह से बबून का हाथ नहीं निकल सकता था। बबून बीज निकालने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा था। और बीज पकड़ कर हाथ नहीं निकल सकता था।

इसी बीच देबे चुपके से आया और झपट कर बबून के गले में रस्सी बांध दी। अब तो बबून ने खूब चिल्ल–पौ मचाई। देबे ने बबून को एक पेड़ के तने से बांध दिया। बबून खूब जम कर उछल कूद कर रहा था।

नमक और पानी

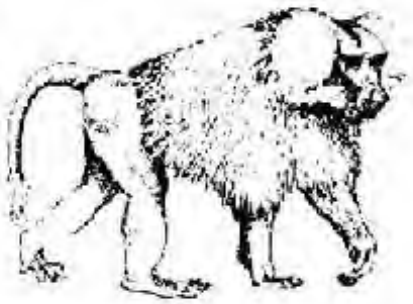

इतने में देबे ने बबून को नमक का एक बड़ा–सा ढेला दे दिया। बबून के नमक बहुत ही प्रिय है। फिर क्या, बबून अपने बंधन को भूल कर मजे से नमक खाने लग गया। जब उसने बहुत सारा नमक खा लिया तो बबून को जोर से प्यास लगी। वो गले से खसखसाहट की आवाज निकालने लग गया। लेकिन देबे काफी देर तक सब्र के साथ बबून को ताकते बैठा रहा। उसने बबून की प्यास को बहुत बढ़ने दिया। जब बबून उछलने–कूदने लग गया तब जाकर देबे को विश्वास हुआ कि अब उससे रहा नहीं जाएगा। उसने उठकर रस्सी खोल दी।

छूटते ही बबून पूरी ताकत से भागा। देबे को इसी का तो इंतज़ार था– वो भी बबून के पीछे हो लिया। बंदर सीधे एक विशाल गुफा की ओर भागा, जिसमें काफी अंदर जाने पर पानी का सोता था। बबून के साथ–साथ देबे भी पानी पीने लग गया।

देबे को पता था कि अगर वो खुद ही पानी को ढूँढने की कोशिश करता तो कभी न ढूँढ पाता। लेकिन जो आदमी बबून से ये जानकारी निकलवा सकता हो उसे खुद ढूँढने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

कुल इस तरह का जीवन है कालाहारी के !कुंग लोगों का जो रेगिस्तान में पानी की कमी से भी जूझना जानते हैं। आगे कुछ लेखों में तुम्हें कालाहारी और !कुंग जाति के लोगों के बारे में और जानकारी मिलेगी।

अभ्यास

1. !कुंग जाति के लोग क्या खाते हैं?
2. !कुंग जाति के लोग पौधों से पानी कैसे लेते हैं?
3. बबून को देबे ने कैसे पकड़ा?
4. बबून की प्यास कैसे बढ़ गई?
5. कालाहारी और बाना के कबीले के रहने की जगह में क्या मुख्य अंतर है? क्या इनके जीवन में कुछ समानता भी है?

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

- कक्षा 3 भाग (2) में बन्दर, खरगोश और कछुआ, ऊंट के साथ रेगिस्तान की यात्रा पर गए थे। इन चारों में से किसे यात्रा सबसे आसान लगी/ उसका चित्र बनाओ और उसकी वे बातें बताओ जिनसे उसके लिए रेगिस्तान की यात्रा आसान हो जाती है।
- झटपट बताओ–

  क– !कुंग लोगों को पानी किस पौधे की जड़ से मिलता है?

  ख– बबून का हाथ घड़े में से क्यों नहीं निकल रहा था?
- एक ही चीज़ के लिए कई शब्दों का उपयोग किया जा सकता है– वर्षा, बारिश, बरसात, वृष्टि,..... लता..... बेल.....

  इन में से प्रत्येक का बारी–बारी इस्तेमाल करके एक–एक वाक्य बनाओ। तुम्हारे बनाए वाक्यों में से जो वाक्य वर्षा शब्द के लिए बना है, उसमें क्या हम वर्षा की जगह बारिश लिख सकते हैं? लिख कर देखो। कैसा लगा?
- नीचे कुछ शब्द झुंड दिए गए हैं। इनमें से छाँट कर समानार्थी शब्द प्रत्येक शब्द के सामने लिखो। (कुछ शब्द कहीं नहीं जाएंगे) जो शब्द बाकी बच गए उनके लिए भी एक–एक समानार्थी शब्द ढूँढो।

  सूर्य, मुसाफिर, जल, चन्द्रमा, खोज, स्नेह, मोटा, रात्री, भारी, नदी, किताब, चांद, प्रेम, पौधा, सेब, कयामत, आफ़ताब, दिन, सागर, चन्दा, खुशबू, रवि, रोशनी, लड़ाई, रात, गुम, पेय, रेल, रजनी, सहर, सुबह, प्रात:, महक, दिनकर, भास्कर, कौंपल, मरूस्थल, तालाब, गागर

रात	सुगंध
प्यार	पुस्तक
यात्री	पानी
चांद	सूरज
ढूँढ	रेगिस्तान

गाँधीजी

बरसात का दिन था। आसमान में बादल रह रहकर घिर आते थे। एक बालक उन्हीं की तरफ़ एकटक देख रहा था। देखते-देखते एकदम चिल्ला उठा, 'माँ, माँ देख, सूरज निकल आया। अब तू पारणाँ कर ले (पारणाँ उपवास या व्रत की समाप्ति पर किए जाने वाले भोजन को कहते हैं) माँ ज्यों ही बाहर आई, सूरज भगवान बादल की ओट में छिप गए। "कोई बात नहीं मनु, भगवान की मरजी नहीं है कि मैं आज भोजन करूँ, पारणाँ करूँ। मनु की माँ ने यह व्रत लिया था कि जब तक सूर्य को देख नहीं लेंगी वे भोजन नहीं करेंगी। बरसात के दिनों में तो यह व्रत और कठिन हो जाता क्योंकि इस मौसम में तो कभी-कभी चार-पाँच दिनों तक सूरज न दिखता।

मनु/मोन्या तब बड़ा दुखी होता कहता, "माँ, तू ऐसे कठिन व्रत क्यों लेती है ?"

माँ बस इतना ही कहती "बेटा, जब तू बड़ा हो जाएगा, तब इन बातों का अर्थ समझ जाएगा।"

ऊपर जिन 'माँ-बेटा' की बातचीत तुम पढ़ रहे हो। उनमें माँ का नाम पुतलीबाई और बेटे का नाम मोहनदास है, माँ उसे 'मोन्या' कहती है।

मोन्या का जन्म गुजरात के पोरबंदर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था।

मोन्या बहुत ही शर्मीले स्वभाव का लड़का था। अपने स्कूल के बच्चों से बात करने में भी उसे बड़ा डर लगता। बस हर समय उसे यही डर लगा रहता कि किसी बात पर उसकी हँसी न उड़ जाए। स्कूल में जब उसका नाम लिखवाया गया तब उसकी उम्र सात साल थी।

एक बार राजकोट में एक नाटक मंडली आई, जो हरिश्चंद्र नाटक खेलती थी। मोन्या ने नाटक देखने के लिए अपने पिता से आज्ञा माँगी। पिता ने तो आज्ञा दे दी मगर माँ ने एक शर्त रख दी, "शर्त थी कि नाटक की पूरी कहानी घर आकर सुनानी होगी।"

मोन्या क्या करता, नाटक तो देखना ही था। उसने शर्त मान ली और नाटक देखने चला गया, "नाटक का एक-एक दृश्य उसने बड़े ध्यान से देखा।

नाटक देखने के बाद, वह नाटक के पात्र हरिश्चंद्र के जीवन की कल्पना करता और रोता। उस पूरे नाटक में हरिश्चंद्र को सच बोलने के कारण कई कष्ट उठाने पड़े थे। मोन्या के मन में इस नाटक का गहरा प्रभाव पड़ा।

कभी-कभी सोचते-सोचते वह कई प्रश्न भी करता। उसके घर में उन दिनों 'ऊका' नाम का व्यक्ति सफाई करने आता था। माँ हमेशा उसे 'ऊका' से दूर रखती कि कहीं ऊका उसे छू न ले।

तब वह सोचता कि रामायण में तो लिखा है कि ऋषि वशिष्ठ ने केवट को अपनी छाती से लगाया था। और राम ने भी तो शबरी के जूठे बेर खाए थे... और

ये दोनों ही अछूत माने जाते हैं। जब वह यही प्रश्न माँ से पूछता तो माँ मन ही मन उसकी बुद्धि पर खुश होती मगर इन प्रश्नों का जवाब न दे पाती।

उस जमाने में छोटी उम्र में ही बच्चों की शादी हो जाती थी।

मोन्या भी 13 वर्ष का ही था, जब उसका विवाह हुआ। उसके पिता के मित्र की लड़की कस्तूरबा से।

वैसे तो उसे रामायण के दोहे, मीराबाई के भजन बहुत भाते थे। मगर नरसी मेहता का भजन "वैष्णव जन तो तेणे रे कहिए, जो पीड़ पराई जाणे रे" तो वह इतनी मस्ती से गाता कि अपनी सुधबुध ही भूल जाता।

1887 में उसने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। उसके बाद की पढ़ाई के लिए उसने भावनगर के सामलदास कॉलेज में नाम लिखवाया।

लेकिन वहाँ पढ़ाई अँग्रेजी माध्यम में होती थी, इसलिए मोहन का मन ही न लगता।

धीरे-धीरे उसका मन पढ़ाई से उचट गया और थोड़े ही दिन बाद वह अपने घर लौट आया। आते ही मोन्या से परिवारवालों ने पूछा, "बता तू क्या पढ़ेगा।" मोन्या ने कहा "मैं डॉक्टरी पढ़ना चाहता हूँ।"

"अरे! मुर्दे कैसे चीरेगा...? न, न, यह काम तुझसे नहीं होगा। मोन्या के पिता दीवान थे, दीवान बनने के लिए कानून का ज्ञान जरूरी होता है इसलिए सबकी यही इच्छा थी कि मोन्या विलायत जाकर कानून पढ़े।

मोन्या को भी विलायत जाकर कानून पढ़ने में कोई दिक्कत नहीं थी। मोन्या ने तो हाँ कर दी, लेकिन मोन्या की माँ बड़ी दुविधा में पड़ गई कि तीन साल वह कैसे अपने बेटे से दूर रहेगी।

माँ के मन की बात मोन्या जानता था। माँ को डर था कि विलायत जाकर मोन्या बिगड़ जाएगा, वह शराब पीने लगेगा, वह मांस खाने लगेगा...।

मोन्या ने कहा "बा (गुजराती में माँ को 'बा' कहते हैं) तू फिकर मत कर, जिन बातों से तू डरती है। मैं उन्हें कभी नहीं करूँगा।"

बेचरजी स्वामी, एक जैन साधु थे, मोन्या का परिवार जब भी किसी उलझन में पड़ता। मोन्या की माँ उनसे ही राय लेती थी। इसलिए मोन्या से भी उन्होंने कहा, अच्छा देख अगर बेचरजी स्वामी ने हाँ कर दी तो ही मैं तुझे विलायत जाने दूँगी।

और बेचरजी स्वामी ने हाँ कर दी।

मोहन के विलायत जाने का दिन आ गया था। राजकोट हाईस्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उसे मानपत्र देने के लिए सभा बुलाई और उसके गुणों की खूब प्रशंसा की।

आखिर में मोन्या को बोलना था। मोन्या मंच पर जाने के लिए खड़ा हुआ मगर उसके पैर डगमगाने लगे, हाथ काँपने लगे। कागज में जो लिखकर लाया था, उसे बड़ी कठिनाई से अटक-अटककर पढ़ सका।

उन दिनों समुद्र पार करना बड़ा धार्मिक अपराध माना जाता था। जब मोन्या के विलायत जाने की बात फैली, तो मोन्या के समाज के कुछ लोगों ने सभा की। और निर्णय लिया कि अगर मोन्या विलायत जाता है तो उसके परिवार को समाज से बाहर माना जाएगा। लेकिन मोन्या ने साफ-साफ कहा "मैंने विलायत जाने का फैसला कर लिया है, और मैं अपना निश्चय नहीं बदल सकता। आप खुशी से मुझे समाज से बाहर कर दें।"और 1888 को चार सितम्बर के दिन मोन्या एक जहाज के तीसरे दर्जे में लंदन की ओर यात्रा कर रहा था।

समुद्र की लहराती लहरों पर उछलता-कूदता जहाज आगे बढ़ रहा था। मगर मोहन्या उदास था, वह अपने प्यारे घर, दोस्तों को छोड़कर जा रहा था। जहाज में सिर्फ एक व्यक्ति 'वकील मजूमदार' उसके

पहचान के थे, बाकी सब अँग्रेज थे। वह भोजन परोसने वाले रसोइये स्टुअर्ट से भी बात करने में डरता। सोचता कहीं अँग्रेजी में कुछ गलत बोल दिया तो; तो क्या होगा। बड़ी उलझन में था मोन्या, कैसे पूछे कि किस भोजन में माँस-मछली नहीं है। छुरी-काँटे से खाने का अभ्यास भी तो नहीं था। रात को वह जहाज की छत पर चला जाता क्योंकि उसे रात का दृश्य बहुत भाता था। ऊपर टिमटिमाते तारों से भरा नीला आकाश, समुद्र की लहरों पर तैरती चाँदनी.. सब बहुत सुन्दर लगता।

कई दिनों की यात्रा के बाद जहाज लंदन पहुँचा। उसने फ्लालेन के सफेद कपड़े पहन रखे थे। वह अकेला यात्री था, जो काले कोटे में नहीं था। लंदन में सब कुछ अलग था। वहाँ का खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, सब कुछ अलग। मोन्या को शुरू-शुरू में कई दिनों बहुत बुरा लगता। कभी-कभी तो वह रात-रात भर रोता रहता। तब उसे लगता कि कैसे यहाँ तीन साल बिताएगा। धीरे-धीरे उसने अँग्रेजी कायदे, रहन-सहन के तौर तरीके, वहाँ का शिष्टाचार सब सीख लिया। यह सब सीखने में उसकी मदद की डॉक्टर प्राण जीवन मेहता ने। सुबह-सुबह वह जौ का दलिया खाता पर पेट न भरता। न मिर्च, न मसाला, उबली हुई सब्जियाँ भी उसके गले न उतरतीं।

आखिर में उसे वहाँ की फैरिंगटन स्ट्रीट में एक शाकाहारी भोजनालय का पता मिल गया। भोजन की समस्या तो हल हो गई। वेशभूषा में बदलाव लाने के लिए उसने एक रेशमी टाप हैट खरीदा। एक बढ़िया कोट सिलवाया, सोने की घड़ी चैन ली। अच्छे चमड़े के जूते खरीदे। मूँछें बढ़ा लीं और बाल बाईं ओर सँवारने लगे। टाई की गठान बाँधना भी कम मुश्किल काम नहीं था। मोन्या पहले तो आईना सिर्फ तब देखता था जब हजामत करवाने जाता। लेकिन यहाँ लंदन में तो टाई ठीक करने के लिए रोज ही आईने के सामने खड़ा रहना पड़ता था। लेकिन यह सब ज्यादा दिन नहीं चल सका।

आखिर में उसे समझ में आ ही गया। "अरे इंग्लैण्ड में क्या जिंदगी बितानी है? लच्छेदार अँग्रेजी सीखकर, भाषण देकर, या फिर नाच-गाकर ही क्या सभ्य बना जा सकता है। तुझे तो विद्या पानी है।"

और इंग्लैण्ड की 'इनर टैम्पिल' संस्था में प्रवेश लिया। अब वह तड़क-भड़क से दूर रहता और खर्च पर भी पाई-पाई का हिसाब रखता। वहीं उसने एक छोटा-सा कमरा रहने के लिए ले लिया। पैदल ही वह अपने कॉलेज जाता। उसके इस जीवनयापन के तरीके का प्रभाव उसके आसपास के लोगों पर पड़ने लगा।

मोन्या के एक अँग्रेज मित्र ने उससे 'गीता पढ़ाने का आग्रह किया। लेकिन उसे संस्कृत का अच्छा ज्ञान न था। इसलिए उसने अँग्रेज मित्र को अँग्रेजी में अनुवाद कर 'गीता' पढ़ाई। और बदले में उससे 'बाईबिल' सीखी। 10 जून 1891 को उसने बैरिस्टर की परीक्षा पास कर ली।

तीन साल से ज्यादा समय के बाद वह भारत लौट रहा था। जहाज की छत पर मोन्या सोच रहा था- माँ कितनी अधीरता से प्रतीक्षा कर रही होगी, मिलते ही पूछेगी, "मेरे वचनों का पालन किया" और मैं कहूँगा "उन्हें पालने के कारण ही तो मेरे सामने आने की हिम्मत जुटा पाया हूँ।"

लेकिन जहाज से उतरकर जब उसने अपने भाई से पूछा, "भाई, माँ कैसी है?" भाई चुप हो गया, और आँखें भीग गईं। मोन्या को बताया गया कि उसकी पढ़ाई में विघ्न न पहुँचे इसलिए उसे माँ की मृत्यु की खबर नहीं दी गई।

मोन्या ने मुंबई में एक दफ्तर खोला। खर्च बहुत

होता और आमदनी कम। बाद में वे मुंबई से राजकोट आ गए।

1893 में बैरिस्टर मोन्या को दादा अबदुल्ला एंड कम्पनी का एक पत्र मिला जिसमें अफ़्रीका आने का लिखा था। उन्हें इस कम्पनी के लिए एक मुकदमा लड़ना था।

मोन्या 1893 मई को नेटाल बंदरगाह पर उतरा। वहाँ उतरते हुए उन्हें यूरोपीय और भारतीय के बीच भारी भेदभाव दिखाई दिया।

यूरोपीय गोरे भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन्हें 'काला कुली' कहा जाता था।

वहाँ गोरों को कृषि और उद्योगों में काम करने के लिए मेहनती लोगों की जरूरत पड़ती थी। चूँकि उस समय भारत पर अँग्रेजों का राज था। इसलिए भारत से वे मजदूरों को लोभ लालच देकर बुलाते। बाद में उनका शोषण करते, उन्हें ठीक मजदूरी नहीं मिलती, रहने के लिए उम्दा जगह भी न मिलती और तो और उनसे भद्दे तरीके का व्यवहार किया जाता। इन मजदूर भारतीयों को 'गिरमिटिया' कहा जाता।

मोन्या में बचपन से ही अन्याय को न सहने का गुण था। उसने इसी गुण के कारण अफ़्रीका में एक लम्बी लड़ाई लड़ी। और उसे भारतीयों को न्याय दिलाने के लिए इक्कीस साल तक अफ़्रीका में रुकना पड़ा। इन इक्कीस सालों में कई बार उसने मार खाई। कई अपमान झेले मगर हार न मानी। एक बार तो उसे आरक्षित डिब्बे से टिकिट होने के बावजूद उतार दिया क्योंकि उसमें सिर्फ गोरे ही सफर कर सकते थे। ठण्ड की रात में तब मोहनदास उर्फ मोन्या तब तक प्लेटफार्म पर सिकुड़ते रहे, जब तक कि उन्हें उसी डिब्बे में जगह न मिल गई।

एक बार वह पगड़ी लगाए ही मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर हुआ। उन दिनों पगड़ी उतारकर ही मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर हो सकते थे। लेकिन मोन्या ने मजिस्ट्रेट की इस गैर वाजिब बात को मानने से इंकार कर दिया। फिर क्या था, उसे वहाँ से बाहर निकाल दिया गया। ऐसे अपमानों की तो जैसे गिनती ही नहीं थी। उन दिनों गोरों के भेदभाव के चलते भारतीय होना ही जैसे कोई अपराध था। मगर मोन्या ने इस सबका सामना करते हुए अफ़्रीका में बसे भारतीयों को उनके अधिकार दिलवाए।

मोहनदास अब तक अफ़्रीका में बहुत प्रसिद्धि पा चुके थे। अफ़्रीका में ही डरबन में उन्होंने सौ एकड़ भूमि पर एक आश्रम खोला – 'फीनिक्स आश्रम। कहते हैं एक बार जब मोहनदास जोहंसबर्ग से डरबन आ रहे थे तो उनके एक मित्र पोलक ने उन्हें एक पुस्तक दी।

पुस्तक का नाम था 'अन टू दिस लास्ट।' इस पुस्तक को पढ़कर ही मोहनदास ने यह आश्रम खोला। और इस पुस्तक का गुजराती में 'सर्वोदयी' नाम से अनुवाद भी किया। इस पुस्तक का मोहनदास पर काफी प्रभाव पड़ा।

जब तक वे अफ़्रीका में रहे जनहित के कामों में लगे रहे।

9 जनवरी 1915 को वे भारत लौटे। मोहनदास कर्मचंद गाँधी के अफ़्रीका में किए गए कामों की खबर भारतीयों को भी थी। इसलिए जब वे बंदरगाह पर उतरे तो हजारों लोगों ने उन्हें घेर लिया। क्योंकि भारत में भी भारतीयों की दशा अच्छी नहीं थी। रास्ते

में ही कई लोगों ने उनसे अँग्रेजी सरकार की शिकायतें कीं। कोई सरकार की इस बात से दुखी था कि फसल न होने के बावजूद उससे कर लिया गया है तो कोई अकारण जेल में बन्द कर दिए जाने की बात से।

सबको यही उम्मीद थी कि मोहनदास गाँधी उनको इन समस्याओं से मुक्ति दिलाएंगे।

अब भारत में भी मोहनदास के हजारों भक्त हो गए। कोई उन्हें 'महात्मा' कहता, तो कई 'बापू गाँधी', और कोई 'महात्मा गाँधी'।

जो भी कोई शिकायत लेकर आता। और अगर महात्मागाँधी को लगता कि उसकी शिकायत जायज है। वे उसका साथ देते। उन्होंने शांतिपूर्ण आन्दोलनों की सहायता से कई बड़े-बड़े काम किए।

बिहार की ही बात ले लें। बिहार के एक जिले चपारन में लोग नील की खेती करते थे।

अँग्रेजों का वहाँ के किसानों के लिए यह हुक्म था कि वे अपनी जमीन के एक हिस्से पर नील की ही खेती करें और यह नील, अँग्रेज बहुत थोड़े पैसे देकर भारतीयों से ले लेते थे। कुछ किसानों ने जब गाँधीजी को यह समस्या बताई तो वे चंपारन गए। और आखिर में अँग्रेजी सरकार को यह कानून रदद करना पड़ा।

अब तो पूरे भारत में महात्मागाँधी को लोगों ने अपना नेता मान लिया।

अँग्रेजी सरकार के खिलाफ कई आंदोलन किए। उनकी एक आवाज पर लाखों लोग जुट जाते। नमक पर कर लगाकर सरकार ने नमक की कीमतें बढ़ाईं।

गाँधीजी ने इसके विरोध में आश्रम के 78 लोगों को साथ लेकर नमक-कानून तोड़ा। और दांडी नामक जगह से ननक निकाला। भारत का शासन अँग्रेजों के हाथ में था। अँग्रेजी सरकार भारतीयों पर नए-नए कर लगाती और जैसे-तैसे लाभ कमाकर पैसा अपने देश भेजती। इस तरह भारतीयों की कमाई का बड़ा हिस्सा बाहर चला जाता। और देश गरीब से गरीब होता चला गया। भारतीयों के हाथों में ही भारत का शासन हो। इसके लिए लड़ी गई लम्बी लड़ाई में भी गाँधीजी का बड़ा योगदान रहा। असहयोग आंदोलन सविनय अवज्ञा आदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन के अलावा और भी कई आंदोलन गाँधीजी ने किए जिनके बारे में तुम अगली कक्षाओं में पढ़ोगे।

प्यारे चाचाजी,

आपको, चाचीजी को प्रणाम। रेखा कैसी है।

आजकल मुझे बुखार आया हुआ है। उससे पहले एक दिन स्कूल जाते हुए मैं साइकिल से गिर पड़ा था तो चोट लग गई थी। वो साइकिल बड़ी है न तो उस दिन मैंने कैंची के बजाए डंडे पर चढ़कर साइकिल चलाने की कोशिश की। अब चढ़ तो गया और खूब तेज़ी से साइकिल चलाई लेकिन उतरते समय पैर नीचे नहीं रख पाया और लुढ़क गया। और कंकड़ घुटने में घुस गया। पिताजी तुरंत डॉक्टर के पास ले गए और उन्होंने एक इंजेक्शन लगा दिया। तो अभी दवाई खा रहा हूँ - बहुत कड़वी लगती है। मन करता है कि फेंक दूँ लेकिन माँ ने कहा कि नहीं खाओगे तो ठीक नहीं होगे।

पिछली बार मैं जब रीवा आया था तो टीवी देखा था। वापस शाहपुर आकर मैंने पापा से जिद किया कि टीवी लाओ। हाँ अभी एक हफ्ते पहले यहाँ खूब बारिश हुई। इतनी तेज़ कि माचना पूर आई। इधर मगरडोह वाला नाला भी पूर आया। तो बीच में खूब सारी गाड़ियाँ फँस गईं। उन दो दिनों में तो बीच वाले हिस्से में दुकानों ने खूब मँहगा समान बेचा। एक ड्राइवर ने तो कहा कि दुकान वाली बाई ने 10 रुपए की थोड़ी सी खिचड़ी दी। एक ट्रक में सेवफल जा रहा था तो गाड़ी वाले सड़े-सड़े सेवफल फेंकते जा रहे थे।

पिताजी कह रहे हैं कि इसी जगह में उन्हें भी चिट्ठी लिखना है। इसलिए अब रोक रहा हूँ।

आपको, चाचीजी को सादर प्रणाम और रेखा को प्यार

आपका भतीजा

राजेश

● तुमने राजेश की चिट्ठी पढ़ी। अब तुम भी किसी को चिट्ठी लिखो।

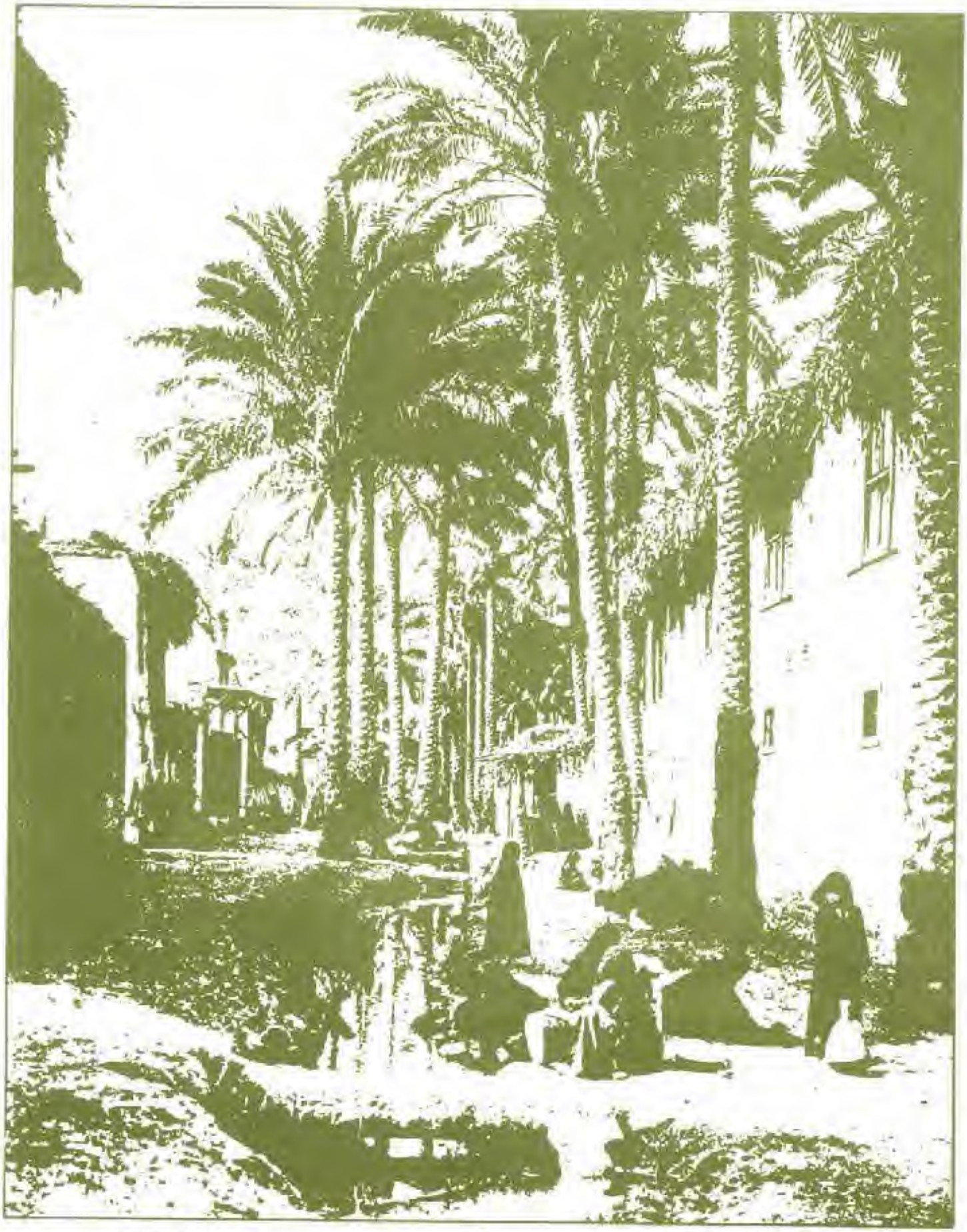

ISBN: 978-81-89976-04-0

मूल्य: ₹ 70.00